प्रश्न बैंक-सह-उत्तर पुस्तक

Question Bank–Cum–Answer Book

2023

Class-12

इतिहास
(HISTORY)

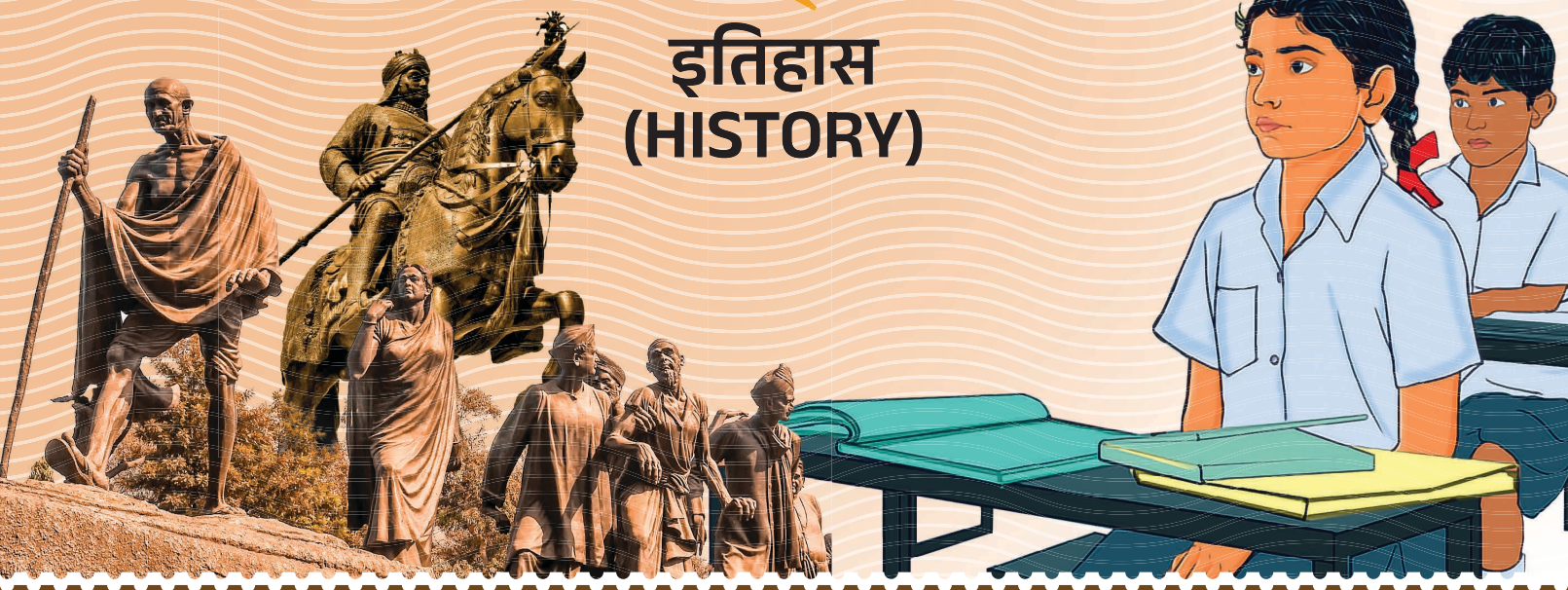

Jharkhandlab.com

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक
Question Bank-Cum-Answer Book

Class - 12

इतिहास
History

- ⇨ भारतीय इतिहास के कुछ विषय : भाग – 1
- ⇨ भारतीय इतिहास के कुछ विषय : भाग – 2
- ⇨ भारतीय इतिहास के कुछ विषय : भाग – 3

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
नवोन्मेष शोध नेतृत्व
JCERT

2023

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi

Jharkhandlab.com

प्रथम संस्करण : माह अगस्त 2023, श्रावण विक्रम संवत् 2080

© झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड

jharkhandlab.com

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, छायाप्रतिलिपि अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण या जिल्द के साथ अथवा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।

- **क्रय–विक्रय दण्डनीय अपराध**

झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बच्चों के लिए निर्धारित अधिगम प्रतिफल प्राप्त करने का मार्ग सरल एवं सुगम होना आवश्यक है। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची, झारखंड के द्वारा कक्षा 12 के सभी विषयों के लिए प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण बच्चों के अधिगम कौशल को सुगमतापूर्वक विकसित करने एवं झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उन्हें तैयार करने के उद्देश्य से किया गया है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में सरल भाषा एवं रुचिकर ढंग से विषय–वस्तु को स्पष्ट करते हुए प्रश्नोत्तर दिए गए हैं। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के माध्यम से बच्चों में न केवल ज्ञानजन्य प्रतिभा का विकास होगा बल्कि आज के इस प्रतियोगिता के दौर में भी वे अनुकूल सफलता पाएंगे। हमारे प्रयत्न की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि विद्यालय के शिक्षकवृन्द बच्चों की कल्पनाओं के साथ कितना जुड़ पाते हैं और विभिन्न प्रकार के प्रश्नोत्तरों को सीखने–सिखाने के दौरान अपने अनुभवों के साथ–साथ बच्चों के विचारों के साथ कैसे सामंजस्य बनाते हैं।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखंड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के विविध प्रकारों यथा– बहुवैकल्पिक, अतिलघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय एवं दीर्घ उत्तरीय प्रश्न आदि के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नोत्तर समाहित किए गए हैं ताकि इसके अध्ययन से छात्रों में ना केवल विषय–वस्तु की समझ विकसित हो बल्कि उन्हें सीखने के प्रतिफल की भी प्राप्ति हो, साथ ही वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए उनकी अच्छी तैयारी हो सके और वे परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करते हुए सफलता प्राप्त कर सकें।

अंत में मैं इन पुस्तकों के लेखकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

शुभकामनाओं के साथ।

के० रवि कुमार भा.प्र.से.
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

Jharkhandlab.com

भूमिका

प्रिय शिक्षक एवं विद्यार्थी,

जोहार !

हमें कक्षा 12 के विभिन्न विषयों के प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक से आपका परिचय कराने में प्रसन्नता हो रही है। इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक में झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के विषयवार एवं अध्यायवार अधिगम बिन्दुओं को समायोजित करते हुए झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में पूछे जानेवाले प्रश्नों के विविध प्रकारों के अंतर्गत पर्याप्त मात्रा में प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस विषय आधारित प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण का उद्देश्य शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को और अधिक रुचिकर, सरल एवं प्रभावशाली बनाना तथा विद्यार्थियों को वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा की तैयारियों में सहयोग प्रदान करना है, जिससे सकारात्मक रूप से छात्रों को सीखने के प्रतिफल प्राप्त हों और वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा में वे बेहतर प्रदर्शन कर सकें। राज्य के विभिन्न जिलों से चयनित अनुभवी शिक्षकों के द्वारा इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक का निर्माण किया गया है।

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ यह है कि इनमें प्रश्नों के उत्तर को सरल भाषा में प्रस्तुत करते हुए वैचारिक समझ (Conceptual Understanding) विकसित करने पर जोर दिया गया है। साथ ही इन पुस्तकों में झारखण्ड अधिविद्य परिषद् द्वारा आयोजित वार्षिक इंटरमीडिएट परीक्षा – 2023 के प्रश्नोत्तर को भी समाहित किया गया है। इन पुस्तकों के माध्यम से न केवल विद्यार्थियों की प्रतिभा में निखार आएगा बल्कि वर्तमान समय के प्रतियोगिताओं के इस दौर में वे अनुकूल एवं अपेक्षित सफलता प्राप्त करने में भी सक्षम हो सकेंगे। आशा है कि यह प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक आपको पसंद आएगी एवं आपके लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

शुभकामनाओं के साथ।

किरण कुमारी पासी भा.प्र.से.
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
राँची, झारखण्ड

jharkhandlab.com

पाठकों से अनुरोध

इस प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक के निर्माण में काफी सावधानियाँ बरती गई है। इसके बावजूद यदि किसी प्रकार की अशुद्धियाँ मिले या कोई सुझाव हो तो इस email ID :- jcertquestionbank@gmail.com पर सूचित करें, ताकि अगले मुद्रण में इसे शुद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके।

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक–सह–उत्तर पुस्तक निर्माण समिति

मुख्य संरक्षक

श्री के० रवि कुमार (भा.प्र.से.)
सचिव
स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड

संरक्षक

श्रीमती किरण कुमारी पासी (भा.प्र.से.)
निदेशक
झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

अवधारणा एवं मार्गदर्शन

श्री मुकुंद दास उपनिदेशक (प्र.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री बाँके बिहारी सिंह** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची	**श्री मसुदी टुडू** सहायक निदेशक (अ.) झारखण्ड शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची

समन्वय एवं निर्देशन

डॉ0 नीलम रानी
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(टी.जी.टी., सामाजिक विज्ञान, राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा)

सहयोग

श्री मणिलाल साव
संकाय सदस्य, जे.सी.ई.आर.टी., राँची
(पी.जी.टी. जीव विज्ञान, के. एन. +2 उच्च विद्यालय हरनाद, कसमार, बोकारो)

Jharkhandlab.com

प्रश्न बैंक निर्माण कार्य समिति

अनुप कुमार
PGT (इतिहास)
S.S. +2 उच्च विद्यालय बेड़ो, राँची

सरोज सेठ
PGT (इतिहास)
राजकीयकृत +2 उच्च विद्यालय राहे, राँची

श्रीपति मुण्डा
PGT (इतिहास)
उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय परासी तमाड़, राँची

आनंद प्रसाद
PGT (इतिहास)
S.S. +2 उच्च विद्यालय, सिल्ली, राँची

डॉ. नीलम रानी
TGT (सामाजिक विज्ञान)
राजकीयकृत उत्क्रमित उच्च विद्यालय पैतानो, जलडेगा, सिमडेगा

विनोद कुमार महतो
PGT (इतिहास)
प्रोजक्ट +2 उच्च विद्यालय, सदमा, ओरमांझी, राँची

लालू तिर्की
PGT (इतिहास)
शंकरी +2 उच्च विद्यालय ईटकी, राँची

कंचन टोप्पो
PGT (इतिहास)
रमेश सिंह मुण्डा स्मारक +2 उच्च विद्यालय बुंडू, राँची

मोनालिसा बारला
PGT (इतिहास)
उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय उचरी, मांडर, राँची

JharkhandLab.com

Jharkhandlab.com

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भाग – 1	
अध्याय – 01	ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ हड़प्पा सभ्यता	1–4
अध्याय – 02	राजा, किसान और नगर आरंभिक, राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई.पू. 600 ईसवी)	5–8
अध्याय – 03	बंधुत्व, जाति तथा वर्ग आरंभिक समाज (लगभग 600 ई.पू. 600 ईसवी)	9–12
अध्याय – 04	विचारक, विश्वास और इमारतें सांस्कृतिक विकास (लगभग 600 ई.पू. 600 ईसवी)	13–16
	भाग – 2	
अध्याय – 05	यात्रियों के नजरिए समाज के बारे में उनकी समझ (लगभग दसवीं से 17वीं सदी तक)	17–19
अध्याय – 06	भक्ति – सूफी परंपराएँ धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ (लगभग 8वीं से 18वीं सदी तक)	20–23
अध्याय – 07	एक साम्राजय की राजधानी : विजयनगर (लगभग 14वीं से 16वीं सदी तक)	24–27
अध्याय – 08	किसान, जमींदार और राज्य कृषि समाज और मुगल साम्राज्य (लगभग 16वीं और 17वीं सदी तक)	28–31
अध्याय – 09	शासक और विभिन्न इतिवृत : मुगल दरबार (लगभग 16वीं और 17वीं सदी तक)	32–37

Jharkhandlab.com

भाग – 3		
अध्याय – 10	उपनिवेशवाद और देहात सरकारी अभिलेखों का अध्ययन	38–42
अध्याय – 11	विद्रोही और राज 1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान	43–46
अध्याय – 12	औपनिवेशिक शहर नगर–योजना, स्थापत्य	47–52
अध्याय – 13	महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन सविनय अवज्ञा और उससे आगे	53–57
अध्याय – 14	विभाजन को समझना राजनीति, स्मृति, अनुभव	58–62
अध्याय – 15	संविधान का निर्माण एक नए युग की शुरूआत	63–65
	Solved Paper of JAC Annual Intermediate Examination - 2023	66–70

Jharkhandlab.com

अध्याय - 01 ईंटें, मनके तथा अस्थियाँ
हड़प्पा सभ्यता

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. भारतीय पुरातत्व का पिता किसे कहा जाता है ?
A. एलेग्जेंडर कनिंघम B. दयाराम साहनी
C. राखलदास बनर्जी D. एस आर राव

2. हड़प्पा सभ्यता में सर्वप्रथम किस स्थल की खोज की गई थी?
A. लोथल B. हड़प्पा
C. मोहनजोदड़ो D. कालीबंगा

3. हड़प्पा सभ्यता के किस नगर में दुर्ग दीवार से घिरा हुआ नहीं मिला है?
A. हड़प्पा B. मोहनजोदड़ो
C. लोथल D. बनावली

4. सिंधु घाटी सभ्यता में विशाल स्नानागार के अवशेष कहां से प्राप्त हुए हैं?
A. हड़प्पा B. धोलावीरा
C. मोहनजोदड़ो D. लोथल

5. सिंधु घाटी सभ्यता में शिल्प उत्पादन का एक प्रमुख केंद्र था?
A. मोहनजोदड़ो B. हड़प्पा
C. कालीबंगा D. चन्हुदड़ो

6. मेसोपोटामिया के प्रलेखों में मेलूहा शब्द का प्रयोग किस सभ्यता के लिए किया जाता था?
A. हड़प्पा सभ्यता B. मिस्र की सभ्यता
C. चीन की सभ्यता D. इनमें से कोई नहीं

7. लोथल कहां स्थित है?
A. गुजरात B. राजस्थान
C. पंजाब D. हरियाणा

8. हड़प्पा किस नदी किनारे स्थित है?
A. रावी B. सिंधु
C. भोगवा D. इनमें से कोई नही

9. सिंधु घाटी के निवासियों को सोना कहां से प्राप्त होता था?
A. लोथल B. कालीबंगा
C. कर्नाटक D. खेतड़ी

10. हड़प्पा सभ्यता में बंदरगाह का प्रमाण कहां से मिला है?
A. लोथल B. कालीबंगा
C. मोहनजोदड़ो D. हड़प्पा

11. हड़प्पा सभ्यता का किस देश के साथ व्यापारिक संबंध नहीं था?
A. मेसोपोटामिया B. ईरान
C. अफगानिस्तान D. चीन

12. जूते हुए खेत का प्रमाण कहां से मिला है?
A. हड़प्पा B. मोहनजोदड़ो
C. कालीबंगा D. लोथल

13. हड़प्पा वासियों को लाजवर्द मणि कहां से प्राप्त होता था?
A. मोहनजोदड़ो B. लोथल
C. शोर्तुघई D. धोलावीरा

14. क्षेत्रफल के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा नगर था?
A. हड़प्पा B. मोहनजोदड़ो
C. कालीबंगा D. लोथल

15. हड़प्पा सभ्यता की लिपि की मुख्य विशेषता थी?
A. यह दाएं से बाएं ओर लिखी जाती थी
B. यह बाएं से दाएं ओर लिखी जाती थी
C. यह ऊपर से नीचे की ओर लिखी जाती थी
D. यह नीचे से ऊपर की ओर लिखी जाती थी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर

1-A., 2-B, 3-C, 4-C, 5-D, 6-A, 7-A, 8-A, 9-C, 10-A, 11-D, 12-C, 13-C, 14-B, 15-A

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता को कांस्य युगीन सभ्यता क्यों कहा जाता है?

उत्तर– हड़प्पा सभ्यता को कांस्य युगीन सभ्यता इसलिए कहा जाता है क्योंकि यहां पर लोगों ने औजार बनाने के लिए तांबे और टिन धातु को मिलाकर कांस्य धातु का उपयोग किया था।

2. हड़प्पा सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता क्यों कहा जाता है?

उत्तर– हड़प्पा और मोहनजोदड़ो नगरों के अवशेष मुख्य तौर पर सिंधु नदी या सिंधु नदी घाटी के आसपास से प्राप्त हुए हैं इस कारण से हड़प्पा सभ्यता को सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है।

3. सिंधु घाटी सभ्यता में मनके बनाने के लिए किस सामग्री का उपयोग किया जाता था?

उत्तर– सिंधु घाटी सभ्यता में मनके बनाने के लिए कार्नेलियन, क्रिस्टल, सेलखड़ी, तांबा, जैस्पर, क्वार्टर्ज, शंख, पत्थर, काँसा और सोना जैसी धातु का उपयोग किया जाता था।

4. सिंधु घाटी सभ्यता की उन स्थानों के नाम बताएं जहां सिंचाई के अंश पाए गए हैं ?

उत्तर– सिंधु घाटी सभ्यता के उन स्थानों के नाम निम्नलिखित हैं जहां सिंचाई के अंश पाए गए हैं–
A. शोर्तुघई B. धोलावीरा।

Jharkhandlan.com

5. हड़प्पा सभ्यता के लोगों के व्यापारिक संपर्क किन देशों से थे?

उत्तर– हड़प्पा सभ्यता के लोगों के व्यापारिक संपर्क मेसोपोटामिया, ओमान, बहरीन, ईरान आदि देशों से था।

6. हड़प्पा वासी ताँबा और सोना कहां से प्राप्त करते थे?

उत्तर– हड़प्पा वासी राजस्थान के खेतड़ी से ताँबा और दक्षिण भारत से सोना प्राप्त करते थे।

7. किस पुरास्थल को हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी बस्ती माना जाता है?

उत्तर– पाकिस्तान के सिंध प्रांत के लरकाना जिले में स्थित मोहनजोदड़ो को हड़प्पा सभ्यता की सबसे बड़ी बस्ती माना जाता है। मोहनजोदड़ो का क्षेत्रफल 125 हेक्टेयर था।

8. हड़प्पा सभ्यता कहां-कहां विकसित हुई थी?

उत्तर– हड़प्पा सभ्यता पाकिस्तान, दक्षिण अफगानिस्तान, गुजरात, राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, पश्चिम उत्तर प्रदेश में विकसित हुई थी।

9. हड़प्पाई लिपि की दो मुख्य विशेषताएं बताएं?

उत्तर– हड़प्पाई लिपि की दो मुख्य विशेषताएं–

A. हड़प्पा लिपि को आज तक पढ़ने में सफलता नहीं प्राप्त की जा सकी है यद्यपि निश्चित रूप से यह वर्णमालीय नहीं है क्योंकि वर्णमाला के प्रत्येक चिन्ह एक स्वर या एक व्यंजन को दर्शाता है।

B. यह लिपि दाएं से बाएं लिखी जाती थी क्योंकि दाएं और अधिक अंतराल है जबकि बाएं और कम जगह है।

10. चन्हूदड़ो के लोगों की शिल्प कार्यों के नाम लिखें।

उत्तर– चन्हूदड़ो के लोग शिल्प कार्य के लिए मनके बनाना, शंख की कटाई, धातु कर्म, मोहर निर्माण तथा बाट बनाना आदि काम करते थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हड़प्पा सभ्यता के धार्मिक जीवन का वर्णन करें?

उत्तर– हड़प्पा सभ्यता या सिंधु घाटी सभ्यता का धार्मिक जीवन मुख्यतः मातृ देवी की पूजा पर आधारित था। खुदाई में बहुत अधिक संख्या में नारियों की मूर्तियां मिली हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि सिंधु घाटी के निवासी मातृ देवी की उपासना किया करते थे । हड़प्पा वासी मातृ देवी के साथ ही देवताओं की भी पूजा किया करते थे । मातृ देवी और देवताओं को बलि भी दी जाती थी। धार्मिक अनुष्ठानों के लिए धार्मिक इमारते बनाई गई होंगी लेकिन मंदिर के प्रमाण नहीं प्राप्त होते हैं। मोहनजोदड़ो से एक मोहर प्राप्त हुई है जिस पर पद्मासन की मुद्रा में एक पुरुष ध्यान की मुद्रा में बैठा हुआ है इसे पशुपति महादेव का रूप माना गया है। पशुपतिनाथ वृक्ष, लिंग, योनि, और पशु आदि की भी पूजा की जाती थी। वृक्ष पूजा काफी प्रचलित थी। इस काल के लोग जादू टोना, भूत, प्रेत और अंधविश्वासों पर विश्वास किया करते थे। वे बुरी शक्तियों से बचने के लिए ताबीज धारण करते थे। हड़प्पा वासी कूबड़ वाला सांड की भी पूजा किया करते थे। ये लोग पक्षियों की भी पूजा किया करते थे। स्वास्तिक चिन्ह संभवत हड़प्पा वासियों की ही देन है।

2. हड़प्पा वासियों के पश्चिम एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों का वर्णन कीजिए?

उत्तर– पश्चिम एशिया विशेषकर मेसोपोटामिया के साथ हड़प्पा वासियों के व्यापारिक संबंधों के अनेक प्रमाण प्राप्त हुए हैं। यह व्यापार स्थल एवं जल दोनों मार्ग से होता था। निम्नलिखित पुरातात्विक प्रमाण हड़प्पा वासियों के पश्चिम एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों की पुष्टि करते हैं–

A. ताँबे को संभवत ओमान से मंगाया जाता था। रासायनिक अध्ययनों से यह प्रतीत होता है कि हड़प्पा तथा ओमान के बर्तनों में प्राप्त निकेल के जो अंश पाए गए हैं, उनका उद्भव एक ही स्थान है।

B. ओमान में एक हड़प्पा का एक जार प्राप्त हुआ है, इसमें काली मिट्टी की परत चढ़ी हुई है। यह हड़प्पा वासियों के पश्चिम एशिया के साथ व्यापारिक संबंधों की पुष्टि करता है।

C. हड़प्पा वासियों के शिल्प कार्य के लिए ईरान एवं बलूचिस्तान से चांदी आती थी। सीसा ईरान और अफगानिस्तान से मंगाया जाता था।

D. हड़प्पा वासियों के बाट, मुहरे, पासे तथा मनके पश्चिम एशिया के कई स्थानों से मिले हैं जो हड़प्पा सभ्यता एवं सुदूर देशों के व्यापारिक संबंधों की ओर इशारा करते हैं।

E. मेसोपोटामिया से प्राप्त कई लेखों में मगान एवं मेलूहा नामक स्थान जो हड़प्पाई क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त होता था, से लाए गए उत्पादों की चर्चा है। इन उत्पादों में लाजवर्द मणि, सोना, तांबा और कई कई प्रकार की लकड़ियां शामिल थी।

F. हड़प्पा के मुहरों में पानी जहाज एवं नाव के चित्र मिलते हैं। यह उनके समुद्र व्यापार की ओर दर्शाता है। मेसोपोटामिया के लेखों में मेलूहा को नाविकों का देश कहा गया है।

3. हड़प्पा सभ्यता में मनके बनाने के लिए प्रयुक्त पदार्थों की सूची बनाइए। कोई भी एक प्रकार का मनका बनाने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए ।

उत्तर– मनका बनाने के लिए कई प्रकार के पदार्थ प्रयोग में लाए जाते थे जैसे कार्नेलियन, जैस्पर स्फटिक, क्वार्टज तथा सेलखड़ी जैसे पत्थर तांबा, कांसा तथा सोने जैसी धातु में तथा फायंस और पक्की मिट्टी। कुछ मनके दो या दो से अधिक पत्थरों को मिलाकर भी बनाए जाते थे। मनको पर अलग-अलग तरह के कृतियां और रंगों का इस्तेमाल होता था।

तकनीकी दृष्टि से मनको पर अलग-अलग तरीकों से कार्य किया जाता था। सेलखड़ी जैसे मुलायम पत्थर से मनके बनाने का काम आसानी से हो जाता था। सेलखड़ी के चूर्ण से लेप तैयार करके सांचे में डालकर विभिन्न प्रकार के मनके तैयार किए जाते थे। कठोर या ठोस पत्थरों से मनके बनाने की प्रक्रिया जटिल थी। ऐसे पत्थरों से मात्र ज्यामितीय आकार की मनके बनाए जाते थे। पुरातत्वविदों के अनुसार अकीक का लाल रंग एक जटिल प्रक्रिया द्वारा अर्थात पीले रंग की कच्चे माल और उत्पादन के विभिन्न चरणों में मनको की आग में पकाकर प्राप्त किया जाता था। सर्वप्रथम बड़े पत्थर को छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता था। उनमें से बारीकी से सिल्क निकाले जाते थे फिर मनके बनाए जाते थे। मनके को अंतिम रूप देने के लिए घिसाई कर और पॉलिश कर उनके छेद किए जाते थे।

Jharkhandmate.com

4. सिंधु घाटी सभ्यता के मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल स्नानागार पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर– मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सर्वजनिक भवन विशाल स्नानागार है, जिसका जलाशय दुर्ग के किले में स्थित है। उत्तम कोटि की पक्की ईंटों से बना विशाल स्नानागार स्थापत्य कला का सुंदर उदाहरण है। यह जलाशय 12 मीटर लंबा, 7 मीटर चौड़ा और लगभग 3 मीटर गहरा है। इसके दोनों किनारों पर अर्थात इसके उत्तरी और दक्षिणी भाग में नीचे जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है। स्नानागार का फर्श पक्की ईटों का बना हुआ है। इसके तीन ओर कमरे बने हुए थे। इनमें से एक में एक बड़ा कुआँ था जिससे जलाशय से पानी आता था। जलाशय का पानी निकालने के लिए एक नाली थी। इसके उत्तर में एक गली के दूसरी तरफ अपेक्षाकृत छोटी संरचना में आठ स्नानघर बने हुए थे। इस संरचना के अनोखेपन तथा क्षेत्र में कई विशिष्ट संरचनाओं के साथ मिलने से ऐसा प्रतीत होता है कि इसका प्रयोग धार्मिक अनुष्ठानों के समय स्नान के लिए किया जाता होगा, जो आज भी भारतीय जनजीवन का एक आवश्यक अंग है।

5. हड़प्पा सभ्यता के पतन के कारणों का वर्णन करें।

उत्तर– हड़प्पा सभ्यता की पतन के संदर्भ में कोई संतोषजनक प्रमाण नहीं मिला है। लगभग अट्ठारह सौ ईसा पूर्व के आसपास इस सभ्यता का पतन हो गया। इस सभ्यता के पतन के संदर्भ में विद्वान एकमत नहीं है फिर भी कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं जिसके द्वारा अनुमान लगाया जाता है कि हड़प्पा सभ्यता के पतन के निम्नलिखित कारण थे–

A. बाढ़– सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख नगर नदियों के किनारे बसे थे, इन नदियों में प्रतिवर्ष बाढ़ आती थी। बाढ़ से प्रतिवर्ष क्षति भी होती थी। इस कारण से हड़प्पा वासी मूल स्थान को छोड़कर अन्य स्थानों पर रहने के लिए विवश हो गए होंगे।

B. महामारी– मोहनजोदड़ो से प्राप्त नर कंकालों के परीक्षण के पश्चात यह निष्कर्ष निकलता है कि हड़प्पा वासी मलेरिया महामारी जैसे अनेक प्राकृतिक आपदाओं के कारण बीमारियों के शिकार हो गए और उनके जीवन का अंत हो गया।इस कारण से भी इस सभ्यता का पतन हो गया।

C. जलवायु परिवर्तन– अनेक विद्वानों का कहना है कि अचानक सिंधु घाटी क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन के कारण यह हरा भरा क्षेत्र जंगल एवं बारिश की कमी के कारण मरुस्थल के रूप में परिवर्तित हो गया। इस कारण से भी यह सभ्यता नष्ट हो गया।

D. बाह्य् आक्रमण– अनेक विद्वानों का अनुमान है कि बाह्य आक्रमण के कारण इस सभ्यता का अंत हुआ। संभवत ये बाह्य आक्रमणकारी आर्य रहे होंगे।

उपयुक्त कारणों के आधार हम कह सकते हैं कि हड़प्पा सभ्यता का पतन हो गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पुरातत्वविद हड़प्पा समाज में सामाजिक आर्थिक भिन्नताओं का पता किस प्रकार लगाते हैं? वह कौन सी भिन्नताओं पर ध्यान देते हैं?

उत्तर– पुरातत्वविद संस्कृति विशेष के लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नता का पता लगाने के लिए अनेक विधियों का इस्तेमाल करते हैं। इनमें से दो प्रमुख विधियां हैं शवाधनो का अध्ययन और विलासिता की वस्तुओं की खोज।

शवाधानो का अध्ययन– शवाधानो का अध्ययन सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नताओं का पता लगाने का महत्वपूर्ण तरीका है। उल्लेखनीय है कि हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न पुरास्थलों में जो शवाधान मिले हैं उनसे स्पष्ट होता है कि मृतकों को सामान्य रूप से गर्तो अथवा गड्ढों में दफनाया जाता था। परंतु सभी गर्तो की बनावट एक जैसी नहीं थी।अधिकांश शवाधान गर्तो की बनावट सामान्य थी, लेकिन कुछ की सतहों पर ईटों की चिनाई की गई थी। ईटों की चिनाई वाले गर्त उच्च अधिकारी वर्ग अथवा संपन्न शवाधान रहे होंगे। शवाधान गर्तो में शव सामान्य रूप से उत्तर दक्षिण दिशा में रखकर दफनाया जाते थे। कुछ कब्रों में शव मृदभांडों और आभूषणों के साथ दफनाया मिले हैं और कुछ में तांबे के बर्तन, सीप और सुईया भी मिली है। कुछ स्थानों से बहुमुल्य आभूषण एवं अन्य समान मिले हैं, तो अनेक जगहों से सामान्य आभूषण की प्राप्ति हुई है। कालीबंगा में छोटे-छोटे वृत्ताकार गड्ढों में अन्न के दाने तथा मिट्टी के बर्तन मिले हैं कुछ गड्ढों में हड्डिया भी एकत्रित मिली हैं। इससे स्पष्ट होता है कि हड़प्पा समाज में शव का अंतिम संस्कार विभिन्न तरीकों से कम से कम 3 तरीकों से किया जाता था। शव का सावधानीपूर्वक अंतिम संस्कार करने और आभूषण एवं प्रसाधन सामग्री उनके साथ रखने जैसे तथ्यों से स्पष्ट होता है कि हड़प्पा वासी मरणोपरांत जीवन में विश्वास करते थे।

विलासिता की वस्तुओं का पता लगाना– सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नता के अस्तित्व का पता लगाने की एक अन्य महत्वपूर्ण विधि विलासिता की वस्तुओं का पता लगाना है। साधनों से उपलब्ध होने वाली पुरा वस्तुओं का अध्ययन करके पुरातत्वविद उन्हें दो वर्गों अर्थात उपयोगी और विलास की वस्तुओं में विभाजित करते हैं। प्रथम वर्ग अर्थात उपयोगी वस्तुओं के अंतर्गत दैनिक उपयोग की वस्तुएं जैसे चक्किया, मृदभांड सुई आदि आती है। इन्हें पत्थर अथवा मिट्टी जैसे सामान्य पदार्थों से आसानी पूर्वक बनाया जा सकता था। इस प्रकार की वस्तुएँ लगभग सभी हड़प्पा पुरास्थलों से प्राप्त हुई हैं। विलासिता की वस्तुओं के अंतर्गत बहुत महंगी अथवा दुर्लभ वस्तुएँ सम्मिलित थी। जिनका निर्माण स्थानीय स्तर पर अनुपलब्ध पदार्थों से एवं जटिल तकनीकों द्वारा किया जाता था। ऐसी वस्तुएँ मुख्य रूप से हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे महत्वपूर्ण नगरों से ही मिली है। ऐसा प्रतीत होता है कि हड़प्पा समाज में विद्यमान विभिन्नताओं का प्रमुख आधार आर्थिक स्थिति ही रहा होगा। उदाहरण के लिए कालीबंगा में प्रमाण से पता लगता है कि पुरोहित वर्ग दुर्ग में रहते थे और निचले भाग में स्थित अग्नि वेदिका पर धार्मिक अनुष्ठान करते थे। इस प्रकार पुरातत्वविद हड़प्पा समाज की सामाजिक आर्थिक भिन्नता का पता लगाने के लिए अनेक महत्वपूर्ण बातें जैसे लोगों की सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति नगरों अथवा छोटी बस्तिओं में निवास, खानपान एवं रहन-सहन और साधनों से प्राप्त होने वाली बहुमूल्य अथवा सामान्य वस्तुओं पर विशेष रुप से ध्यान देते थे।

2. मोहनजोदड़ो की कुछ विशेषताओं का वर्णन कीजिए?

उत्तर– मोहनजोदड़ो पाकिस्तान के सिन्ध प्रान्त के लरकाना जिले में स्थित था। सिंधी भाषा में मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ है 'मृतकों का टीला'। मोहनजोदड़ो की खुदाई से निम्नलिखित विशेषताएं प्रकट हुई है जो निम्नलिखित हैं–

सुनियोजित नगर–

A. मोहनजोदड़ो एक विशाल शहर था जो 125 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ था। यह शहर दो भागों में विभक्त

Jharkhandboard.com

था। शहर के पश्चिम में एक दुर्ग था जो ऊंचाई में स्थित था, एवं पूर्व में नीचे एक नगर बसा हुआ था।

B. दुर्ग की संरचना कच्ची ईंटों के चबूतरे पर बनाई गई थी, इसमें बड़े-बड़े भवन थे जो संभवत प्रशासनिक अथवा धार्मिक केंद्रों के रूप में कार्य करते थे।

C. दुर्ग के चारों ओर ईटों की बनी दीवार थी जो दुर्ग को निचले शहर से विभाजित करती थी।

D. निचले शहर का क्षेत्र दुर्ग की अपेक्षा कहीं अधिक बड़ा था जिसमें सामान्य जनता निवास करतीथी। निचले शहर को भी दीवार से चारों और से घेरा गया था।

E. प्राय सभी बड़े मकानों में रसोईघर,स्नानागार, शौचालय और कुँए होते थे।

F. घर की दरवाजे और खिड़कियां प्रायः सड़क की ओर नहीं खुलती थी। उस समय के घरों में गोपनीयता का विशेष ध्यान रखा जाता था।

सुव्यवस्थित सड़के एवं नालियाँ –

A. सड़कें पूरब से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण की तरफ बनी होती थी और एक दूसरे को समकोण पर काटती थी एवं शहर को आयताकार भागों में विभाजित करती थी।

B. नालियाँ पक्की ईटों से बनी तथा ढकी हुई होती थी, उनमे थोड़ी-थोड़ी दूरी पर हटाने वाले पत्थर लगे होते थे ताकि नालियों की सफाई की जा सके।

विशाल स्नानागार, अन्नागार एवं भवन –

A. मोहनजोदड़ो का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सार्वजनिक भवन विशाल स्नानागार है। इसका जलाशय दुर्ग के टीले में स्थित था। इसकी संरचना अनोखी है तथा धार्मिक संबंधी अनुष्ठानों में इसका प्रयोग किया जाता था।

B. मोहनजोदड़ो की अन्य महत्वपूर्ण विशेषता दुर्ग में मिलने वाला विशाल अन्नागार है। विशाल अन्नागार के दक्षिण में ईटों के चबूतरे की कई कतारें थी।

C. मोहनजोदड़ो की दुर्ग क्षेत्र में विशाल स्नानागार की तरफ एक अन्य लंबा भवन मिले है। विद्वानों के अनुसार यह भवन किसी उच्च अधिकारी का निवास स्थान रहा होगा ।

कुशल एवं व्यवस्थित नागरिक प्रबंध–

मोहनजोदड़ो का नागरिक प्रबंध अत्यधिक कुशल एवं व्यवस्थित था। परंतु यह कहना कठिन है कि सिंधु घाटी सभ्यता के शासक कौन थे। संभव है कि वे राजा थे या पुरोहित अथवा व्यापारी। संभव है कि नगरपालिका का शासन प्रबंध था। किंतु इतना निश्चित है कि मोहनजोदड़ो का नागरिक प्रबंध कुशल हाथों में था। उनका प्रशासन अत्यधिक कुशल एवं उत्तरदाई था।

3. हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा किए जाने वाले संभावित कार्यों का संक्षेप में वर्णन करें?

उत्तर– हड़प्पा सभ्यता के राजनीतिक संगठन के विषय में निश्चय पूर्वक कुछ भी कहना कठिन है। हमें यह ज्ञात नहीं है की हड़प्पा सभ्यता के शासक कौन थे संभव है कि वह राजा होगा या पुरोहित होगा या कोई व्यापारी। हंटर महोदय यहाँ के शासन को जनंतत्रात्मक मानते हैं। किंतु पिग्गट एवं व्हीलर महोदय के अनुसार सुमेर की तरह यहाँ के शासक भी पुरोहित ही थे। कुछ विद्वानों के अनुसार हड़प्पा सभ्यता पर दो राजधानियां हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से शासन किया जाता था। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार संभवत संपूर्ण क्षेत्र अनेक राज्यों मे विभक्त था। इन राज्यों की अपनी अपनी राजधनियां थी। जैसे सिंध की मोहनजोदड़ो, पंजाब की हड़प्पा ,राजस्थान की कालीबंगा एवं गुजरात की लोथल। कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता में अनेक राज्यों का अस्तित्व नहीं था बल्कि एक ही राजा के नेतृत्व में वहां पर शासन किया जाता था। सिंधु घाटी सभ्यता के शासन का स्वरूप चाहे जैसे भी हो इतना तो निश्चित है कि यहां का शासन अत्यंत कुशल एवं उत्तरदाई था। हड़प्पाई समाज में शासकों द्वारा अनेक महत्वपूर्ण कार्यों का संपादन किया जाता था। ऐसा प्रतीत होता है कि शासक राज्य में शांति व्यवस्था को बनाये रखने तथा आक्रमणकारियों से सुरक्षा के लिए उतरदायी था। हड़प्पा सभ्यता की सुनियोजित नगर, सफाई तथा जल निकास की उत्तम व्यवस्था, अच्छी सड़कें, उन्नत व्यापार,माप तौल के एक मानक, सांस्कृतिक विकास, विकसित उद्योग धंधे, संपन्नता आदि इस बात की प्रबल संभावना है कि हड़प्पा सभ्यता के शासक प्रशासनिक कार्यों में विशेष ध्यान देते थे। संभवत हड़प्पा सभ्यता के नगरों के नगर नियोजन में भी राज्यों का महत्वपूर्ण योगदान रहता होगा। इतिहासकारों का विचार है कि प्राचीन विश्व में जहां-जहां नियोजित वस्तुओं के प्रमाण मिले हैं वहां पर इस बात का प्रमाण मिलता है कि सड़को की योजना का विकास धीरे-धीरे नही हुआ है बल्कि एक विशेष ऐतिहासिक समय में इनका निर्माण हुआ है। इतिहासकारों का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता के शहरों का ईटों का एक जैसा आकार होना या तो कड़े प्रशासनिक नियंत्रण के कारण था या तो लोगो को व्यापक तौर पर ईटों के निर्माण के लिए नियुक्त किया जाता था। इसी प्रकार हड़प्पा सभ्यता के विभिन्न स्थानों से तांबे, मिट्टी के बर्तन और कांसे के बर्तन मिलने से यह अनुमान लगाया जाता है कि इनका भी निर्माण इसी प्रकार किया गया होगा। इसी प्रकार अनुमान लगाया जाता है कि विभिन्न नगरों की योजना राज्य द्वारा ही बनाया गया होगा और विभिन्न स्थानों पर सड़कों नालियों का निर्माण राज्य द्वारा ही किया गया होगा।

उल्लेखनीय है कि हड़प्पा सभ्यता के शहरी केंद्रों की योजना का अध्ययन करने पर पता चलता है की नागरिक व्यवस्था की उचित देखरेख और विशाल जल निकास व्यवस्था थी। निकास के लिए प्रत्येक गली में नाली बनी होती थी। गली में बनी यह नाली नगर नियोजन का एक हिस्सा थी। घर अलग-अलग अपने-अपने ढंग से इस कार्य को संपादित नहीं कर सकते थे। इसका स्पष्ट तात्पर्य है कि प्रशासन द्वारा स्वयं सभी कार्यों को नियंत्रित किया जाता था तथा इनकी देखरेख का कार्य किया जाता था। ऐसा लगता है कि शिल्प उत्पादन का कार्य और वितरण का कार्य शासकों द्वारा ही नियंत्रित किया जाता था। यही कारण है कि कुछ उद्योग विशेष रुप से कम वजन वाले कच्चे माल ईर्धन के स्रोत के निकट स्थापित होते थे और कुछ वहाँ स्थित थे जहाँ इनकी खपत अधिक थी। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे नगरों में विशाल अन्नागारों का मिलना इस बात की प्रबल संभावना है कि सिंधु घाटी सभ्यता के शासक को हमेशा ही प्रजाहित की चिंता रहती थी इसलिए अनाज को विशाल अन्नागारो में सुरक्षित रख लिया था ताकि आवश्यकतानुसार आपात स्थिति में इनका प्रयोग किया जा सके।

jharkhandlab.com

अध्याय - 02 राजा किसान और नगर
आरंभिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ (लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **अशोक के अभिलेख को सर्वप्रथम किसने पढ़ा ?**
   A. जॉन मार्शल B. कनिंघम
   C. जेम्स प्रिंसेप D. अर्नेस्ट मैके

2. **अभिलेखों में 'देवनाम पियदस्सी' किस राजा को कहा गया है?**
   A. अशोक B. चन्द्रगुप्त मौर्च
   C. समुद्रगुप्त D. बिन्दुसार

3. **बौद्ध और जैन ग्रंथों में कितने महाजनद का उल्लेख हैं?**
   A. 10 B. 12
   C. 14 D. 16

4. **मगध महाजनपद की प्रारभिक राजधानी कहाँ थी ?**
   A. राजगृह B. पाटलिपुत्र
   C. कन्नौज D. उज्जैन

5. **इंडिका किसकी रचना हैं?**
   A. मेगास्थनीज B. कालीदास
   C. प्लिनी D. चाणक्य

6. **द्वितीय नगरीकरण के नगरों को क्या कहा जाता है ?**
   A. ताम्र युगीन नगर B. कांस्ययुगीन नगर
   C. लौहयुगीन नगर D. इनमें से कोई नहीं।

7. **समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति की रचना किसने किया हैं?**
   A. हरिसेन B. वाणभट्ट
   C. कौटिल्य D. मेगास्थनीज

8. **भारत का नेपोलियन किस शासक को कहा गया हैं?**
   A. चंद्रगुप्त B. अकबर
   C. समुद्रगुप्त D. अशोक

9. **हर्षवर्धन के राजकवि कौन थे?**
   A. बाणभट्ट B. कालीदास
   C. हरिसेन D. मेगास्थनीज

10. **अशोक के धम्म की लिपि क्या थीं ?**
    A. देवनागरी B. संस्कृत
    C. ब्राह्मी D. प्राकृत

11. **फूट डालकर विजय प्राप्त करने का कार्य सर्वप्रथम किस राजा ने किया?**
    A. अजातशत्रु B. पुष्यमित्र शुंग
    C. अशोक D. समुद्रगुप्त

12. **किसके अभिलेख में भूमि दान का उल्लेख मिलता है?**
    A. अशोक B. समुद्रगुप्त
    C. प्रभावती गुप्त D. इन सभी के

13. **प्राचीन भारत में अभिलेख की शुरुआत किस शासक ने किया ?**
    A. चंद्रगुप्त मौर्य B. अशोक
    C. समुद्रगुप्त D. कुमारगुप्त

14. **मुद्राराक्षस किसकी रचना है?**
    A. कौटिल्य B. मेगास्थनीज
    C. विशाखदत्त D. इनमें से कोई नहीं

15. **अपने स्वयं के खर्चे से सुदर्शन झील की मरम्मत किसने कराई?**
    A. अशोक B. रुद्रदामन
    C. कनिष्क D. स्कंद गुप्त

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर :

1-C, 2-A, 3-D, 4-A, 5-A, 6-C, 7-A, 8-C, 9-A, 10-C,11-A, 12-C, 13-B, 14-C, 15-B

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **मेगास्थनीज भारत में किसके दरबार में आया था?**
   उत्तर : मेगास्थनीज भारत में चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार मे आया था।

2. **पाटलिपुत्र की स्थापना किसने किया था?**
   उत्तर : पाटलिपुत्र की स्थापना उदयिन ने किया था।

3. **चीनी यात्री फाहियान किसके शासन काल में भारत आया था ?**
   उत्तर : चीनी यात्री फाहियान चन्द्रगुप्त द्वितीय के काल में भारत आया था।

4. **नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना किसने किया ?**
   उत्तर : नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त शासक कुमार गुप्त ने किया।

5. **मेगास्थनीज कौन था?**
   उत्तर : मेगास्थनीज यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर का राजदूत था।

6. **शक संवत का आरंभ किसने किया ?**
   उत्तर : शक संवत का आरंभ कनिष्क ने किया था।

7. **तक्षशिला विश्वविद्यालय वर्तमान में किस देश में स्थित है?**
   उत्तर : तक्षशिला विश्वविद्यालय वर्तमान पाकिस्तान में स्थित हैं।

Jharkhandlab.com

8. भूमिदान अभिलेख चद्रगुप्त द्वितीय के किस पुत्री के नाम से मिला है।

उत्तर : भूमिदान अभिलेख चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त के नाम से है।

9. किन शासको ने अपने नाम के पहले 'देवपुत्र' की उपाधि लगाया

उत्तर : कुषाण शासकों ने अपने नाम के पहले देवपुत्र की उपाधि लगाया।

10. हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति किस भाषा मे लिखा गया है।

उत्तर : हरिषेण रचित प्रयाग प्रशस्ति संस्कृत भाषा में लिखा गया हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अभिलेख से आप क्या समझते हैं? इनका का क्या महत्व है?

उत्तर : अभिलेख उन्हें कहते हैं जो पत्थर,धातु या मिट्टी के बर्तन जैसी कठोर सतह पर खुदे होते हैं। अभिलेखों में इनके निर्माण की तिथि भी खुदी होती है तथा जिन पर तिथि नहीं होती उनका काल निर्धारण लेखन शैली के आधार पर किया जाता है। भारत में प्राचीनतम अभिलेख प्राकृत भाषा में है जिसे सम्राट अशोक ने बनवाया है।

महत्व

1. अभिलेख प्राचीन काल के अध्ययन के लिए अत्यंत प्रमाणिक और विश्वसनीय स्रोत होते हैं क्योंकि ये समकालीन होते हैं।
2. अभिलेख बनवाने वाले के अभिलेखों से शासक के विचार,राज्य विस्तार, उपलब्धियाँ, चरित्र, जन भावना का पता चलता है।
3. अभिलेखों से तत्कालिन धर्म-संस्कृति, रीति-रिवाजों की जानकारी मिलती है।
4. अभिलेखों से तात्कालिन भाषा और लिपि का ज्ञान होता है।
5. शासकों के आदेश, शत्रु-विजय तथा नागरिक अधिकारों की जानकारी मिलती है।
6. अभिलेखों से उस काल के समय का ज्ञान होता है।
7. अभिलेख प्राचीन इतिहास के स्थाई प्रमाण होते है।
8. अभिलेख से तात्कालिन अर्थव्यवस्था की भी जानकारी मिलती है।
9. अभिलेख से शासक और प्रजा के बीच का संबंध भी पता चलता है।
10. अभिलेख से कला का भी ज्ञान होता है।

2. महाजनपद से आप क्या समझते हैं? महाजनपदों के विशिष्ट विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर : छठी शताब्दी ई० पू० से महाजनपदों (आरंभिक राज्य) का विकास प्रारम्भ हुआ। बौद्ध और जैन ग्रंथों में 16 महाजनपद का जिक्र है जिनमें 12 राजतंत्रीय और 04 गणतंत्रीय राज्य थे। उक्त महाजनपदों की विशिष्ट अभिलक्षण (विशेषता) निम्नलिखित है-

1. लौहे के बढ़ते प्रयोग और सिक्कों के विकास प्रारंभ हुए।
2. अधिकतर महाजनपदों मे राजा का शासन होता था लेकिन गणतंत्रीय राज्यों में अनेक लोगों का समूह शासन होता था।
3. राजतंत्रीय राज्य में भूमि सहित आर्थिक स्त्रोत राजा के अधीन था वहीं गणतंत्रीय राज्यों में राजाओं का सामूहिक नियंत्रण था।
4. महाजनपदों की एक राजधानी होती थी जो प्रायः किलेबद होती थी।
5. महाजनपदों में ब्राहम्णों ने संस्कृत भाषा मे धर्मशास्त्र नामक ग्रन्थों की रचना करके लोगों के लिए नियमों का निर्धारण किया।
6. महाजनपदों के राजतंत्रीय राज्यों में विचारों की अभिव्यक्ति का अधिकार नही था जबकि गणतंत्रीय राज्यों में अभिव्यक्ति के अधिकार प्राप्त थे। इन्ही गणों में बुद्ध,महावीर आदि विचारकों का जन्म हुआ।
7. राजा किसानो, व्यापारियों, शिल्पकारों से कर तथा भेट वसूलता था तथा पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण करके भी धन इकट्ठा करता था।
8. महाजनपदों के आरंभिक दौर मे राजा कृषकों से सेना का कार्य करवाता था किन्तु कुछ राज्यों ने स्थाई सेना और नौकरशाही तंत्र विकसित कर लिया।

3. कलिंग युद्ध का अशोक पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर : अशोक अपने शासन के आठवे वर्ष में कलिंग (उड़ीसा) पर आक्रमण किया जिसमे एक लाख व्यक्ति मारे गये, 1.5 लाख बंदी बनाए गए तथा कई गुणा घायल हुए। जिससे अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ जिसके फलस्वरूप निम्नलिखित प्रभाव पड़े-

1. उसे युद्ध से घृणा हो गई तथा जीवन भर युद्ध न करने की प्रतिज्ञा की।
2. भीषण रक्तसंहार देखकर बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के प्रभाव से बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया।
3. कलिंग युद्ध के बाद अशोक शांतिवादी हो गया तथा राज्य-विस्तार की नीति का परित्याग कर दिया उसने दिग्विजय के स्थान पर धर्म विजय अपना लक्ष्य बनाया।
4. इस युद्ध के बाद मदिरापान, मांस, बलि आदि बिल्कुल बंद करा दिया गया। संयम, विचारों की पवित्रता, दया, दान, सत्य, सेवा, श्रद्धा आदि पर बल दिया गया।
5. अशोक 'देवनाम पियदस्सी' की उपाधि धारण किया तथा राज्य में युद्धघोष के स्थान पर 'धम्मघोष' प्रारंभ हो गया।

4. अभिलेखशास्त्रीयों की कुछ समस्याओं की सूची बनाइए ।

उत्तर - अभिलेखशास्त्री प्रायः वाक्यों के अर्थ स्पष्ट करते है। यह कार्य बहुत ही सावधानी से करना पड़ता है जिसमे अनेक समस्याएँ सामने आती है जैसे-

1. अभिलेखों की लिपियों को पढ़ने में कठिनाई होती है क्योंकि उन तिथियों को कोई दूसरी समकालीन

Jharkhandiab.com

लिपि के साथ नहीं लिखा होता हैं उदाहरण हड़प्पा सभ्यता की लिपि।

2. अभिलेखों में एक ही राजा के भिन्न-भिन्न नाम या सिर्फ उपाधि या सम्मानजनक संबोधन होता है जिससे राजा की पहचान स्पष्ट नहीं हो पाता जैसे अशोक के अभिलेखों मे अशोक के लिए 'देवनाम पियदस्सी' लिखा हुआ है।

3. अभिलेखों में एक ही राजा के उसी काल में भिन्न-भिन क्षेत्रों में अलग भाषाओं और लिपियों में लेख लिखे होते हैं। जिसे पढ़ने में कठिनाई होती हैं।

4. अभिलेखों में राजा के आदेश जो यातायात मार्ग में पत्थरों में खुदे होते थे। उन आदेशों का प्रजा कैसे पढ़ती होगी? क्योंकि प्रजा निरक्षर थीं फिर राजकीय आदेश का पालन कैसे होता होगा?आदि प्रश्नों के अर्थ स्पष्ट नहीं हो पाते।

5. अभिलेखो मे प्रयोग की गई वाक्यों के अर्थ समझने में कठिनाई होती है जैसे कलिंग विजय के उपरांत अशोक के वेदना को परिलक्षित करने वाले लेख कलिंग में नहीं मिलता बल्कि दूसरे स्थानों में लिखे हुए हैं जबकि अशोक कलिंग को वापस मुक्त नहीं कर रहा है। इस प्रकार के लेख से अभिलेखशास्त्री असमंजस की स्थिति में होते हैं जिससे सटीक अर्थ लगाने में कठिनाई होती हैं।

5. गुप्त साम्राज्य के पतन के क्या कारण थें?

उत्तर : गुप्त साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण है-

1. अयोग्य उत्तराधिकारी : स्कन्दगुप्त के पश्चात प्रायः सभी गुप्त शासक दुर्बल एवं अयोग्य हुए जिससे गुप्त साम्राज्य का पतन क्रमिक रूप से हुआ।

2. उत्तराधिकार के नियम का अभाव : उत्तराधिकार के निश्चित नियम नहीं होने के कारण सदैव गृह युद्ध की स्थिति बनी रही। इससे शासक की स्थिति कमजोर हुई।

3. नई शक्तियों का उदय : केंद्रीय शक्ति के कमजोर होने से स्वतंत्र राज्यों का उदय हुआ जिन्होंने राजा के प्रभुत्व को चुनौती दिया जैसे मालवा का यशोधर्मन आदि।

4. हूण आक्रमण :- गुप्त काल में हूण आक्रमण इसके पतन का एक प्रमुख कारण माना जाता है।

5. धार्मिक कारण :- उत्तरवर्ती गुप्त सम्राट बौद्ध धर्म के प्रति झुके हुए थे जिससे इसकी सैन्य व्यवस्था दुर्बल हुई।

6. सामंती व्यवस्थाः गुप्त प्रशासन सामंती व्यवस्था पर आधारित था। प्रशासकीय पदों का वंशानुगत होना भी पतन का एक कारण बना।

7. आर्थिक कारणः गुप्त काल में कृषि पर अत्यधिक दबाव हो गया, उद्योग, व्यापार और नगरों आदि के पतन होने से आर्थिक सम्पन्नता में कमी आई।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मगध साम्राज्य के शक्तिशाली होने के क्या कारण थे?

उत्तर : छठी शताब्दी ई० पूर्व से चौथी शताब्दी ई.पूर्व तक एक प्रमुख शक्ति के रूप मे मगध महाजनपद के शक्तिशाली होने के निम्नलिखित कारण थे:

1. भौगोलिक स्थिति : मगध की दोनो राजधानियों राजगृह और पाटलिपुत्र - सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान पर स्थित थी। राजगीर पाँच पहाड़ियों से घिरा एक दुर्ग के समान था वही पाटलिपुत्र गंगा, गंडक और सोन नदियों तथा पुनपुन नदी से घिरे होने के कारण एक जलदुर्ग के समान था।

2. लोहे के समृद्ध भंडार : मगध के दक्षिणी क्षेत्र आधुनिक झारखंड में लोहे के भंडार होने के कारण लोहे के हथियार एवं उपकरण आसानी से उपलब्ध थे।

3. उपजाऊ कृषि : मगध का क्षेत्र कृषि की दृष्टि से काफी उर्वर था। यहां के लोग अन्न उत्पादन में आत्मनिर्भर थे।

4. जलमार्ग से यातयात के साधनः गंगा तथा उसकी सहायक नदियों के समीप होने के कारण जलमार्ग से यात्रा सस्ता एवं आसान था।

5. हाथी की उपलब्धताः इस क्षेत्र के घने जंगलो में हाथी काफी संख्या में पाये जाते थे जिनका युद्ध में काफी महत्व था। हाथी से दलदल स्थान तथा दुर्गो को तोड़ने में काफी सहायता मिलती थी।

6. योग्य शासक : मगध के आरंभिक शासक बिंबिसार, अज़ातशत्रु और महापद्मनंद आदि अत्यधिक योग्य एवं महत्वाकांक्षी थे। इनकी नीतियों ने मगध का विस्तार किया।

2. मौर्य प्रशासन के प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए। अशोक के अभिलेखों में इनमें से कौन-कौन से तत्वों के प्रमाण मिलते हैं।

उत्तर : मौर्य प्रशासन के महत्वपूर्ण विशेषताएं निम्नलिखित हैं :

1. प्रमुख राजनीतिक केन्द्रः मौर्य साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र और अन्य चार प्रांतीय केंद्र- तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरी था। प्रत्येक प्रांत में एक राज्यपाल नियुक्त किए जाते थे। प्रान्तों को निर्देश सीधे राजा से प्राप्त होते थे। प्रांतों में काउंसिल ऑफ मिनिस्टर (मंत्रीपरिषद्) नियुक्त किए जाते थे।

2. अति केन्द्रीकृत प्रशासनिक व्यवस्था : मौर्य साम्राज्य में सारे अधिकार राजा के द्वारा निर्देशित होते थे। कौटिल्य ने राजा को धर्मप्रवर्तक अर्थात सामाजिक व्यवस्था का संचालक कहा है। अशोक ने अपने अभिलेखों में कहा है कि राजा का आदेश अन्य आदेशों से ऊपर है। मौर्य प्रशासन का प्रमुख राजा होता था, जो शासन का केंद्र बिंदु था। राजा कानून बनाने, लागू करने तथा न्यायिक शक्ति अंतिम रूप से अपने पास रखता था। अतः कहा जा सकता है कि मौर्य शासक स्वेच्छाचारी तथा निरंकुश थे।

3. मंत्रिपरिषद् : महत्वपूर्ण मामलों में राजा को परामर्श देने के लिए मंत्रिपरिषद् होती थी। मंत्रिपरिषद के सदस्यों की नियुक्ति राजा स्वयं करता था जैसे प्रधानमंत्री, पुरोहित, सेनापति आदि। मंत्रिपरिषद वेतनभोगी होते थे। इनके निर्णय सर्वमान्य थे किन्तु राजा को विशेषाधिकार भी था, वह निर्णयों को मानने के लिए बाध्य नहीं था।

4. न्याय व्यवस्था : मौर्यो ने एक न्याय व्यवस्था स्थापित किया था जिसके मूल तत्वों को आज भी भारत में अनुकरण किया जाता है। सम्पूर्ण न्याय व्यवस्था का प्रधान न्यायधीश राजा होता था। नगरों व जनपदों के लिए अलग अलग न्यायधीश होते थे। नगरों के न्यायधीश राजुक' कहलाते थे। ग्रामों में भी पंचायत होती थी जो छोटे-छोटे मुकदमों का फैसला करती

Jharkhandbar.com

थी। न्यायालय दो प्रकार के थे : दीवानी मुकदमा (धन संबंधी) तथा फौजदारी मुकदमा। जिनके न्यायालय क्रमशः धर्मस्थीय और कंटक शोधन कहलाते थे। निचले न्यायालयों के विरुद्ध अपीलें बडे न्यायालयों मे सुनी जाती थी। न्यायालयों द्वारा जुर्माना, अंग भंग तथा मृत्युदण्ड साधारण रूप में दिए जाते थे।

5. सैनिक व्यवस्था : राजा प्रधान सेनापति होता था तथा युद्ध में सेना का संचालन भी करता था। मौर्यो के पास विशाल वेतनभोगी सेना थी। वास्तव में वह युग सैनिक युग था तथा साम्राज्य की आधार सेना थी।

   मेगास्थनीज ने सैनिक गतिविधियों के संचालन के लिए एक समिति और छः उपसमितियों का जिक्र किया है जिसके अन्तर्गत नौसेना, यातायात व खान पान, पैदल सैनिकों, अश्वारोहियों, रथारोहियों तथा हाथियों का संचालन किया जाता था। यूनानी लेखक प्लिनी ने भी विशाल सेना का विवरण दिया है।

6. प्रशासनिक अधिकारीः सम्राट द्वारा नियुक्त अधिकारी विभिन्न कार्यो का निरक्षण करते थे। शीर्षस्थ अधिकारी तीर्थ कहलाते थे। सम्भव है अधिकारियों को नगद वेतन दिया जाता था। उचतम कोटि के अधिकारी थे- मन्त्री, पुरोहित, सेनापति और युवराज। इन्हें लगभग 48 हजार पण की भारी रकम मिलती थी (पण-चाँदी का सिक्का) निचले दर्जे के अधिकारी को 60 पण मिलते थे।

7. गुप्तचर व्यवस्था : मौर्य शासकों ने गुप्तचर व्यवस्था को मजबूती से स्थापित किया था जो राजा को सूचना पहुँचाते थे। गुप्तचरों को चर या गूढपुरुष कहा जाता था। अर्थशास्त्र में दो प्रकार के गुप्तचरों का वर्णन है

   1. संस्थाः जो संगठित होकर एक ही स्थान पर कार्य करते थे।
   2. संचारः घुमक्कड़ गुप्तचर।

8. लोक कल्याण की अवधारणा : अर्थशास्त्र लिखता है कि राज्य का खजाना लबालब भरा रहना चाहिए और उतनी ही तेजी से जन कल्याण में खर्च होना चाहिए।

अशोक के अभिलेखों में मौर्य प्रशासन के प्रमुख तत्वों की झलक मिलती है-

1. अभिलेखों में प्रशासन के प्रमुख केन्द्र पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जैन, सुवर्णगिरी, तोसली आदि का उल्लेख हैं।
2. कलिंग अभिलेख में शासनाध्यक्ष को कुमार वहीं दूसरे अभिलेखों में आर्यपुत्र का जिक्र है।
3. अशोक के वृहत् शिलालेख v में धर्म महामात्रों की नियुक्ति का विवरण है।
4. अशोक स्तंभ लेख vii में धर्म महामात्रों के कर्तव्यों का जिक्र है
5. अभिलेखों में स्त्री अध्यक्ष महामात्रों का भी जिक्र हैं।
6. स्तम्भ लेख iv में राजुक के कार्य निर्देशित हैं।
7. अभिलेखों में गुप्तचरों को 24 घण्टे में कभी भी राजा से मिलने की अनुमति का उल्लेख है।

3. अशोक का धम्म क्या है? इसके मुख्य विशेषताओं को लिखें।

उत्तर : अशोक का धम्म एक सजग नैतिक सामाजिक आचार संहिता थी जिसमे अनेको आदर्श एवं आचार-व्यवहार का समावेश था। पारिवारिक और सामाजिक संबंधों में नैतिकता एवं प्रेम का आग्रह था। इसमें सदाचारी जीवन में जोर था, मध्यम मार्ग का अवलंबन था किंतु इसे मानने के लिए कोई दवाब नहीं था ।अतः अशोक के धम्म में नीतियाँ सुझाई जाती थी और विवेक पर छोड़ दिया जाता था । अशोक का धम्म एक नैतिक सिद्धांत था जो समाज के परिपेक्ष्य में व्यक्ति के आचरण को परिभाषित करता था।

अशोक के धम्म की मुख्य विशेषताएँ-

1. सभी धर्मों का सार : अशोक का धम्म तत्कालिन सभी धर्मों का सार था। अशोक ने धम्म का सार अपने अनुभव एवं नैतिक ज्ञान से प्राप्त किया था। सभी धर्मों के मूल तत्व में लोक कल्याण, नैतिकता, आचरण आदि अच्छी बातें सुझाई जाती है। उन सबका सार धम्म में मिलता है।
2. प्रमुख धार्मिक सिद्धांत :
   - A. प्रत्येक व्यक्ति में सत्य, अहिंसा, करुणा, उदारता, पवित्रता, दानशीलता के गुणों का विकास करना
   - B. व्यक्ति के अवगुणों का जिसे अशोक पापमय आवेग कहता है जैसे क्रूरता, क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या आदि का निषेध
   - C. सबसे उचित व्यवहार एवं सबका सम्मान विशेषकर दासों के प्रति।
   - D. व्यक्ति के अंदर पश्चाताप की भावना का विकास करता
   - E. व्यक्ति एवं संप्रदायों के बीच सहिष्णुता की भावना का विकास करना
3. सद्गुणों पर जोर : विभिन्न धर्मों के सद्गुणों जैसे प्रेम, सहिष्णुता, श्रद्धा, अहिंसा आदि को स्वीकार करने की बात कही गई जबकि अवगुणो जैसे क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या आदि का दमन करना।
4. अहिंसा पर जोर : अहिंसा धम्म का महत्वपूर्ण अंग था। 'अहिंसा परमो धर्मः' का पालन करने के लिए प्रजा को प्रेरित किया गया।
5. व्यावहारिक धर्म : धम्म में कर्मकांड और अनुष्ठानों पर जोर नहीं दिया गया बल्कि आचरण, कर्म की पवित्रता, ब्राह्मणों श्रमणों के प्रति आदर, पशुओं के प्रति दया आदि व्यावहारिक बातें शामिल थी।
6. विभित्र धर्मों में सहिष्णुता की भावना : किसी दूसरे धर्म एवं मत की निंदा नहीं करना बल्कि आपस में विचार विनिमय एवं आदर-भाव रखते हुए आपसी एकता बनाए रखना।

jharkhandlab.com

अध्याय - 03 बंधुत्व जाति तथा वर्ग

आरंभिक समाज (लगभग 600 ईसवी पूर्व से 600 ईसवी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **संस्कृत ग्रंथों में 'कुल' शब्द का प्रयोग किसके लिए किए की गई ?.**
   a. परिवार b. जाति
   c. बांधव d. इनमें से कोई नही

2. **महाभारत की रचना किसने की?**
   a. मनु b. वेदव्यास
   c. बाल्मीकि d. इनमें से कोई नहीं

3. **महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में कितने दिनों तक चला ?**
   a. 10 दिन b. 15 दिन
   c. 14 दिन d. 18 दिन

4. **महाभारतकालीन समाज का स्वरूप कैसा था?**
   a. पितृसत्तात्मक b. मातृसत्तात्मक
   c. कुलसत्तात्मक d. इनमें से कोई नहीं

5. **मनुस्मृति में कितने प्रकार के विवाह का उल्लेख है ?**
   a. 8 b. 16
   c. 9 d. 4

6. **दुर्योधन की मां कौन थी ?**
   a. गांधारी b. कुंती
   c. माद्री d. सत्यवती

7. **मानव के सम्पूर्ण जीवन को कितने भागों में बांटा गया?**
   a. 5 b. 4
   c. 3 d. 9

8. **महाभारत की रचना किस भाषा में हुई थी?**
   a. संस्कृत b. पाली
   c. प्राकृत d. हिंदी

9. **पुराणों की संख्या कितनी है?**
   a. 15 b. 18
   c. 12 d. 10

10. **महाभारत का फारसी अनुवाद का नाम क्या है?**
    a. राज्मनामा b. महाभारतनाम
    c. ग्रंथनामा d. इनमें से कोई नहीं

11. **मृच्छकटिकम के लेखक का नाम लिखें।**
    a. शूद्रक b. बिष्णुगुप्त
    c. हलधर d. इनमें से कोई नहीं

ANSWER:

1.a 2.b 3.d 4.a 5.a 6.a 7b 8.a 9.b 10.a 11.a

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1. **महाकाव्य से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर : एक लम्बी कविता जिसमें किसी नायक अथवा राष्ट्र के जीवन एवं उपलब्धियों का विशद वर्णन हो जैसे महाभारत।

2. **गोत्र को परिभाषित करें।**

उत्तर : गोत्र प्राचीन मानव समाज द्वारा बनाए गए रीति-रिवाज का हिस्सा है जो यह निश्चित करता है कि एक व्यक्ति किस पूर्वज की संतान है।

3. **स्त्रीधन से आप क्या समझते हैं?**

उत्तर : विवाह के समय स्त्री को प्राप्त उपहारस्वरूप धन को स्त्रीधन कहा जाता है। यह दहेज से भिन्न है क्योंकि दहेज़ वर पक्ष को दिया जाता है। स्त्रीधन पर सम्पूर्ण रूप से स्त्री का अधिकार होता है।

4. **मनुस्मृति का दो महत्व लिखिए।**

उत्तर :

क. यह तात्कालिन समाज के नियमों तथा रीतियों का वर्णन देता है।
ख. इसका प्रभाव आज भी समाज में दिखलाई देता है।

5. **कुल तथा जाति का क्या अर्थ है?**

उत्तर : संस्कृत ग्रन्थों में कुल शब्द का प्रयोग परिवार के लिए और जाति शब्द का बांधवों के बड़े समूह के लिए होता था।

6. **अंर्तविवाह से क्या तात्पर्य है ?**

उत्तर : अंर्तविवाह में वैवाहिक संबंध समूह के मध्य ही होते है। यह समूह गोत्र, कुल अथवा जाति या फिर एक ही स्थान पर बसने वालों का हो सकता है।

7. **नाट्यशास्त्र के लेखक का नाम लिखिए।**

उत्तर : भरतमुनि।

8. **महाभारत के सबसे चुनौतीपूर्ण प्रसंगों में से एक का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर : महाभारत के सबसे चुनौतीपूर्ण प्रकरणों में से एक द्रौपदी का पांच पांडवों के साथ विवाह है। यह बहुपतित्व (कई पतियों वाली महिला की प्रथा) का एक उदाहरण है जो महाकाव्य का एक केंद्रीय विषय है।

9. **धर्मशास्त्रों के अनुसार ब्राह्मणों के दो आदर्श व्यवसायों का उल्लेख कीजिए।**

उत्तर : धर्मशास्त्रों के अनुसार, ब्राह्मणों के दो आदर्श व्यवसाय इस प्रकार थे:

- वेद पढ़ना और पढ़ाना।
- यज्ञ करना और उपहार प्राप्त करना।

10. **पंचमवेद की संज्ञा किसे दी गयी है।**

उत्तर : महाभारत

Jharkhandlab.com

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. स्पष्ट कीजिए कि विशिष्ट परिवारों में पितृवंशिकता क्यों महत्त्वपूर्ण रही होगी?

उत्तर : पितृवंशकिता का आशय वंश परंपरा से है जो पिता के बाद पुत्र, फिर पौत्र, प्रपौत्र इत्यादि से चलती है। विशिष्ट परिवारों में वस्तुतः शासक एवं संपन्न परिवार शामिल थे। ऐसे परिवारों की पितृवंशिकता निम्नलिखित दो कारणों से महत्त्वपूर्ण रही होगी।

1. वंश-परंपरा को नियमित रखने हेतु- धर्मसुत्रों की माने तो वंश को पुत्र ही आगे बढ़ाते हैं। अतः सभी परिवारों की कामना पुत्र प्राप्ति की थी। यह तथ्य ऋग्वेद के मंत्रों से स्पष्ट हो जाता है। इसमें पिता अपनी पुत्री के विवाह के समय इंद्र से उसके लिए पुत्र की कामना करता है।
2. उत्तराधिकार संबंधी विवाद से बचने हेतु- विशिष्ट परिवारों के माता-पिता नहीं चाहते थे कि उनके बाद उत्तराधिकार को लेकर किसी प्रकार का झगड़ा हो। राज परिवारों में तो उत्तराधिकार के रूप में राजगद्दी भी शामिल थी। अतः पुत्र न होने पर अनावश्यक विवाद होता था।

2. क्या आरंभिक राज्यों में शासक निश्चित रूप से क्षत्रिय ही होते थे? चर्चा कीजिए।

उत्तर : वर्ण व्यवस्था के अनुसार समाज की रक्षा का दायित्व और शासक बनने का अधिकार क्षत्रियों के पास था। परंतु हम देखते हैं कि आरंभिक राज्यों में सभी शासक क्षत्रिय वंश से नहीं थे। बहुत-से गैर-क्षत्रिय शासक वंशों का भी पता चलता है। उदाहरण के लिए ह्वेनसांग के समय उज्जैन व महेश्वरपुर के शासक ब्राह्मण थे। चन्द्रगुप्त मौर्य को भी ब्राह्मण ग्रंथों (पुराणों) में शूद्र बताया गया जबकि बौद्ध ग्रंथ उसे क्षत्रिय मानते हैं। मौर्यों के बाद शुंग व कण्व ब्राह्मण शासक बने। गुप्तवंश के शासक तथा हर्षवर्धन भी संभवतः वैश्य थे। इनके अतिरिक्त प्राचीन काल में बाहर से आने वाले बहुत-से आक्रमणकारी शासक (शक, कुषाण इत्यादि) भी क्षत्रिय, नहीं थे। दक्कन भारत के सातवाहन शासक भी स्वयं को ब्राह्मण कहते थे। इस प्रकार कह सकते हैं कि आरम्भिक राज्यों में अधिकांशतः शासक क्षत्रिय होते थे, परन्तु सभी शासक क्षत्रिय नहीं होते थे।

3. महाभारत के संबंध में बंधुता के रिश्तों में किस प्रकार परिवर्तन आया ?

उत्तर : महाभारत वास्तव में ही एक बदलते रिश्तों की एक कहानी है। यह चचेरे भाइयों के दो दलों - कौरवों और पांडवों के बीच भूमि और सत्ता को लेकर हुए संघर्ष का वर्णन करती है। दोनों ही दल कुरु वंश से संबंधित थे जिनका कुरु जनपद पर शासन था। उनके संघर्ष ने अंततः एक युद्ध का रूप ले लिया जिसमें पांडव विजय हुए। इसके बाद पितृवंशिक उत्तराधिकार की उद्घोषणा की गयी। भले ही पितृवंशिकता की परंपरा प्रचलित थी परंतु महाभारत की मुख्य कथावस्तु ने इस आदर्श को और सुदृढ़ किया। पितृवंशिकता के अनुसार पिता की मृत्यु के बाद उसके पुत्र उसके संसाधनों पर अधिकार जमा सकते थे। अतः ऐसा कहा जा सकता है कि महाभारत में बंधुता के रिश्तों को परिवर्तित किया।

4. महाभारत के महत्व पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर : महाभारत भारतीय संस्कृति तथा हिन्दू धर्म के विकास का लेखा-जोखा है।

यह एक बहुआयामी ग्रंथ है। इसमें समाज के सभी अंग जैसे राजनीति, धर्म, दर्शन तथा आदर्श की झलक मिलती है। इसमें युद्ध व शांति, सदगुण व दुर्गुण की व्याख्या की गई है। भारतीय इतिहास का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। रूपक कथाएँ संभवतः काल्पनिक है। निश्चित रूप से सामाजिक मूल्यों के अध्ययन के लिए महाभारत एक अच्छा स्रोत है। इस प्रकार महाभारत की महत्ता को समझा जा सकता है।

5. मनु स्मृति में वर्णित चाण्डालों का वर्णन कीजिए?

उत्तर : चाण्डालों के बारे में मुख्य रूप से वर्णन मनुस्मृति में किया गया है।

a. इसके अनुसार चाण्डालों को गांव से बाहर रहना पड़ता था उन्हें रात में गांव में आने जाने की आज्ञा नहीं थी।
b. वह लोगों के फेंके हुए बर्तनों और चीजों का इस्तेमाल किया करते थे।
c. मृत शवों से उतार कर कपड़े पहना करते थे सभी शवों का अंतिम संस्कार उन्हीं के द्वारा किया जाता था।
d. समाज द्वारा उन्हें अस्पृश्य माना जाता था चाण्डालों को निंदनीय नजरों से देखा जाता था।
e. उन्हें देख लेना भी पाप समझा जाता था।

6. महाभारतकाल की जाति व्यवस्था की विशेषताएँ लिखिए?

उत्तर : महाभारतकालीन जाति का व्यवस्था का निर्धारण व्यक्तियों द्वारा किए जा रहे कार्य के अनुसार होता था। समय के साथ-साथ इन जातियों की संख्या बढ़ती गई और इनका निर्धारण भी जन्म के अनुसार किया जाने लगा। जैसे की शिकारी निषाद (जंगल में रहने वाले लोग) कुम्हार, सुवर्णकार। ऐसे लोग जो उस समय संस्कृत नहीं बोल पाते थे उन्हें म्लेच्छ कहा जाता था एवं हीनदृष्टि से देखा जाता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. क्या यह संभव है की महाभारत का एक ही रचियता था?

उत्तर : महाभारत के रचनाकार के विषय में भी इतिहासकार एकमत नहीं हैं। जनश्रुतियों के अनुसार महर्षि व्यास ने इस ग्रंथ को श्रीगणेश जी से लिखवाया था। परंतु आधुनिक विद्वानों का विचार है कि इसकी रचना किसी एक लेखक द्वारा नहीं हुई। वर्तमान में इस ग्रंथ में एक लाख श्लोक हैं लेकिन शुरू में इसमें मात्र 8800 श्लोक ही थे। दीर्घकाल में रचे गए इन श्लोकों का रचयिता कोई एक लेखक नहीं हो सकता। विजयों का बखान करने वाली यह कथा परंपरा मौखिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में चलती रही। इतिहासकारों का अनुमान है कि पाँचवीं शताब्दी ई०पू० से इस कथा परंपरा को ब्राह्मण लेखकों ने अपनाकर इसे और विस्तार दिया। साथ ही इसे लिखित रूप भी दिया। यही वह समय था जब उत्तर भारत में क्षेत्रीय राज्यों और राजतंत्रों का उदय हो रहा था। कुरु और पांचाल, जो महाभारत कथा के केंद्र बिंदु हैं, भी छोटे सरदारी राज्यों से बड़े राजतंत्रों के रूप में उभर रहे थे। संभवतः इन्हीं नई परिस्थितियों में महाभारत की कथा में कुछ नए अंश शामिल हुए। यह भी संभव है कि नए राजा अपने इतिहास को नियमित रूप से लिखवाना चाहते हों अतः ऐसा मानना की महाभारत का एक ही रचियता था, संभव प्रतीत नहीं होता।

Jharkhandlan.com

2. आरंभिक समाज में स्त्री-पुरुषके संबंधों की बिषमतायें कितनी महत्वपूर्ण रही होगी? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : आरंभिक समाज में स्त्री-पुरुष के संबंधों में अनेक विषमताएँ थीं। हालाँकि स्त्रियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। विशेषकर पुत्रों को जन्म देने वाली माता के प्रति परिजन अधिक स्नेह अभिव्यक्त करते थे। जिसकी कोख से अधिक सुंदर सुशील, वीर, सद्गुण संपन्न, विद्वान पुत्र पैदा होते थे, समाज में उस स्त्री को निःसंदेह अधिक सम्मान से देखा जाता था।

समाज में पितृसत्तात्मक परिवारों का प्रचलन था। पितृवंशिकता को ही सभी वर्गों और जातियों में अपनाया जाता था। कुछ विद्वान और इतिहासकार सातवाहनों को इसका अपवाद मानते हैं। उनके अनुसार सातवाहनों में मातृवंशिकता थी क्योंकि इनके राजाओं के नाम के साथ माता के नाम जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, अभिलेखों से सातवाहन राजाओं की कई पीढ़ियों के राजा गोतमी पुत्र शतकर्न्नी । उपनिषद भी समाज में स्त्री-पुरुषों के अच्छे संबंधों के प्रमाण देते हैं। समाज में विवाहिता स्त्रियाँ अपने पति को सम्मान देती थीं और वे प्रायः उनके गोत्र के साथ जुड़ने में कोई आपत्ति नहीं करती थी।

कुछ इसी प्रकार का महाभारत में उल्लेख मिलता है कि जब कौरवों और पांडवों के बीच युद्ध अवश्यंभावी हो गया तो गांधारी ने अपने ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन से युद्ध न करने की विनती की "शांति की संधि करके तुम अपने पिता, मेरा तथा अपने शुभचिंतकों का सम्मान करोगे। जो पुरुष अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण रखता है, वह पुरुष ही राज्य की देखभाल कर सकता है। लालच और क्रोध एक बुरी बला है।" किंतु दुर्योधन ने माँ की सलाह नहीं मानी। फलतः उसका अंत बहुत ही बुरा हुआ।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि आरंभिक समाज में लैंगिक असमानता प्रचलित थी।

3. महाभारत ग्रंथ की गतिशीलता की ब्याख्या कीजिए।

उत्तर : निम्नलिखित बिंदु साबित करते हैं कि महाभारत गतिशील हैं।

1. महाभारत का विकास संस्कृत संस्करण के साथ नहीं रुका। सदियों से, महाकाव्य के संस्करण लोगों, समुदायों और ग्रंथों को लिखने वालों के बीच संवाद की एक सतत प्रक्रिया के माध्यम से विभिन्न भाषाओं लिखे गए थे।
2. कई कहानियाँ जो विशिष्ट क्षेत्रों में उत्पन्न हुईं या कुछ लोगों के बीच प्रचलित हुईं, उन्हें महाकाव्य में अपना रास्ता मिल गया।
3. महाकाव्य की केंद्रीय कहानी अक्सर अलग- अलग तरीकों से दोहराई जाती थी और एपिसोड को मूर्तिकला और पेंटिंग में चित्रित किया गया था।

उन्होंने प्रदर्शन कलाओं की एक विस्तृत श्रृंखला जैसे नाटक, नृत्य और अन्य प्रकार के आख्यानों को भी प्रदर्शित किया।

4. महाभारत कालीन समाज में प्रचलित विवाह के प्रकार की चर्चा करें।

उत्तर : गोत्र के आधार पर विवाह के प्रकार निम्नलिखित हैं।

1. बहिर्विवाह एक गोत्र से दूसरे गोत्र में विवाह करने की पद्धति को बहिर्विवाह कहा जाता था
2. अंतर्विवाह- एक समान गोत्र, कुल या जाति के लोगों में विवाह की स्थिति को अंतर्विवाह कहा जाता था
3. बहुपति प्रथा - यह वह स्थिति थी जिसमें एक स्त्री के अनेकों पति होते थे
4. बहुपत्नी विवाह - इस विवाह के अंदर एक ही पुरुष की अनेकों पत्नियां हुआ करती थी

धर्म सूत्र और धर्म शास्त्रों के अनुसार आठ प्रकार के विवाह होते थे।

1. <u>ब्रह्म विवाह-</u> दोनों पक्षों की सहमति के साथ कन्या का विवाह करना ब्रहम विवाह कहलाता है
2. <u>देव विवाह-</u> किसी धार्मिक अनुष्ठान के मूल्य के रूप में अपनी कन्या को दान में दे देना देव विवाह कहलाता है
3. <u>आर्ष विवाह-</u> कन्या के माता-पिता को कन्या का मूल्य (दहेज, गोदान) देकर कन्या से विवाह करना आर्ष विवाह कहलाता है
4. <u>प्रजापत्य विवाह-</u> कन्या की सहमति के बिना उसका विवाह अभिजात्य वर्ग अर्थात उच्च वर्ग के वर से कर देना प्रजापत्य विवाह कहलाता है।
5. <u>गंधर्व विवाह-</u> परिवार वालों की सहमति के बिना वर और कन्या प्रेम में अभिभूत होकर बिना किसी रीति-रिवाज के आपस में विवाह कर लेना गंधर्व विवाह कहलाता है।
6. <u>असुर विवाह-</u> कन्या को खरीदकर विवाह कर लेना असुर विवाह कहलाता है।
7. <u>राक्षस विवाह-</u> कन्या की सहमति के बिना उसका अपहरण करके जबरदस्ती विवाह कर लेना राक्षस विवाह कहलाता है।
8. <u>पैशाच विवाह-</u> कन्या की मदहोशी (गहन निद्रा, मानसिक दुर्बलता आदि) का लाभ उठा कर उससे शारीरिक सम्बंध बना लेना और उससे विवाह करना 'पैशाच विवाह' कहलाता है।

इन विवाहों में से पहले चार विवाहों को सही माना जाता था जबकि बाकि के चार विवाहों को गलत माना जाता था।

5. आरंभिक समाज में स्त्री-पुरुष के संबंधों की विषमताएँ कितनी महत्वपूर्ण रही होंगी? कारण सहित उत्तर दीजिए।

उत्तर : वंश और रिश्तेदारी का पता लगाने की दो अवधारणाएँ थीं पितृवंशिकता जिसका अर्थ है वह वंश परंपरा जो पिता से पुत्र फिर पौत्र, प्रपौत्र आदि से चलती है और मातृवंशिकता इस शब्द का इस्तेमाल हम तब करते हैं जहाँ वंश परंपरा माँ से जुड़ी होती है। इस समय पितृवंशिकता प्रचलित थी और पितृसत्तात्मक उत्तराधिकार की घोषणा की गई थी कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में स्त्रियाँ जैसे प्रभावती गुप्त ने सत्ता का उपभोग किया। मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायदाद का माता-पिता की मृत्यु के बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बँटवारा किया जाना चाहिए। स्त्रियाँ इस पैतृक संपत्ति में हिस्सेदारी की माँग नहीं कर सकती थीं। किंतु विवाह के समय मिले उपहारों पर स्त्रियों का स्वामित्व माना जाता था जिसे स्त्री - धन (अर्थात् स्त्री का धन) की संज्ञा दी जाती थी। इस संपत्ति को उनकी संतान विरासत के रूप में प्राप्त कर सकती थी और इस पर उनके पति का कोई अधिकार नहीं

Jharkhandlab.com

होता था। किंतु मनुस्मृति में स्त्रियों को पति की आज्ञा के विरुद्ध पारिवारिक संपत्ति अथवा स्वयं अपने बहुमूल्य धन के गुप्त संचय के विरुद्ध भी चेतावनी देती है। पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए विवाह के नियम भी अलग-अलग थे। पितृवंश को आगे बढ़ाने के लिए पुत्र महत्वपूर्ण थे। वही इस व्यवस्था में पुत्रियों को अलग तरह से देखा जाता था। उनके पास घर के संसाधनों का कोई दावा नहीं होता था। एक धारणा यह भी थी कि कन्या दान पिता का एक महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य होता है, जबकि बेटों के मामले में ऐसा कोई विश्वास नहीं था । यद्यपि उच्च वर्ग की महिलाएँ संसाधनों पर अपनी पैठ रखती थीं, सामान्यतः भूमि, पशु और धन पर पुरुषों का ही नियंत्रण था। दूसरे शब्दों में, स्त्री और पुरुष के बीच सामाजिक हैसियत की भिन्नता संसाधनों पर उनके नियंत्रण की भिन्नता की वजह से अधिक प्रखर हुई। उपयुक्त कारणों से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि प्रारंभिक समाजों में लैंगिक असमानता प्रचलित थी।

6. उन साक्ष्यों की चर्चा कीजिए जो यह दर्शाते हैं कि बंधुत्व और विवाह संबंधी ब्राह्मणीय नियमों का सर्वत्र अनुसरण नहीं होता था।

उत्तर : साक्ष्य जो यह दर्शाते हैं कि बंधुत्व और विवाह संबंधी ब्राह्मणीय नियमों का सर्वत्र अनुसरण नहीं किया जाता था। परिवार एक बड़े समूह का हिस्सा होते हैं जिन्हें हम संबंधी कहते हैं। पारिवारिक रिश्ते नैसर्गिक और रक्त संबंध माने जाते हैं किंतु इन संबंधों की परिभाषा अलग-अलग तरीके से की जाती है। कुछ समाजों में भाई-बहन (चचेरे, मौसेरे आदि) से खून का रिश्ता माना जाता है किंतु अन्य समाज ऐसा नहीं मानते। आरंभिक समाजों के संदर्भ में इतिहासकारों को विशिष्ट परिवारों के बारे में जानकारी आसानी से मिल जाती है। अधिकतर राजवंश पितृवंशिकता प्रणाली का अनुसरण करते थे। हालाँकि इस प्रथा में विभिन्नता थी, कभी पुत्र के न होने पर एक भाई दूसरे का उत्तराधिकारी हो जाता था तो कभी बंधु बांधव सिंहासन पर अपना अधिकार जमाते थे। कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में स्त्रियाँ जैसे प्रभावती गुप्त सत्ता का उपभोग करती थीं। जहाँ पितृवंश को आगे बढ़ाने के लिए पुत्र महत्वपूर्ण थे, वहाँ इस व्यवस्था में पुत्रियों को अलग तरह से देखा जाता था। पैतृक संसाधनों पर उनका कोई अधिकार नहीं था। अपने गोत्र से बाहर उनका विवाह कर देना ही अपेक्षित था। इस प्रथा को बहिर्विवाह पद्धति कहते हैं और इसका तात्पर्य यह था कि ऊँची प्रतिष्ठा वाले परिवारों की कम उम्र की कन्याओं और स्त्रियों का जीवन बहुत सावधनी से नियमित किया जाता था जिससे 'उचित' समय और 'उचित' व्यक्ति से उनका विवाह किया जा सके। इसका प्रभाव यह हुआ कि कन्यादान अर्थात् विवाह में कन्या की भेंट को पिता का महत्वपूर्ण धार्मिक कर्तव्य माना गया। किंतु, सातवाहन शासकों का मामला अलग था। कुछ सातवाहन राजा बहुपत्नी प्रथा (अर्थात् एक से अधिक पत्नी) को मानने वाले थे। सातवाहन राजाओं से विवाह करने वाली रानियों के नामों का विश्लेषण इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि विवाह के बाद भी उन्होंने अपने पिता के गोत्र नाम को ही कायम रखा। यह विचार ब्राह्मणवादी सिद्धांतों के विपरीत था।

7. महाभारत की प्रासंगिकता को विस्तारपूर्वक लिखें।

उत्तर : महाभारत की वर्तमान में प्रासंगिकता की चर्चा भी महत्वपूर्ण है और सदा रहेगी। महाभारत हमारा साहित्य (महाकाव्य) है, इतिहास है और हमारा अध्यात्म है। इसमें न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, ज्योतिष, युद्धनीति, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, कामशास्त्र, खगोलविद्या तथा धर्मशास्त्र है। जो अपने समय का शाश्वत सत्य भी हैं। एक ऐसे युद्ध की कथा और व्यथा है, जो हमें न केवल बाहरी बल्कि भीतरी शत्रुओं से सावधान करता है। भीतरी का अर्थ भी व्यापक है। घर, परिवार, कुटम्ब, समाज, देश ही नहीं, अपने मन-मस्तिष्क के भीतर चल रहे नकारात्मक विचार भी उसमें शामिल है। यथा अर्जुन का विषाद योग। इसमें राग-द्वेष है, श्रृंगार है, वात्सल्य है, द्वेष है, ईर्ष्या है, कामना है, तृष्णा है, क्रोध है, उत्साह है, भय, और शोक सब कुछ है। अर्थात् वे सारे भाव आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने सहस्रों वर्ष पूर्व थे। जिस प्रकार प्रकृति के नियम नहीं बदले, आधुनिक होकर भी मानवीय प्रवृत्तियां नहीं बदली उसी प्रकार महाभारत की प्रसंगिकता भी बरकरार है। परिस्थितियों और परिवेश में बहुत बदलाव के बावजूद महाभारत के अनेक प्रसंग वर्तमान में भी समान रूप से प्रासंगिक हैं। महाभारत की प्रासंगिकता धर्मक्षेत्र भगवान कृष्ण जी से ही हैं। सर्वप्रथम उन्हें प्रणाम उनके चरित्र और व्यवहार से कुछ सीखने का प्रयास करें। श्रीकृष्ण के लिए जनहित महत्वपूर्ण है । शिशुपाल के हमलों से जनता को बचाने के लिए वे ब्रज से द्वारका चले जाते है। अनावश्यक विवादों को टालना उनसे सीखा जा सकता है। आज भी ऐसा करके हम अपने समाज को विवादों से बचा सकते हैं।

jharkhandjcert.com

अध्याय - 04 विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (लगभग 600 ई. पू. से 600 ई.)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. **सांची मध्य प्रदेश के किस जिले में स्थित है?**
   a. विदिशा b. रायसेन
   c. सागर d. भोपाल

2. **महात्मा बुद्ध का जन्म कहां हुआ था?**
   a. लुंबिनी b. बोधगया
   c. वैशाली d. कुशीनारा

3. **महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति कहां हुई थी?**
   a. लुंबिनी b. पावा
   c. सारनाथ d. बोधगया

4. **स्तूप किस धर्म से संबंधित है?**
   a. जैन धर्म b. बौद्ध धर्म
   c. शैव धर्म d. वैष्णवधर्म

5. **महावीर स्वामी का जन्म कहां हुआ था?**
   a. लुंबिनी b. पावा
   c. कुंडग्राम (वैशाली) d. सारनाथ

6. **श्वेतांबर एवं दिगंबर का संबंध किस धर्म से है?**
   a. हिंदू b. बौद्ध
   c. शैव धर्म d. जैन धर्म

7. **जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर कौन थे?**
   a. ऋषभदेव b. पार्श्वनाथ
   c. महावीर स्वामी d. आदिनाथ

8. **महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश कहां दिया था?**
   a. लुंबिनी b. पावा
   c. कुंडलवन d. सारनाथ

9. **महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम क्या था?**
   a. वर्धमान b. सिद्धार्थ
   c. देवदत्त d. राहुल

10. **वीरशैव (लिंगायत) आंदोलन के जनक कौन है?**
    a. कबीर b. गुरु नानक
    c. वासबन्ना d. इनमें से कोई नहीं

11. **महावीर स्वामी के बचपन का नाम क्या था?**
    a. कबीर b. वर्धमान
    c. सिद्धार्थ d. देवदत्त

12. **महावीर स्वामी ने पार्श्वनाथ के सिद्धांतों में कौन सा नया सिद्धांत जोड़ा?**
    a. अहिंसा b. सत्य
    c. अपरिग्रह d. ब्रह्मचर्य

13. **प्रथम बौद्ध संगीति किस शासक के काल में हुई थी?**
    a. अजातशत्रु b. कालाशोक
    c. अशोक d. कनिष्क

14. **निम्न में से गौतम बुद्ध के शिष्य कौन थे?**
    a. आनंद एवं उपाली
    b. कश्यप
    c. सरीयपुत्र एवं गोधरालायन
    d. इनमें से सभी

15. **पुराणों की संख्या कितनी है?**
    a. 16 b. 18
    c. 19 d. 12

16. **हीनयानी पुस्तकें किस भाषा में लिखी गई है?**
    a. संस्कृत b. पाली
    c. प्राकृत d. बौद्ध

17. **गौतम बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति किस नदी के किनारे हुई थी?**
    a. गंगा b. कावेरी
    c. निरंजना d. यमुना

18. **तृतीय बौद्ध संगीति का आयोजन कहां हुआ था?**
    a. राजगृह b. पाटलिपुत्र
    c. कुंडलवन d. वैशाली

19. **त्रिपिटक साहित्य किस धर्म से संबंधित है?**
    a. जैन धर्म b. बौद्ध धर्म
    c. शैव धर्म d. वैष्णव धर्म

20. **महावीर स्वामी की मृत्यु कहां हुई थी?**
    a. वैशाली b. लुंबिनी
    c. पावापुरी d. कुशीनारा

21. **किसके शासनकाल में बौद्ध धर्म का विभाजन हीनयान और महायान संप्रदायों में हुआ?**
    a. अशोक b. कनिष्क
    c. अजातशत्रु d. कालाशोक

बहुविकल्पीय प्रश्नों का उत्तर

1.b 2.a 3.d 4.b 5.c 6.d 7.c 8.d. 9.b 10.c 11.b 12.d 13.a 14.d 15.b 16.b 17.c 18.b 19.b 20.c 21.b

Jharkhandlab.com

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जैन शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर : जैन शब्द (जिन) शब्द से निकला है जिसका अर्थ है विजेता।

2. स्तूप क्या है?

उत्तर : स्तूप का संस्कृत अर्थ टीला, ढेर या थूहा होता है महात्मा बुद्ध के परिनिर्वाण के बाद उनकी अस्थियों को आठ भागों में बांटा गया तथा उन पर सामाधियों का निर्माण किया गया, इन्हीं को स्तूप कहते हैं।

3. जैन धर्म के त्रिरत्न क्या हैं?

उत्तर : जैन धर्म के त्रिरत्न सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन तथा सम्यक आचरण हैं।

4. महावीर स्वामी का जन्म कब और कहां हुआ था?

उत्तर : महावीर स्वामी का जन्म 540 ई. पू. में वैशाली के कुंडग्राम में हुआ था।

5. धर्मचक्र प्रवर्तन से आप क्या समझते हैं

उत्तर : गौतम बुद्ध ने ज्ञान की प्राप्ति के बाद अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया, यह प्रथम उपदेश की घटना ही धर्मचक्र प्रवर्तन कहलाता है।

6. सांची के स्तूप की खोज किसने की थी?

उत्तर : सांची के स्तूप की खोज 1818 ई. में जनरल टेलर ने की थी।

7. महात्मा बुद्ध का जन्म कब और कहां हुआ था?

उत्तर : महात्मा बुध का जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी में हुआ था।

8. अमरावती का स्तूप कहां स्थित था?

उत्तर : अमरावती का स्तूप आंध्र प्रदेश में स्थित था।

9. बौद्ध संघ में प्रवेश करने वाली प्रथम महिला कौन थी?

उत्तर : बौद्ध संघ में प्रवेश करने वाली प्रथम महिला महात्मा बुद्ध की मौसी प्रजापति गौतमी थी।

10. जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर कौन थे?

उत्तर : जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे।

11. जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर कौन थे?

उत्तर : जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।

12. चतुर्थ बौद्ध संगीति के अध्यक्ष कौन थे?

उत्तर : चतुर्थ बौद्ध संगीति के अध्यक्ष वसुमित्र एवं उपाध्यक्ष अश्वघोष थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. श्वेतांबर और दिगंबर में क्या अंतर है?

उत्तर : श्वेतांबर और दिगंबर में अंतर

महावीर स्वामी की 468 ई. पू. मृत्यु के बाद मगध में भीषण अकाल पड़ा, भद्रबाहु के नेतृत्व में कुछ जैन दक्षिण भारत चले गए और स्थूलभद्र के नेतृत्व में कुछ लोग मगध में ही रह गए।

स्थूलभद्र के अनुयायियों ने श्वेत वस्त्र धारण करना आरंभ कर दिया ये पार्श्वनाथ के अनुयाई थे यही श्वेतांबर कहलाए।

भद्रबाहु के अनुयाई महावीर स्वामी के अनुयाई बने रहे, वे नग्न रहते थे, जैन धर्म के सिद्धांतों का सख्ती से पालन करते थे ,ये लोग दिगंबर कहलाए।

2. जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों का वर्णन करें?

उत्तर : जैन धर्म के प्रमुख पांच सिद्धांत निम्नलिखित हैं

1. सत्य- हमेशा सत्य बोलना चाहिए
2. अहिंसा- कभी हिंसा नहीं करना चाहिए
3. आस्तेय- कभी चोरी नहीं करना चाहिए
4. अपरिग्रह - संपत्ति का संग्रह ना करना
5. ब्रह्मचर्य -इंद्रियों को वश में रखना।

3. सांची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों ने क्या भूमिका निभाई?

उत्तर : सांची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों ने निम्नलिखित भूमिका निभाई

1. पहले फ्रांसीसीयों ने और बाद में अंग्रेजों ने सांची के पूर्वी तोरण द्वार को अपने-अपने देश में ले जाने की कोशिश की परंतु भोपाल की बेगमों ने उन्हें स्तूप के प्लास्टर प्रतिकृतियों से संतुष्ट कर दिया।
2. शाहजहां बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तान जहां बेगम ने इस प्राचीन स्थल के रख रखाव के लिए धन अनुदान दिया।
3. शाहजहां बेगम ने वहां एक संग्रहालय तथा अतिथिशाला बनाने के लिए अनुदान दिया।
4. बेगमों द्वारा समय पर लिए गए विवेकपूर्ण निर्णय ने सांची के स्तूप को उजड़ने से बचा लिया यदि ऐसा न होता तो इसकी दशा भी अमरावती स्तूप जैसी होती।

4. त्रिपिटक क्या है वर्णन करें?

उत्तर : त्रिपिटक का शाब्दिक अर्थ है तीन टोकरियां। बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने उनकी शिक्षाओं का संकलन तीन पिटकों सुत्तपिटक, विनय पिटक एवं अभिधम्म पिटक में किया, इन्हें ही संयुक्त रूप से त्रिपिटक कहा जाता है।

सुत्तपिटक में बौद्ध धर्म के सिद्धांत दिए गए हैं। विनय पिटक में बौद्ध धर्म के आचार विचार एवं नियम मिलते हैं। अभिधम्म पिटक में बुद्ध के दर्शन मिलते हैं।

5. जैन धर्म और बौद्ध धर्म में क्या समानताएं हैं?

उत्तर : जैन धर्म और बौद्ध धर्म में निम्नलिखित समानताएं हैं

1. दोनों ही वैदिक यज्ञ कर्मकांड का विरोध करते थे
2. दोनों ही अपने उपदेश जनभाषा प्राकृत एवं पाली में देते थे।
3. दोनों धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी एवं गौतम बुद्ध क्षत्रिय थे।

Jharkhandjac.com

4. जाति प्रथा का दोनों धर्मों में कोई स्थान नहीं था।
5. दोनों धर्मो ने संसार को दुःखमय कहा है।

6. चैत्य और विहार किया है?

उत्तर : चैत्य- बौद्ध भिक्छुओं के शवदाह के बाद शरीर के कुछ अवशेष टीलों पर सुरक्षित रख दिए जाते थे अंतिम संस्कार से जुड़े ये टीले चैत्य कहलाए। चैत्य अनेकानेक पायों पर खड़ा एक बड़ा होल जैसा होता था यह बौद्ध मंदिर भी कहलाता था।

विहार-विहार भिक्छू निवास होते थे। विहार में एक केंद्रीय शाला होती थी, जिसमें सामने के बरामदे की ओर एक द्वार रहता था। खुदाई में प्रायः विहार चैत्य के पास मिले हैं। विहारों का उपयोग वर्षा काल में भिक्छुओं के निवास हेतु होता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. महात्मा बुद्ध के जीवन और उपदेशों का वर्णन कीजिए?

उत्तर : महात्मा बुद्ध की जीवनी -

महात्मा बुद्ध का जन्म 563 ई. पू. में कपिलवस्तु के निकट लुंबिनी ग्राम में हुआ था। इनके पिता शुद्धोधन शाक्य कुल के क्षत्रिय वंश के राजा थे जिनकी राजधानी कपिलवस्तु थी बुद्ध के जन्म के सातवें दिन ही इनकी माता महामाया का देहांत हो गया तथा इनकी मौसी महा प्रजापति गौतमी ने इनका लालन-पालन किया। गौतम बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। गौतम बुद्ध बचपन से ही चिंतनशील थे, उनकी इन गतिविधियों को देखते हुए 16 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध का विवाह राजकुमारी यशोधरा से हो गई। उनसे एक पुत्र राहुल भी हुआ। गौतम बुद्ध की विचारशील प्रवृत्ति को विलासिता से परिपूर्ण वैवाहिक जीवन भी बदल ना सका। गौतम बुद्ध के जीवन में चार दृश्यों का गहरा प्रभाव पड़ा

1. एक वृद्ध व्यक्ति
2. एक रोग ग्रस्त व्यक्ति
3. एक मृत व्यक्ति
4. एक सन्यासी

जहां प्रथम तीन दृश्यों को देखकर दुःखमय जीवन के प्रति गौतम बुद्ध के मन में गहरा आघात पहुंचा वहीं चौथे दृश्य ने उन्हें दुख निरोध का मार्ग दिखाया।

29 वर्ष की आयु में गौतम बुद्ध ने गृह त्याग दिया, गृह त्याग के बाद ज्ञान की खोज में गौतम बुद्ध ने अलार कलाम एवं रूद्रक रामपुत्र जैसे आचार्य से शिक्षा प्राप्त की। कठोर तपस्या के बाद गौतम बुद्ध को बोधगया में निरंजना नदी के किनारे एक पीपल वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई। ज्ञान प्राप्ति के बाद गौतम बुद्ध ने अपना पहला उपदेश सारनाथ में दिया। 80 वर्ष की आयु में 483 ई. पू. गौतम बुद्ध की मृत्यु कुशीनगर में हुई।

महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं

बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य

1. दुःख- गौतम बुद्ध के अनुसार समस्त संसार दुःख से भरा है यहां जन्म, मरण, वृद्धावस्था अप्रिय का मिलन, प्रिय का वियोग एवं इच्छित वस्तु का प्राप्त ना होना आदि सभी दुःख है।
2. दुःख समुदाय- समुदाय का अर्थ है कारण। गौतम बुद्ध के अनुसार संसार में दुःखों का कोई ना कोई कारण अवश्य है, उन्होंने समस्त दुःखों का कारण इच्छा बतलाया है।
3. दुःख निरोध- निरोध का अर्थ है दूर करना। गौतम बुद्ध ने दुःख निरोध या दुःख निवारण के लिए इच्छा का उन्मूलन आवश्यक बताया है।
4. दुःख निरोध मार्ग- गौतम बुद्ध के अनुसार संसार में प्रिय लगने वाली वस्तु का त्याग ही दुःख निरोध मार्ग है।

दुःख का विनाश करने के लिए गौतम बुद्ध ने जिस सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसे अष्टांगिक मार्ग कहा जाता है।

अष्टांगिक मार्ग गौतम बुद्ध द्वारा प्रतिपादित दुःख निरोध हेतु आठ मार्ग निम्नलिखित हैं

1. सम्यक दृष्टि- चार आर्य सत्य की सही परख
2. सम्यक वाणी- धर्म सम्मत एवं मृदु वाणी का प्रयोग
3. सम्यक संकल्प- भौतिक वस्तु एवं दुर्भावना का त्याग
4. सम्यक कर्म -अच्छा काम करना
5. सम्यक अजीव- सदाचारी जीवन जीते हुए ईमानदारी से जीविका कमाना
6. सम्यक व्यायाम- शुद्ध विचार ग्रहण करना, एवं अशुद्ध विचारों को त्यागते रहना।
7. सम्यक स्मृति- अपने कर्मों के प्रति विवेक तथा सावधानी को सदैव स्मरण रखना।
8. सम्यक समाधि- लोभ, द्वेष, आलस, बीमारी एवं अनिश्चय की स्थिति से दूर रहने का उपाय करना ही सम्यक समाधि है।

2. स्तूप क्यों और कैसे बनाए जाते थे? वर्णन कीजिए,?

उत्तर : स्तूप का संस्कृत अर्थ टीला, ढेर या थूहा होता है। स्तूप का संबंध मृतक के दाह संस्कार से था, मृतक के दाह संस्कार के बाद बची हुई अस्थियों को किसी पात्र में रखकर मिट्टी से ढंक देने की प्रथा से स्तूप का जन्म हुआ। क्योंकि इस स्तूप में पवित्र अवशेष रखे होते थे अतः समूचे स्तूप को बौद्ध धर्म के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। पहले मात्र भगवान बुद्ध के अवशेषों पर स्तूप बने बाद में बुद्ध के शिष्यों के अवशेषों पर भी स्तूप निर्मित किए गए।

स्तुपों की संरचना स्तूप का प्रारंभिक स्वरूप अर्ध गोलाकार मिलता है उसमें मेधी के ऊपर उल्टे कटोरे की आकृति का थूहा पाया जाता है जिसे अंड कहते हैं, इस अंड की ऊपरी चोटी सिरे पर चपटी होती थी जिसके ऊपर धातु पात्र रखा जाता था इसे हर्मिका कहते हैं। यह स्तूप का महत्वपूर्ण भाग माना जाता था। हर्मिका का अर्थ देवताओं का निवास स्थान होता है।

स्तूप को चारों ओर से एक दीवार द्वारा घेर दिया जाता है जिसे वेदिका कहते हैं। स्तूप तथा वेदिका के बीच परिक्रमा लगाने के लिए बना स्थल प्रदक्षिणा पथ कहलाता है, कालांतर में वेदिका के चारों ओर चार दिशाओं में प्रवेश द्वार बनाए गए। प्रवेश द्वार पर मेहराबदार तोरण बनाए गए। इस प्रकार स्तूप की संरचना की गई।

3. हीनयान एवं महायान संप्रदाय में क्या अंतर है?

उत्तर : महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद बौद्ध भिक्षुओं में पारस्परिक कलह और मतभेद उत्पन्न हो गए इस कुव्यवस्था को दूर

jharkhandlab.com

करने के लिए बौद्ध आचार्यों ने समय-समय पर अनेक सभाओं का आयोजन किया।

बौद्ध धर्म की चौथी और अंतिम सभा सम्राट कनिष्क के काल में कश्मीर के कुंडलवन में बुलाई गई। किंतु यह सभा बौद्ध संघ के मतभेदों को दूर करने में सफल नहीं हो सके। इस सभा में मतभेदों के कारण बौद्ध धर्म हीनयान और महायान नामक संप्रदाय में विभक्त हो गया।

हीनयान एवं महायान संप्रदाय में अंतर

1. हीनयान मत बौद्ध धर्म का प्राचीन तथा अपरिवर्तित रूप था, महायान बौद्ध धर्म का नवीन एवं संशोधित रूप था।
2. हीनयान संप्रदाय के लोग बुद्ध की मूल शिक्षाओं में आस्था रखते थे अष्टांगिक मार्ग में इनका विश्वास था, महायान संप्रदाय के लोग बुद्ध की शिक्षा में कुछ परिवर्तन के द्वारा अपनाएं।
3. हीनयान निर्वाण प्राप्ति के लिए व्यक्तिगत प्रयास को विशेष महत्व दिया करते थे, महायान में निर्वाण प्राप्ति के लिए मुक्तिदाता का होना आवश्यक था।
4. हीनयान संप्रदाय महात्मा बुद्ध को एक पवित्र आत्मा समझते थे, महायान संप्रदाय महात्मा बुद्ध को ईश्वर का रूप मानते थे।
5. हीनयान संप्रदाय मूर्ति पूजा के विरोधी थे किंतु महायान संप्रदाय के लोग बुद्ध तथा बोधिसत्व की मूर्तियों की पूजा करते थे।
6. हीनयान संप्रदाय का सर्वोच्च लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति था किंतु महायान संप्रदाय का सर्वोच्च लक्ष्य स्वर्ग प्राप्ति था।
7. हीनयान धर्म का संरक्षक सम्राट अशोक था एवं इनकी पुस्तकें पाली भाषा में लिखी गई थी।महायान संप्रदाय का संरक्षक सम्राट कनिष्क था एवं इनकी पुस्तकें संस्कृत भाषा में लिखी गई थी।

Jharkhandlab.com

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

समाज के बारे में उनकी समझ (लगभग दसवीं से सत्रहवीं सदी तक)

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. **अलबरूनी का जन्म कहां हुआ था ?**
   (A) ख्वारिज्म (B) मोरक्को
   (C) तुर्की (D) सीरिया

2. **अलबरूनी ने अपनी पुस्तक किताब उल हिंद की रचना किस भाषा में की थी?**
   (A) यूनानी भाषा में (B) अरबी भाषा में
   (C) हिंदी भाषा में (D) फारसी भाषा में

3. **अलबरूनी किस भाषा के जानकार नहीं थे?**
   (A) सीरियाई भाषा (B) फारसी भाषा
   (C) संस्कृत भाषा (D) यूनानी भाषा

4. **इब्नबतूता ने किस पुस्तक की रचना की थी?**
   (A) किताब उल हिंद (B) रिहला
   (C) आईने अकबरी (D) अकबरनामा

5. **इब्नबतूता सिंध कब पहुंचा?**
   (A) 1342 (B) 1333
   (C) 1345 (D) 1347

6. **इब्नबतूता ने भारत की यात्रा किस शताब्दी में की थी ?**
   (A) 11 वीं शताब्दी (B) 12 वीं शताब्दी
   (C) 13 वीं शताब्दी (D) 14 वीं शताब्दी

7. **बर्नियर ने शिविर नगर किसे कहा है?**
   (A) राजधानी को (B) व्यापारिक केंद्र को
   (C) मुगलकालीन नगरों को (D) शिल्प केंद्र को

8. **फ्रांसिस बर्नियर कहां के निवासी थे?**
   (A) फ्रांस (B) इंग्लैंड
   (C) हॉलैंड (D) इटली

9. **किसने लाहौर में 12 वर्षीय बालिका को सती होते देखा था ?**
   (A) इब्नबतूता (B) अलबरूनी
   (C) बर्नियर (D) टैवनियर

10. **इब्नबतूता के अनुसार ताराबबाद किस प्रकार का बाजार था?**
    (A) जौहरियों का
    (B) घोड़ा बेचने वालों का
    (C) शिल्प केंद्र को
    (D) गाने वाले व्यक्तियों का

11. **किस यात्री को मध्ययुगीन यात्रियों का सरताज कहा जाता है?**
    (A) टैवनियर (B) इब्नबतूता
    (C) मार्को पोलो (D) अलबरूनी

12. **किस विदेशी यात्री ने भारतीय अध्ययन संबंधी बाधाओं का वर्णन किया है ?**
    (A) अलबरूनी (B) इब्नबतूता
    (C) बर्नियर (D) अबुल फजल

13. **किस विदेशी यात्री ने भारत के डाक प्रणाली और संचार व्यवस्था का वर्णन किया है?**
    (A) अलबरूनी (B) इब्नबतूता
    (C) बर्नियर (D) टैवनियर

14. **इब्नबतूता ने राजदूत के रूप में किस देश की यात्रा की?**
    (A) भारत की (B) चीन की
    (C) जापान की (D) पारस की

15. **उलूक डाक व्यवस्था में किसका प्रयोग किया जाता था?**
    (A) हाथी का (B) ऊंट का
    (C) नाव का (D) घोड़ा का

Ans - 1(a), 2(b), 3(d), 4(b), 5(b), 6(d), 7(a), 8(a), 9(c), 10(d), 11(c), 12(a), 13(b), 14(b), 15(d)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **अलबरूनी ने किस पुस्तक की रचना की थी?**
   उत्तर- अलबरूनी ने किताब उल हिंद नामक पुस्तक की रचना की थी।

2. **इब्नबतूता कहां के निवासी थे?**
   उत्तर- इब्नबतूता मोरक्को के निवासी थे।

3. **मोहम्मद बिन तुगलक ने इब्नबतूता को कहां का काजी नियुक्त किया था?**
   उत्तर- मोहम्मद बिन तुगलक ने इब्नबतूता को दिल्ली का काजी नियुक्त किया था।

4. **इब्नबतूता किसके शासनकाल में भारत आया था?**
   उत्तर- इब्नबतूता मोहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में भारत आया था।

5. **अलबरूनी किसके साथ भारत आया था?**
   उत्तर- अलबरूनी महमूद गजनवी के साथ भारत आया था।

6. **जॉन बैप्टिस्ट टैवर्नियर पेशे से क्या था?**
   उत्तर- जॉन बैप्टिस्ट टैवर्नियर पेशे से एक जौहरी था।

7. **जॉन बैप्टिस्ट टैवर्नियर ने कितनी बार भारत की यात्रा की थी?**
   उत्तर- जॉन बैप्टिस्ट टैवर्नियर ने 6 बार भारत की यात्रा की थी।

Jharkhandlab.com

8. ट्रैवल्स इन द मुगल एंपायर पुस्तक की रचना किसने की?

उत्तर- ट्रैवल्स इन द मुगल एंपायर पुस्तक की रचना फ्रांसिस बर्नियर ने की है।

9. इब्नबतूता के अनुसार भारत में कितने प्रकार की फसलों की खेती की जाती थी?

उत्तर- इब्नबतूता के अनुसार भारत में दो प्रकार की फसलों की खेती की जाती थी। रबी फसल और खरीफ फसल।

10. उलूक किसे कहा जाता था?

उत्तर- अश्व डाक व्यवस्था को उलूक कहा जाता था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. किताब उल हिंद पर एक लेख लिखे ?

उत्तर- **"किताब-उल-हिन्द"** पुस्तक की रचना अलबरूनी ने सुल्तान महमूद गजनवी के शासकाल की थी। अलबरूनी ने इस पुस्तक की रचना अरबी भाषा में की थी। यह पुस्तक 80 अध्यायो और अनेक उप - अध्यायों में विभक्त है। इस पुस्तक से महमूद गजनवी के आक्रमण के समय के भारतीय समाज एवं संस्कृति की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। अलबरूनी अपनी पुस्तक में भारतीय समाज रहन - सहन, खान - पान, वेश-भूषा सामाजिक प्रथाओं, त्योहार धर्म, दर्शन कानून, अपराध, दंड, ज्ञान- विज्ञान, खगोलशास्त्र, गणित, चिकित्सा, रसायन दर्शन आदि का वर्णन करते हैं। वे भारत में प्रचलित विभिन्न संवतो, यहाँ की भौगोलिक स्थिति, महत्वपूर्ण नगरों और उनकी दूरी का भी उल्लेख करते है। चूँकि यह पुस्तक महमूद गजनवी के शासनकाल में लिखी गई, परंतु इसमें महमूद गजनवी के क्रियाकलापो का यदा-कदा ही उल्लेख मिलता है इस पुस्तक से तत्कालीन राजनीतिक इतिहास के अध्ययन में बहुत अधिक सहायता नहीं मिलती है, परंतु भारतीय समाज और संस्कृति के अध्ययन के लिए किताब - उल- हिन्द अत्यंत महत्वपूर्ण पुस्तक है।

2. इब्नबतूता द्वारा दास प्रथा के संबंध में दिए गए साक्ष्यो की विवेचन कीजिए।

उत्तर- इब्नबतूता के विवरण से पता चलता है कि चौदहवीं शताब्दी में भारत में दास प्रथा का प्रचलन व्यापक रूप से था। दासों की खुलेआम बिक्री होती थी। जगह - जगह पर दासो की बिक्री के लिए बाजार लगते थे। राजघराने और कुलीन परिवारों में दास बडी संख्या में रखे जाते थे। सामान्य लोग भी अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार एक-दो दास रख लेते थे। स्त्री - दास अर्थात् दासियाँ भी रखी जाती थी। दास-दासियो को हमलों और अभियानों के दौरान बलपूर्वक प्राप्त किया जाता था। दासों को भेट के रूप में देने की प्रथा का प्रचलन था। स्वयं इब्नबतूता ने सिंध पहुचने पर दिल्ली सुल्तान मुहम्मद-बिन- तुगलक को भेंट करने के लिए घोड़े, ऊँट और दास खरीदे थे। सुल्तान किसी व्यक्ति विशेष से प्रसन्न होन पर उसे इनाम के रूप में दास प्रदान करते थे। दास-दासी सामान्यता स्वामी के नौकर के रूप में कार्य करते थे एवं उनका मूल्य उनके काम और योग्यता के अनुसार निर्धारित किया जाता था। दासों से आर्थिक कार्यो में भी सहायता ली जाती थी। उनसे गुप्तचरी का काम भी लिया जाता था और विशेष अवसरो पर दास - दासी मुक्त भी किए जाते थे।

3. सती प्रथा के कौन से तत्वों ने बर्नियर का ध्यान अपनी ओर खींचा?

उत्तर- बर्नियर सहित प्रायः सभी यात्रियों ने भारत में महिलाओं की स्थिति पर विशेष ध्यान दिया। बर्नियर भारत में प्रचलित सती प्रथा से काफी आकर्षित हुए और उसने अपने यात्रा वृतान्त में इसका वर्णन किया। सती प्रथा भारतीय समाज की एक ऐसी बुराई थी जो अन्य देशों में प्रचलित नहीं थी। वे बताते है कि भारत में, कुछ महिलाएँ प्रसन्नता से सती होती थी एवं कुछ महिलाओं को सती होने के लिए बाध्य किया जाता था। लाहौर में एक बालिका के सती होने की घटना का अत्यधिक मार्मिक विवरण देते हुए उसने लिखा है, मैंने लाहौर में एक बहुत सुन्दर अल्पवयस्क विधवा को देखा जिसकी आयु बारह वर्ष से अधिक नहीं थी, को सती होते हुए देखा। उसे भयानक नर्क की ओर जाते हुए वह छोटी सी असहाय बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी, उसके मस्तिष्क की व्यथा का वर्णन नहीं किया जा सकता। वह काँपते हुए बुरी तरह रो रही थी लेकिन तीन या चार ब्राह्मण, एक बूढ़ी औरत जिसने उसे अपनी आस्तीन के नीचे दबाया हुआ था की सहायता से उसे अनिच्छुक पीड़िता को जबरन घातक स्थल की ओर ले गये, उसे लकड़ियों पर बैठाया उसके हाथ और पैर बांध दिये ताकि वह भाग न जाए और इस स्थिति में उस मासूम बच्ची को जिंदा जला दिया गया। मैं अपनी भावनाओं को दबाने में असमर्थ था कि सती प्रथा के अंतर्गत अनिच्छा, व्यथा, व्यवस्था एवं सहायता जैसे तत्व ने बर्नियर का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया था।

4. रिहला पर एक टिप्पणी लिखें।

उत्तर- भारत आने वाले अरब यात्रियों में इब्नबतूता का स्थान प्रमुख है उसने रिहला नामक पुस्तक की रचना की जिसमें 14वीं शताब्दी के भारत के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विषय में जानकारी मिलती है। इब्नबतूता का रिहला तुगलककालीन विशेषकर मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल उस समय के प्रमुख नगरो, इमारतों, रीति-रिवाजों, डाक- व्यवस्था, प्रशासन व्यवस्था, सामाजिक स्थिति तथा संचार व्यवस्था के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है। अपनी पुस्तक में इब्नबतूता ने सती प्रथा और दास प्रथा का विशेष रूप से उल्लेख किया है। उनके विवरण से पता चलता है कि 14वीं शताब्दी में भारत में दास प्रथा का प्रचलन व्यापक रूप से था। उसने अपने विवरणों में भारतीय फसलों के बारे में, फलो और अनाजो के बारे में भी जानकारी दी है। उसने अपनी भारत यात्रा के क्रम में जो कुछ भी यहाँ देखा जैसे भारत के शहरों उनकी भव्यता तथा यहां की आर्थिक समृद्धि एवं यहां की जीवन शैली आदि का वर्णन उसने अपने यात्रा वृतांत में किया। वह भारतीय डाक व्यवस्था से अत्यंत प्रभावित हुआ और इसलिए उसने अपने विवरण में तत्कालीन संचार प्रणाली, डाक व्यवस्था का विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

5. अलबरूनी पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखे।

उत्तर- अलबरूनी का पूरा नाम अबु रेहान मुहम्मद इब्न अहमद था। उनका जन्म मध्य एशिया स्थित उज्बेकिस्तान के ख्वारिज्म में 973 ई. में हुआ था। वह मूल रूप से ईरानी था और उनके आरंभिक जीवन और कार्यकलापों के विषय में कोई स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है। अल-बरुनी के जीवन और कार्यकलापों पर राजनीतिक परिवेश का काफी गहरा प्रभाव पड़ा। संभवतः आरंभ में वह ख्वारिज्म के मैमुनिद वंश के शासको के संरक्षण में रहा और यहीं से उन्होंने अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया क्योंकि ख्वारिज्म उस समय

शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र था। वह संस्कृत, हिब्रू, सीरियाई, अरबी, फारसी भाषा का अच्छा ज्ञाता था। उनका अधिकांश समय गजनी में ही व्यतीत हुआ। और गजनी में रहते हुए उसने भारतीय भाषा संस्कृत, ज्ञान-विज्ञान, खगोलशास्त्र चिकित्सा, धर्म तथा दर्शन का अरबी अनुवाद पढा और यही रहते हुए अलबरूनी की भारत के प्रति रुचि का विकास हुआ और जब महमूद गजनवी भारत पर आक्रमण करते हैं तब वह अपने साथ अल बरुनी को भारत लाते हैं और भारत में रहते हुए उन्होंने संस्कृत भाषा सीखी और दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया। और उसी के आधार पर उसने "किताब-उल-हिंद" या तहकीके- हिंद" नामक पुस्तक की रचना अरबी भाषा में की।भारत में कुछ सालों तक रहने के बाद वह पुनः गजनी वापस लौट जाते हैं और अपना शेष जीवन गजनी में व्यतीत करते हुए 75 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो जाती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था पर अलबरूनी के विवरण का परीक्षण कीजिए?

उत्तर- अरबी लेखक अलबरूनी ने भारत के विषय में अपनी पुस्तक 'किताब-उल-हिन्द' या 'तहकीक-ए- हिंद' में भारत की सामाजिक स्थिति, रीति-रिवाजों, भारतीय खान- पान, वेशभूषा उत्सव, त्योहार आदि के विषय में विस्तार पूर्वक वर्णन किया है। अपनी पुस्तक 'किताब-उल-हिंद' के नौवें अध्याय में अलबरूनी ने भारतीय जाति व्यवस्था पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

अलबरूनी के अनुसार भारतीय समाज चार वर्णो में बंटा हुआ था। 1. ब्राह्मण 2.क्षत्रिय 3.वैश्य 4. शूद्र ।

इन चारों में ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ थे। और इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के सिर से हुई थी। क्षत्रिय की उत्पत्ति ब्रह्मा के कंधे और हाथ से जबकि वैश्यों की उत्पत्ति जांघों से हुई थी। इसलिए समाज में ब्राह्मणों के बाद क्षत्रियों का और उसके बाद वैश्यो का स्थान था। समाज के सबसे निचले स्थान पर शूद्र थे क्योंकि इनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के पैर से हुई थी। प्रत्येक वर्ण, जाति और उप-जाति में बटा हुआ था ।

वर्ण और जाति-व्यवस्था के बाहर भी अनेक सामाजिक समूह थे जिन्हें अल- बरुनी 'अंत्यज' कहते हैं और इनकी स्थिति के बारे में बताते हुए अलबरूनी कहते हैं कि इनकी स्थिति शूद्रों से भी नीची थी। इनकी आठ जातियाँ थी धुनिये, मोची, मदारी, टोकरी और ढाल बनाने वाले , नाविक, मछली पकड़ने वाले, आखेट करने वाले एवं जुलाहे । ये नगरों और गांव के बाहर रहते थे। अंत्यजो से भी खराब स्थिति "गंदा काम" करने वाले लोगों का था। इसके अंतर्गत हादी, डोम, चांडाल और वधतू थे । ये चारों एक अलग सामाजिक वर्ग के थे । इनकी स्थिति अछूतों के समान थी। इन्हें सामान्यतः शुद्र पिता और ब्राह्मण माता की अवैध संतान माना जाता था। और इनका अन्य वर्गों तथा जाति के लोगों से सामाजिक संपर्क नहीं होता था।

2. इब्नबतूता द्वारा वर्णित डाक व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर- इब्नबतूता भारत की संचार व्यवस्था से अत्यधिक प्रभावित था और उसने इसका उल्लेख संचार की एक अनोखी प्रणाली के रूप में किया है उसने अपने यात्रा वृतांत में बताया की भारत में दो प्रकार की डाक व्यवस्था थी।

क. अश्व डाक व्यवस्था
ख. पैदल डाक व्यवस्था

क. **अश्व डाक व्यवस्था** - अश्व डाक व्यवस्था को उलूक कहा जाता था। जो हर चार मील की दूरी पर स्थापित राजकीय घोडो द्वारा संचालित होता था ।

ख. **पैदल डाक व्यवस्था** - पैदल डाक व्यवस्था में प्रति मील तीन पड़ाव होते थे जिसे दावा कहा जाता था। यह एक मील का तीन तिहाई होता था। हर तीन मील पर घनी आबादी वाला एक गांव होता था जिनमें लोग कार्य प्रारंभ करने के लिए तैयार बैठते थे इनमें से प्रत्येक के पास दो हाथ लम्बी एक छड़ी होती थी जब संदेशवाहक शहर से यात्रा प्रारंभ करता तो एक हाथ में पत्र और दूसरे हाथ में घंटियां वाली छड़ी लिए वह अपनी क्षमतानुसार तेज से भागता था और मंडप में बैठे लोग घंटियों की आवाज सुन कर तैयार हो जाते थे और जैसे ही संदेश वाहक उनके पास पहुँचता उनमें से एक उससे पत्र ले लेता और वह छड़ी हिलाते हुए पूरी ताकत से दौड़ता था जब तक कि वह अगले दावा तक पहुंच नहीं जाता और जब तक पत्र अपने गंतव्य स्थान तक नहीं पहुंच जाता तब तक यह प्रक्रिया चलती रहती थी।

निस्संदेह संचार की इस अनूठी प्रणाली ने व्यापार, वाणिज्य, संबंधी गतिविधियों को काफी प्रोत्साहित किया। इस व्यवस्था की कुशलता का अनुमान हम इससे लगा सकते हैं इसके द्वारा गुप्तचरो की खबरें सिंध से दिल्ली तक केवल 5 दिनों में पहुंच जाती थी। जबकि सिंध से दिल्ली की यात्रा में लगभग 50 दिनों का समय लगता था। इस प्रकार हम देखते हैं कि तत्कालीन डाक एवं संचार व्यवस्था से शासक वर्ग से लेकर के सामान्य जनता को काफी लाभ पहुंचा।

3. अलबरूनी को भारत का वृतांत लिखने में किन किन बाधाओं का सामना करना पड़ा था?

उत्तर- अपनी पुस्तक के प्रथम अध्याय में अलबरूनी उन बाधाओं का उल्लेख करते हैं जो उसे भारत का यात्रा वृतांत लिखने में करना पड़ा था। जो इस प्रकार है-

(1) **भाषा संबंधी अवरोध** - अलबरूनी के अनुसार संस्कृत, अरबी व फारसी इतनी अलग थी कि विचारों और सिद्धांतों का एक भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद करना एक कठिन कार्य था।

(2) **स्थानीय लोगों में अलगाव की भावना** - दूसरा अवरोध स्थानीय लोगों के स्वाभिमान एवं अलगाव की भावना विद्यमान थी वे अपरिचितों या यात्रियों से बात करने या अपने विचारों को प्रकट करना नहीं चाहते थे ।

(3) **धार्मिक दशा**- तीसरा अवरोध धार्मिक दशा एवं प्रथाओं की भिन्नता से संबंधित थी। विदेशियों को हिंदू "म्लेच्छ" कहते थे। उनके साथ किसी भी प्रकार का संबंध रखने को निषेध मानते है अन्य धर्मावलंबियों के लिए उनके द्वार सदा के लिए बंद रहते थे क्योंकि उनका मानना था कि ऐसा करने पर वह धर्म भ्रष्ट हो जाएंगे।

(4) **रीति-रिवाजों एवं मान्यताओं में भिन्नता**- भारतीय अपने रीति-रिवाजों व मान्यताओं को श्रेष्ठ मानते थे। यहां के रीति-रिवाज एवं मान्यता इतनी कठोर थी कि अलबरूनी को अपनी यात्रा वृतांत लिखने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि भारत के लोग हमारे नाम से हमारे वस्त्रों से और हमारी रीतियो व व्यवहार से डरते थे और हमें शैतान की औलाद बता कर हमारे कार्य को सभी कामों के विरुद्ध बताते थे जिन्हें वे अच्छा और उचित मानते थे।

jharkhandlab.com

अध्याय - 6

भक्ति सूफी परम्पराएँ

धार्मिक विश्वासों में बदलाव और श्रद्धा ग्रंथ (आठवीं से अठारवीं सदी तक)

Jharkhandlab.com

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्रारंभिक भक्ति आंदोलन के उत्पत्ति कहां से हुई?

A. पूर्वी भारत B. पश्चिमी भारत
C. दक्षिणी भारत D. उत्तरी भारत कहां

2. उस भक्ति परंपरा को बताइए जिसने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन किया?

A. अलवर B लिंगायत
C. नयनार D. जंगम

3. पद्मावत किसकी रचना है?

A. कबीर
B. तुलसीदास
C. अमीर खुसरो
D. मलिक मोहम्मद जायसी

4. अमूर्त, निराकार ईश्वर की उपासना करने वाले भक्तों को कहते हैं?

A. सगुण B. निर्गुण
C. वैष्णव D. शैव

5. प्राचीनतम भक्ति आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था?

A. अलवर और लिंगायत B. अलवार और नयनार
C. नयनार और पुरवार D. नयनार और लिंगायत

6. गुरु नानक का जन्म कब हुआ?

A. 1469 ई. B. 1478 ई.
C. 1479 ई. D. 1468 ई.

7. विट्ठल को भगवान के किस अवतार के रूप में जाना जाता है?

A. ब्रह्मा B. विष्णु
C. शिव D. गणेश

8. अलवरो द्वारा रचित प्रमुख संकलन था?

A. नलयिरा- दिव्यप्रबंधम B. शिल्पादिकारम
C. नलयिरा-पुरबंधम D. अमुक्तमाल्यद

9. पीर का अर्थ है?

A. ईश्वर B. गुरु
C. उलेमा D. मौलवी

10. गैर- मुसलमानों को कौन सा धार्मिक कर देना पड़ता था?

A. जकात B. खराज
C. जजिया D. खुम्स

11. शेख मोइनुद्दीन चिश्ती का दरगाह कहां है ?

A. दिल्ली B. पटना
C. अजोधन D. अजमेर

12. शेख निजामुद्दीन औलिया का दरगाह कहां है?

A. दिल्ली B. पटना
C. अजोधन D. अजमेर

13. कबीर के दोहे कहां संकलित है?

A. गुरु ग्रंथ साहिब B. पद्मावत
C. बीजक D. सूरसागर

14. असम में भक्ति आंदोलन का प्रचार-प्रसार किसने किया?

A. कबीर B. नामदेव
C. नरसिंह मेहता D. शंकरदेव

15. मीराबाई का संबंध किस राज्य से था?

A. असम B. उत्तर प्रदेश
C. राजस्थान D. बिहार

उत्तर- 1-C, 2-B, 3-D, 4-B, 5-B, 6-A, 7-B, 8-A, 9-B, 10-C, 11-D, 12-A, 13-C, 14-D, 15-C

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सगुण भक्ति परंपरा क्या है ?

उत्तर- शिव, विष्णु तथा उनके अवतार एवं देवियों की आराधना जाती है एवं इनकी मूर्त रूप में पूजा की जाती है। सगुण भक्ति परंपरा कहलाता है।

2. निर्गुण भक्ति परंपरा क्या है?

उत्तर- निर्गुण भक्ति परंपरा में अमूर्त, निराकार ईश्वर की उपासना की जाती थी।

3. सर्वप्रथम भक्ति आंदोलन को शुरू करने वाले कौन थे?

उत्तर- सर्वप्रथम भक्ति आंदोलन को शुरू करने वाले अलवार और नयनार संत थे।

4. किस तमिल ग्रंथ को तमिल वेद कहा जाता है?

उत्तर- नलयिरादिव्य- प्रबंधम

5. दो भक्ति स्त्री संतों के नाम बताइए?

उत्तर- अंडाल और कराईकाल अम्मैयार

6. भक्ति के निर्गुण धारा के दो संतों के नाम बताएं?

उत्तर- कबीर और नानक

7. भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक कौन थे?

उत्तर- रामानुजाचार्य

8. चिश्ती संप्रदाय की भारत में स्थापना किसने की थी?

उत्तर- शेख मोइनुद्दीन चिश्ती

9. खानकाह क्या है?

उत्तर- सूफी संतों के निवास स्थल को खानकाह कहते हैं।

10. खालसा पंथ की नींव किसने डाली थी? सिखों के पाँच प्रतीक क्या है?

उत्तर- गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की नींव डाली थी। सिखों के 5 प्रतीक निम्न है- केश ,कृपाण, कच्छा, कंघा और लोहे का कड़ा।

लघु प्रश्नोत्तर

1. भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषताएं क्या है?

उत्तर- भक्ति आंदोलन गुरु की श्रेष्ठता और हिंदू मुस्लिम एकता पर विशेष बल दिया। भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक अनेक सामाजिक कुरीतियां मूर्ति पूजा एवं जाति भेद की भावनाओं का विरोध करते थे । ऐसी स्थिति में विचार को एवं संतों ने हिंदू धर्म की कुरीतियों को दूर करने के लिए एक अभियान प्रारंभ किया जिसे भक्ति आंदोलन कहते हैं। इन की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

1. **एक ईश्वर में आस्था**- एक ईश्वर है वह सर्वशक्तिमान है।
2. **बाह्य आडंबरओं का विरोध**- भक्ति आंदोलन के संतों ने कर्मकांड का खंडन किया। सच्ची भक्ति से मोक्ष ईश्वर की प्राप्ति होती है।
3. **सन्यास का विरोध**- भक्ति आंदोलन के अनुसार यदि सच्ची भक्ति ईश्वर में है तो गृहस्थ में ही मोक्ष मिल सकता है।
4. **वर्ण व्यवस्था का विरोध**- भक्ति आंदोलन के प्रवर्तको ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है ईश्वर के अनुसार सभी एक हैं।
5. **मानव सेवा पर बल**- भक्ति आंदोलन के समर्थकों ने यह माना कि मानव सेवा सर्वपरी है इससे मुक्ति मिल सकता है।
6. **हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रयास**- भक्ति आंदोलन के द्वारा संतो ने लोगों को यह समझाया कि राम- रहीम में कोई अंतर नहीं है।
7. **स्थानीय भाषाओं में उपदेश**- संतो ने अपना उपदेश स्थानीय भाषाओं में दिया। भक्तों ने इसे सरलता से ग्रहण किया।
8. **गुरु के महत्व में वृद्धि**- भक्ति आंदोलन के संतों ने गुरु एवं शिक्षक के महत्व पर बल दिया। गुरु ही ईश्वर के रहस्य को सुलझाने एवं मोक्ष प्राप्ति प्राप्ति में सहायक होता है। समर्पण की भावना से सत्य का साक्षात्कार एवं मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।
9. **समानता की भावना**- ईश्वर के समक्ष सब लोग सामान है। ईश्वर सत्य है। सभी जगह विद्यमान है। उसमें भेदभाव नहीं है। यही भक्ति मार्ग का सही रास्ता है।

2. चर्चा कीजिए कि अलवार, नयनार और वीरशैवो ने किस प्रकार जाति प्रथा की आलोचना की?

उत्तर- अलवार ,नयनार और वीरशैव दक्षिण भारत में उत्पन्न सम्प्रदाय थी। इनमें अलवार नयनार तमिलनाडु से संबंध रखते थे। जबकि वीरशैव कर्नाटक से संबंध रखते थे। इन्होंने जाति प्रथा के बंधनों का अपने-अपने ढंग से विरोध किया।

अलवार और नयनार संतो ने जाति प्रथा व ब्राह्मणों की प्रभुता के विरोध में आवाज उठाई। यह बात सत्य प्रतीत होती है क्योंकि भक्ति संत विभिन्न समुदायों से थे जैसे ब्राह्मण, शिल्पकार, किसान और कुछ तो उन जातियों से आए थे जिन्हे अस्पृश्य माना जाता था। अलवार और नयनार संतों की रचनाओं को वेद जितना महत्वपूर्ण बताया गया है। जैसे अलवार संतों की मुख्य काव्य संकलन नालयिरा दिव्य प्रबंधम का वर्णन तमिल वेद के रूप में किया जाता था। इस प्रकार इस ग्रंथ का महत्व संस्कृत के चारों वेदों उतना महत्वपूर्ण बताया गया है जो ब्राह्मणों द्वारा पोषित थे।

वीरशैवो ने भी जाति की अवधारणा का विरोध किया। उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांत को मानने से इनकार कर दिया। ब्राह्मण धर्म शास्त्रों में जिन आचारों को अस्वीकार किया गया था जैसे- वयस्क विवाह और विधवा पुनर्विवाह, वीरशैवो ने उन्हें मान्यता प्रदान की। इन सब कारणों से ब्राह्मणों ने जिन समुदायों के साथ भेदभाव किया, वे वीरशैवो के अनुयायी हो गए । वीरशैवो नें संस्कृत भाषा को त्याग कर कन्नड़ भाषा का प्रयोग शुरु किया।

3. क्यों और किस तरह शासकों ने नयनार और सूफी संतों से अपने संबंध बनाने का प्रयास किया?

उत्तर- चोल शासकों ने नयनार संतो के साथ संबंध बनाने पर बल दिया और उनका समर्थन हासिल करने का प्रयत्न किया। अपने राजस्व के पद को दैवीय स्वरूप प्रदान करने और अपनी सत्ता के प्रदर्शन के लिए चोल शासकों ने सुंदर मंदिरों का निर्माण कराया और उनमें पत्थर तथा धातु से बनी मूर्तियां स्थापित कराई। इस प्रकार लोकप्रिय संत कवियों की परिकल्पना को जो जन भाषाओं में गीत रचते व गाते थे, मूर्त रूप प्रदान किया गया। चोल शासकों ने तमिल भाषा के शैव भजनों का गायन मंदिरों में प्रचलित किया।

परांतक प्रथम ने संत कवि अप्पार संबंदर और सुंदरार की धातु प्रतिमाएं एक शिव मंदिर में स्थापित करवाई। इन मूर्तियों को मात्र उत्सव के दौरान निकाला जाता था। सूफी संत सामान्यता सत्ता से दूर रहने की कोशिश करते थे किंतु यदि कोई शासक बिना मांगे अनुदान या भेंट देता था तो वे उसे स्वीकार करते थे । कई सुल्तानों ने खानकाओं को कर मुक्त भूमि इनाम में दे दी और दान संबंधी न्यास स्थापित किए। सूफी संत अनुदान में मिले धन और सामान का इस्तेमाल जरूरतमंदों के खाने, कपड़े एवं रहने की व्यवस्था तथा अनुष्ठानों के लिए करते थे। शासक वर्ग इन संतों की लोकप्रियता, धर्म निष्ठा और विद्वत्ता के कारण उनका समर्थन हासिल करना चाहते थे।

4. चिश्ती सिलसिला का संक्षेप में उल्लेख करें?

उत्तर- भारत में चिश्ती- सिलसिले का संस्थापक ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती को माना जाता है। उनके उत्तराधिकारियों ख्वाजा बख्तियार काकी, बाबा फरीद, हजरत निजामुद्दीन औलिया, हजरत अलाउद्दीन साबिर, नसरुद्दीन चिराग-ए- दिल्ली ने उत्तरी भारत में इस संप्रदाय को लोकप्रिय बनाया।

दक्षिण में शेख बुरहानुद्दीन गरीब और गेसूदराज ने इसका प्रचार किया। चिश्ती सूफियों से सादा जीवन एवं संगीत को बहुत अधिक महत्व दिया। सीधी- सादी हिंदी भाषा में संगीत-सभाओं द्वारा वे जनमानस को आकृष्ट करने में सफल हुए। चिश्ती संप्रदाय के सिद्धांत उसकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण था।

Jharkhandlab.com

चिश्ती सूफी सिद्धांत- संयमपूर्ण जीवन व्यतीत करना, निर्धनता में विश्वास रखना, धन एवं संपत्ति से घृणा करना, अमीरों, सामंतो एवं राजाओं से संपर्क नहीं रखना, मानव सेवा करना, ईश्वर में विश्वास करना, खानकाओं की स्थापना करना और धार्मिक सहिष्णुता का पालन करना था।

5. बे- शरिया और बा- शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता और अंतर दोनों को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर- शरिया मुसलमानों को निर्देशित करने वाला कानून है। यह कुरान शरीफ और हदीस पर आधारित है। सरिया का पालन करने वाले को बा- शरिया और शरिया की अवहेलना करने वालों को बे- शरिया कहा जाता था।

बा-शरिया और बे-शरिया सूफी परंपरा के बीच एकरूपता:-

1. दोनों सिलसिले एकेश्वर में विश्वास करते थे।। उनके अनुसार अल्लाह एक है। वह सर्वोच्च, शक्तिशाली और सर्व व्यापक है।
2. दोनों अल्लाह के सामने आत्मसमर्पण पर बल देते थे।
3. दोनों पीर अथवा गुरु को अत्यधिक महत्व देते थे।
4. दोनों इबादत अर्थात उपासना पर अत्यधिक बल देते थे। उनके अनुसार अल्लाह की इबादत करने से ही मनुष्य संसार से मुक्ति पा सकता था।

अंतर:-

1. बा-शरिया सिलसिले शरिया का पालन करते थे, किंतु बे-शरिया, शरिया में बंधे हुए नहीं थे।
2. बा- शरिया सूफी संत खानकाहो में रहते थे। खानकाह एक पारसी शब्द है जिसका अर्थ है-आश्रम। खानकाह मे पीर (सूफी संत अर्थात गुरु) अपने मुरीदो अर्थात शिष्यों के साथ रहता था। खानकाह का नियंत्रण शेख, पीर अथवा मुरीद के हाथ में होता था।
3. बे-शरिया सूफी संत खानकाह का तिरस्कार करके रहस्यवादी एवं फकीर की जिंदगी व्यतीत करते, उन्हें कलंदर ,मदारी ,मलंग ,हैदरी आदि नामों से जाना जाता था।
4. बा-शरिया सूफी संत गरीबी का जीवन व्यतीत करने में विश्वास नहीं करते थे। उनमें से अनेक से सल्तनत की राजनीति में भाग लिया और सुल्तानों एवं अमीरों से मेल-जोल स्थापित किया। ऐसे सूफी संत कभी-कभी दरबारी पद भी स्वीकार कर लेते थे।

6. मीराबाई कौन है? भक्ति आंदोलन में मीराबाई को महत्वपूर्ण स्थान क्यों प्राप्त है?

उत्तर- मीराबाई लगभग 15 वीं -16 वी सदी में भक्ति परंपरा की सबसे सुप्रसिद्ध कवयित्री थी। उनकी जीवनी उनके लेख भजनों के आधार पर संकलित की गई है जो शताब्दियों तक मौखिक रूप से संप्रेषित होते रहे हैं।

मीराबाई मारवाड़ के मेड़ता जिले की एक राजपूत राजकुमारी थी जिनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया कुल में कर दिया गया। उन्होंने अपने पति की आज्ञा की अवहेलना करते हुए पत्नी और मां के परंपरागत दायित्व को निभाने से इनकार किया और विष्णु के अवतार कृष्ण को अपना एकमात्र पति स्वीकार किया। मीराबाई के ससुराल वालों ने उन्हें विष देने का प्रयत्न किया किंतु वह राजभवन से निकलकर एक घुमक्कड़ गायिका बन गई। उन्होंने अंतर्मन की भावना प्रवणता को व्यक्त करने वाले अनेक गीतों की रचना की। कुछ परंपराओं के अनुसार मीरा के गुरु रैदास थे जो एक चर्मकार थे। इससे पता चलता है कि मीरा ने जातिवादी समाज की रूढ़ियों का उल्लंघन किया।

ऐसा माना जाता है कि अपने पति के राजमहल के सुख को त्याग कर उन्होंने विधवा के सफेद वस्त्र अथवा सन्यासिनी के जोगिया वस्त्र धारण किए हालांकि मीराबाई के आसपास अनुयायियों का जमघट नहीं लगा और उन्होंने किसी निजी मंडली की नींव नहीं डाली लेकिन फिर भी वह शताब्दियों से प्रेरणा के स्रोत रही है। अनेक रचित पद आज भी स्त्रियों और पुरुषों द्वारा गाए जाते हैं। खासतौर से गुजरात एवं राजस्थान के गरीब लोग द्वारा इन्हें खूब गाया और सुना जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. कबीर और बाबा गुरु नानक के मुख्य उपदेशों का वर्णन कीजिए, इन उपदेशों का किस तरह संप्रेषण हुआ।

उत्तर- कबीर के मुख्य उपदेश निम्नलिखित हैं:-

1. कबीर के अनुसार परम सत्य अथवा परमात्मा एक हैं भले ही विभिन्न संप्रदायों के लोग उसे अलग-अलग नामों से पुकारते हैं।
2. उन्होंने परमात्मा को निरंकार बताया।
3. उनके अनुसार भक्ति के माध्यम से मोक्ष अर्थात मुक्ति प्राप्त हो सकती है।
4. उन्होंने हिंदुओं तथा मुसलमानों दोनों के धार्मिक आडंबरों का विरोध किया।
5. उन्होंने जाति- पाती, भेदभाव, ऊंच-नीच, छुआछूत आदि का विरोध किया।

   कबीर ने अपने विचारों को काव्य की आम बोलचाल की भाषा में व्यक्त किया जिसे आसानी से समझा जा सकता था। उनके देहांत के बाद उनके अनुयायियों ने अपने प्रचार प्रसार द्वारा उनके विचारों का संप्रेषण किया।

बाबा गुरु नानक के मुख्य उपदेश:-

1. उन्होंने निर्गुण भक्ति का प्रचार किया।
2. धर्म के सभी बाहरी आडंबर को उन्होंने अस्वीकार किया। जैसे यज्ञ, अनुष्ठानिक स्नान, मूर्ति पूजा व कठोर तप।
3. उन्होंने हिंदू और मुसलमानों के धर्म ग्रंथों को भी नकारा।
4. उन्होंने रब की उपासना के लिए एक सरल उपाय बताया और वह था उनका निरंतर स्मरण व नाम का जाप।

   उन्होंने अपने विचार पंजाबी भाषा शब्द के माध्यम से सामने रखें। बाबा गुरु नानक यह शब्द अलग-अलग रागों में गाते थे और उनका सेवक मर्दाना रकाब बजाकर उनका साथ देता था।

   इस प्रकार कहा जा सकता है कि कबीर और बाबा गुरु नानक के उद्देश्यों को लोगों ने हाथों हाथ लिया।

2. उदाहरण सहित विश्लेषण कीजिए कि क्यों भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपने विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए विभिन्न भाषाओं का प्रयोग किया?

उत्तर- यह सत्य है कि भक्ति और सूफी चिंतकों ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न भाषाओं का

jharkhandlab.com

प्रयोग किया। वास्तव में भक्ति और सूफी चिंतक देश के विभिन्न भागों से संबंधित थे। वे किसी भाषा विशेष को पवित्र नहीं मानते थे। उनका प्रमुख उद्देश्य जन सामान्य को मानसिक शांति एवं सद्भावना प्रदान करना था। अतः वे अपने विचारों को जनसामान्य तक उनकी अपनी भाषा में पहुंचाना चाहते थे । यही कारण था कि उन्होंने अपने उद्देश्यों में स्थानीय भाषाओं का प्रयोग किया। तमिलनाडु के अलवार (विष्णु के भक्त)और नयनार (शिव के भक्त)संतो ने अपने विचार जनसामान्य तक पहुंचाने के लिए स्थानीय भाषा का प्रयोग किया। वे एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करते हुए तमिल में अपने इष्ट देव की स्तुति में भजन गाते थे।

उल्लेखनीय है कि अलवार और नयनार संत विभिन्न जातियों से संबंधित थे। उनमें से कुछ ब्राह्मण थे, कुछ किसान ,कुछ शिल्पकार और कुछ तथाकथित अस्पृश्य जातियों से भी संबंधित थे, जिन्हें वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत सबसे निचले स्थान पर रखा गया था। उन्होंने ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत प्रेम तथा भक्ति के संदेश को स्थानीय भाषाओं द्वारा दक्षिण भारत के विभिन्न भागों में फैलाया। उदाहरण के लिए अलवार संतो के एक मुख्य काव्य संकलन नालयिरा दिव्य - प्रबंधम को तमिल वेद कहा जाता है। इसी प्रकार नयनार परंपरा की उल्लेखनीय स्त्री भक्त कराईकाल अम्मैयार ने जन भाषा में भक्ति गीतों की रचना करके जनमानस पर अमिट प्रभाव छोड़ा।

उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के मुख्य प्रचारकों ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए विभिन्न भाषाओं को प्रयोग किया। उन्होंने किसी भाषा विशेष को पवित्र नहीं माना और अपने विचार जनसामान्य की भाषा में प्रकट किए। उदाहरण के लिए कबीर ने अपने पदों में अनेक भाषाओं एवं बोलियो का प्रयोग किया। उन्होंने अपने विचारों को प्रकट करने के लिए हिंदी ,पंजाबी, फारसी, ब्रज ,अवधी एवं स्थानीय बोलियों के अनेक शब्दों का प्रयोग किया है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भक्ति संतों ने एवं सूफी संतो ने अपने विचारों एवं उद्देश्यों को लोगों तक पहुंचाने के लिए किसी एक विशेष भाषा को तवज्जो ना देकर लोगों के स्थानीय बोली- भाषा का प्रयोग किया।

3. शेख निजामुद्दीन औलिया की खानकाह के सामाजिक जीवन के विषय में क्या जानकारी मिलती है? क्या खानकाह सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु थे? चर्चा करें।

उत्तर- शेख निजामुद्दीन औलिया की खानकाह से कई महत्वपूर्ण तथ्य को जानने में सहायता मिलती है। यह खानकाह सामाजिक जीवन का केंद्र बिंदु था । यह खानकाह दिल्ली शहर की बाहरी सीमा पर यमुना नदी के किनारे ग्यासपुर में था। यहां कई छोटे-छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल जमातखाना था जहां सहवासी और अतिथि रहते और उपवास करते थे। सहवासियों में शेख का अपना परिवार , सेवक और अनुयाई थे। शेख एक छोटे कमरे में छत पर रहते थे जहां वह मेहमानों से सुबह-शाम मिला करते थे आंगन एक गलियारे से घिरा होता था और खानकाह को चारों ओर से दीवार घेरे रहती थी। एक बार मंगोल आक्रमण के समय पड़ोसी क्षेत्र के लोगों ने खानकाह में शरण ली। यहां एक सामुदायिक रसोई (लंगर) फुतूह(बिना मांगे खैर)पर चलती थी ।सुबह से देर रात तक सब तबके के लोग सिपाही, गुलाम, गायक, व्यापारी ,कवि ,राहगीर ,धनी और निर्धन, हिंदू ,जोगी और कलंदर यहां अनुयाई बनने ,इबादत करने ,ताबीज लेने अथवा विभिन्न मसलों पर शेख की मध्यस्थता के लिए आते थे ।

कुछ अन्य मिलने वालों में अमीर हसन रिजवी और अमीर खुसरो जैसे कवि तथा दरबारी इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी जैसे लोग शामिल थे। इन सभी लोगों ने शेख के बारे में लिखा- किसी के सामने झुकना ,मिलने वालों को पानी पिलाना, दीक्षितों के सर का मुंडन तथा यौगिक व्यायाम आदि व्यवहार इस तथ्य के पहचान थे कि स्थानीय परंपराओं को आत्मसात करने का प्रयत्न किया गया है।

शेख निजामुद्दीन ने कई आध्यात्मिक वारिसों का चुनाव किया और उन्हें उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में खानकाह स्थापित करने के लिए शेख का यश चारों ओर फैल गया। उनकी तथा उनके आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थयात्री आने लगे।

jharkhandjcert.com

अध्याय - 7

एक साम्राज्य की राजधानी : विजयनगर

लगभग चौदहवीं से सोलहवीं सदी तक

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. विजय नगर के संस्थापक कौन थे?

a. कृष्णदेवराय b. देवराय
c. महमूद गवा d. हरिहर और बुक्का

2. विजय नगर के सबसे प्रसिद्ध शासक कौन थे?

A. हरिहर B. कृष्णदेव राय
C. देवराज द्वितीय D. देवराय प्रथम

3. हजारा मंदिर और विट्ठल स्वामी मंदिर का निर्माण किसके शासनकाल में हुआ था?

A. राम राय B. देवराय
C. कृष्णदेव राय D. सदाशिव राय

4. तालिकोटा की लड़ाई कब हुई?

A. 1526 ईसवी B. 1556 ईस्वी
C. 1565 ईसवी D. 1575 ईसवी

5. इटली यात्री निकोलो कोंटी किस राजा के शासनकाल में आया था?

A. देवराय प्रथम B. देवराय द्वितीय
C. कृष्ण देव राय D. हरिहर प्रथम

6. विजय नगर और बहमनी राज्य के बीच संघर्ष का क्या कारण था?

A. कृष्ण और कावेरी का दोआब
B. कृष्ण और गोदावरी का दोआब
C. कृष्ण और भीमा का दोआब
D. कृष्ण और तुंगभद्रा का दोआब

7. विजयनगर राज्य की स्थापना कब हुई थी?

A. 1286 ईसवी B. 1206 इसवी
C. 1336 ईस्वी D. 1526 इसवी

8. सालूव वंश के संस्थापक कौन थे?

A. हरिहर B. कृष्णदेव राय
C. वीर नरसिंह D. सालूव नरसिंह

9. तुलुव वंश के संस्थापक कौन थे?

A. वीर नरसिंह B. कृष्ण देव राय
C. देवराय D. राम राय

10. विजय नगर का किस राज्य के साथ हमेशा संघर्ष चलता रहा?

A. कालीकट से B. चोलो से
C. पांडय से D. बहमनी से

11. अमुक्तमाल्यद की रचना किसके द्वारा की गई?

A. हरिहर B. कृष्णदेव राय
C. राम राय D. देवराय

12. अमुक्तमाल्यद की रचना किस भाषा में की गई?

A. संस्कृत B. तमिल
C. तेलुगू D. कन्नड़

13. तालीकोटा का युद्ध किसके नेतृत्व में लड़ा गया?

A. राम राय B. कृष्णदेव राय
C. देवराय D. सदाशिव राय

14. बारबोसा कहां के यात्री थे?

A. इटली B. पुर्तगाल
C. रूस D. फ्रांस

15. किसका शासन काल तेलुगु साहित्य का क्लासिकी युग माना जाता है?

A. हरिहर B. देवराय द्वितीय
C. राजेंद्र चोल D. कृष्णदेव राय

16. किसे आंध्र भोज भी कहा जाता है?

A. कृष्णदेव राय B. देवराय द्वितीय
C. सदाशिव राय D. देवराय प्रथम

उत्तर- 1-D, 2-B, 3-C, 4-C, 5-A, 6-D, 7-C, 8-D, 9-A, 10-D, 11-B, 12-C, 13-A, 14-B, 15-D, 16-A

अति लघु उत्तरीय प्रश्न उत्तर

1. हंपी के भग्नावशेषों की खोज का श्रेय किसे जाता है?

उत्तर- अभियंता और पूराविद कर्नल कॉलिंग मैकेंजी के द्वारा हंपी के भग्नावशेषों 1800 ईसवी में प्रकाश में लाए गए थे।

2. इंडो इस्लामिक स्थापत्य शैली की तीन मुख्य विशेषताएं क्या थी?

उत्तर- इंडो- इस्लामिक स्थापत्य शैली की तीन मुख्य विशेषताएं 1- विशाल प्रवेशद्वार, 2- मेहराब , 3- गुंबद ।

3. डोमिगो पायस किसके शासनकाल में विजयनगर आए थे?

उत्तर- कृष्णदेव राय

4. सीजर फ्रेडरिक किसके शासनकाल में विजयनगर आए थे?

उत्तर- सदाशिव राय

5. फारस यात्री अब्दुर रज्जाक किसके शासनकाल में विजयनगर आए थे?

उत्तर- देवराय द्वितीय

6. विजय नगर किस नदी के तट पर स्थित है?

उत्तर- तुंगभद्रा

jharkhandlab.com

7. **विजयनगर की राजधानी कहां थी?**

उत्तर- हंपी

8. **बहमनी राजाओं की राजधानी थी?**

उत्तर- गुलबर्गा

9. **मीनाक्षी मंदिर कहां स्थित है?**

उत्तर- मदुरई

10. **अठवण का क्या मतलब है?**

उत्तर- भू- राजस्व विभाग

लघु प्रश्न उत्तर

1. **पिछली दो शताब्दियों में हंपी के भवनावशेषों के अध्ययन में कौन सी पद्धतियों का प्रयोग किया गया है? आपके अनुसार यह पद्धति विरुपाक्ष मंदिर के पुरोहितों द्वारा प्रदान की गई जानकारी का किस प्रकार पूरक रहीं?**

उत्तर- आधुनिक कर्नाटक राज्य का एक प्रमुख पर्यटन स्थल हंपी है जिसे 1976 ईस्वी में राष्ट्रीय महत्व के रूप में मान्यता मिली। हंपी के भवनावशेष 1800 ईसवी में एक अभियंता तथा पुरातत्वविद कर्नल कॉलिन मैकेंजी द्वारा प्रकाश में लाए गए थे। जो ईस्ट इंडिया कंपनी में कार्यरत थे, हंपी का पहला सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया। उनके द्वारा प्राप्त शुरुआती जानकारियां विरुपाक्ष मंदिर तथा पंपा देवी के पूजा स्थल के पुरोहितों की स्मृतियों पर आधारित थी। कालांतर में 1856 ईसवी में एलेग्जेंडर ग्रनिलो ने हंपी के पुरातात्विक अवशेषों के विस्तृत चित्र लिए इसके परिणाम स्वरूप शोधकर्ता उनका अध्ययन कर पाए।

1836 ईस्वी से ही अभिलेख कर्ताओं ने यहां और हंपी के अन्य मंदिरों से कई दर्जन अभिलेखों को इकट्ठा करना प्रारंभ कर दिया। इतिहासकारों ने इन स्रोतों का विदेशी यात्रियों के बृत्तांतो और तेलगु, कन्नड़, तमिल एवं संस्कृत में लिखे गए साहित्य से मिलान किया, इनसे उन्हें साम्राज्य के इतिहास के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण सहायता मिली।

1876 ईसवी में जे.एफ.फ्लीट ने पुरास्थल के मंदिर की दीवारों के अभिलेखों का प्रलेखन प्रारंभ किया।जो विरुपाक्ष मंदिर के पुरोहितों द्वारा प्रदत सूचनाओं की पुष्टि करता है। निसंदेह यह पद्धति विरुपाक्ष मंदिरों के पुरोहित द्वारा प्रदत सूचनाओं की पूरक थी।

2. **विजय नगर की जल आवश्यकताओं को किस प्रकार पूरा किया जाता था?**

उत्तर- विजय नगर की जल आवश्यकताओं को मुख्य रूप में तुंगभद्रा नदी से निकलने वाली धाराओं पर बांध बनाकर पूरा किया जाता था। यह नदी उत्तर- पूर्व दिशा में बहती है। विजयनगर की पहाड़ियों से कई जलधाराएं आकर तुंगभद्रा नदी से मिलती है। इन धाराओं में बांध बनाकर अलग-अलग आकार के हौजों का निर्माण किया जाता था। इन हौज के पानी से ना केवल आसपास के खेतों को सिंचा जा सकता था बल्कि इसे एक नहर के माध्यम से राजधानी तक भी ले जाया जाता था।

कमलपुरम जलाशय नामक हौज सबसे महत्वपूर्ण हौज था। तत्कालीन समय के सर्वाधिक महत्वपूर्ण जल संबंधी संरचनाओं में से एक हिरिया नहर को आज भी देखा जा सकता है इस नहर में तुंगभद्रा पर बने बांध से पानी लाया जाता था और इस धार्मिक केंद्र से शहरी केंद्र को अलग करने वाली घाटी को सिंचित करने में प्रयोग किया जाता था। संभवतः इसका निर्माण संगम वंश के राजाओं द्वारा करवाया गया था।

इसके अलावा झील, कुएं, बरसात के पानी वाले जलाशय तथा मंदिरों के जलाशय से सामान्य नगर वासियों के लिए पानी की आवश्यकताओं को पूरा करते थे।

3. **शहर के किलेबंद क्षेत्र में कृषि को रखने के अपने विचार में क्या फायदे और नुकसान थे?**

उत्तर- विजयनगर के शहरों के किलेबंदी का उल्लेख अब्दुर रज्जाक के द्वारा किया गया है जो ना केवल शहर को बल्कि कृषि में प्रयुक्त आसपास के क्षेत्र तथा जंगलों को भी घेरा गया था। इस किलेबंदी की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि इससे कृषि क्षेत्रों को भी घेरा गया था। इसके निम्नलिखित फायदे एवं नुकसान थे:-

फायदे :-

1. मध्यकाल में विजय प्राप्ति में घेराबंदियों का महत्वपूर्ण योगदान होता था। घेराबंदियों का प्रमुख उद्देश्य प्रतिपक्ष को खाद्य सामग्री से वंचित कर देना होता था ताकि वे विवश होकर आत्मसमर्पण करने को तैयार हो जाए।
2. कई बार शत्रु की घेराबंदी वर्षों तक चलती रहती थी। जिससे बाहर से खाद्यान्न आना मुश्किल हो जाता था। ऐसी स्थिति से निपटने के लिए किलेबंदी क्षेत्र के भीतर ही विशाल अन्नागारों का निर्माण करते थे ।
3. घेराबंदी से खेतों में खड़ी फसलें शत्रु द्वारा किए जाने वाली विनाश से बच जाती थी।

नुकसान :-

1. किलेबंदी करना अत्यंत महंगी थी। राज्य को इस पर ज्यादा धनराशि खर्च करनी पड़ती थी।
2. किलेबंद क्षेत्र में कृषि क्षेत्र होने के कारण घेराबंदी की स्थिति में बाहर रहने वाले किसानों के लिए खेतों में काम करना कठिन हो जाता था।
3. घेराबंदी की स्थिति में कृषि के लिए आवश्यक बीज, उर्वरक, यंत्र आदि को बाहर के बाजारों से लाना कठिन हो जाता था।
4. यदि शत्रु किलेबंद क्षेत्र में प्रवेश करने में सफल हो जाता था तो खेतों में खड़ी फसल उसके विनाश का कारण बन जाती थी।

4. **आपके विचार में महानवमी डिब्बा से संबंध अनुष्ठानों का क्या महत्व था?**

उत्तर- महानवमी डिब्बा शहर के सबसे ऊंचे स्थानों में एक विशालकाय मंच है जो लगभग 11000 वर्ग फीट के आधार से 40 फीट की ऊंचाई तक जाता है। ऐसा साक्ष्य मिले हैं जिनसे पता चलता है कि इस पर एक लकड़ी की संरचना बनी थी। मंच का आधार उभारदार उत्कीर्णन से पटा पड़ा है।

महानवमी डिब्बा से संबंध अनुष्ठान सितंबर एवं अक्टूबर के शरद माह में 10 दिनों तक मनाया जाने वाला हिंदू त्यौहार है। इस अनुष्ठान को उत्तर भारत में दशहरा, बंगाल में दुर्गा पूजा और प्रायद्वीपीय भारत में नवरात्रि या महानवमी नामों से जाना जाता है। इस अवसर पर विजयनगर के शासक

jharkhandlab.com

अपने रुतबे, ताकत तथा सत्ता की शक्ति का प्रदर्शन करते थे। इस अवसर पर होने वाले धर्म अनुष्ठानों में मूर्ति की पूजा, राज्य के अश्व की पूजा तथा भैंसों और अन्य जानवरों की बलि दी जाती थी।

नृत्य, कुश्ती प्रतिस्पर्धा तथा घोड़ों, हाथियों और रथों व सैनिकों की शोभायात्राएं निकाली जाती थी। साथ ही प्रमुख नायकों और अधीनस्थ राजाओं द्वारा राजा को प्रदान की जाने वाली औपचारिक भेंट इस अवसर के प्रमुख आकर्षण थे। त्योहारों के अंतिम दिन राजा सेनाओं का निरीक्षण करता था। साथ ही नए सिरे से कर निर्धारित किए जाते थे।

5. अमर नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक खोज थी! चर्चा करें!

उत्तर- अमर- नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक खोज थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इस प्रणाली के कई तत्व दिल्ली सल्तनत की इक्ता प्रणाली से लिए गए थे। अमर- नायक सैनिक कमांडर होते थे जिन्हें राय द्वारा प्रशासन के लिए राज्य क्षेत्र दिए जाते थे । वे किसानों, शिल्पकर्मियों तथा व्यापारियों से भू राजस्व तथा अन्य कर वसूल करते थे। वह राजस्व का कुछ भाग व्यक्तिगत उपयोग तथा घोड़ों और हाथियों के निर्धारित दल के रखरखाव के लिए अपने पास रख लेते थे। यह दल विजयनगर के शासकों को एक प्रभावी सैनिक शक्ति प्रदान करने में सहायक होते थे ।

राजस्व का कुछ भाग मंदिरों और सिंचाई के साधनों के रख-रखाव के लिए खर्च किया जाता था। अमर- नायक राजा को वर्ष में एक बार भेंट भेजा करते थे और अपनी स्वामीभक्ति प्रकट करने के लिए राजकीय दरबार में उपहारों के साथ स्वयं उपस्थित हुआ करते थे। राजा कभी-कभी उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर हस्तांतरित कर उन पर अपना नियंत्रण दर्शाता था। लेकिन 17 वी शताब्दी में इनमें से कई नायकों ने अपने स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिए। इस कारण केंद्रीय राजकीय ढांचे का विघटन तेजी से होने लगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शाही केंद्र शब्द शहर के जिस भाग के लिए उपयोग किए गए हैं, क्या वे उस भाग का सही वर्णन करते हैं?

उत्तर- विशाल एवं सुदृढ़ किलेबंदी विजयनगर शहर की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। हमें इस शहर की 3-3 किलेबंदीयों का उल्लेख मिलता है। पहली किलेबंदी के द्वारा केवल शहर को ही नहीं अपितु खेती के कार्य में प्रयोग किए जाने वाले आसपास का क्षेत्र और जंगलों को भी घेरा गया था। सबसे बाहरी दीवार के द्वारा शहर के चारों ओर की पहाड़ियों को परस्पर जोड़ दिया गया था।

दूसरी किलेबंदी को नगरीय केंद्र के आंतरिक भाग के चारों ओर किया गया था। एक तीसरे किलेबंदी शासकीय केंद्र अथवा शाही केंद्र के चारों ओर की गई थी। इसमें सभी महत्वपूर्ण इमारतें, अपनी ऊंची चारदीवारी से घिरी हुई थी। शाही केंद्र बस्ती के दक्षिण- पश्चिम भाग में स्थित था। उल्लेखनीय है कि शाही केंद्र शब्द का प्रयोग शहर के एक भाग विशेष के लिए किया गया है ।इसमें 60 से भी अधिक मंदिर और लगभग 30 महलनुमा संरचनाएं थी ।

इन संरचनाओं और मंदिरों के मध्य एक महत्वपूर्ण अंतर यह था कि मंदिरों का निर्माण पूर्ण रूप से ईट- पत्थरों से किया गया था किंतु धर्मेतर भवनों के निर्माण में विकारी वस्तुओं का प्रयोग किया गया था। यह भी याद रखा जाना चाहिए कि यह संरचनाएं अपेक्षाकृत बड़ी थी और इनका प्रयोग अनुष्ठानिक कार्यों के लिए नहीं किया जाता था। अतः क्षेत्र में सर्वाधिक विशाल संरचना राजा का भवन है किंतु पुरातत्वविदों को इसके राजकीय आवास होने का कोई सुनिश्चित साक्ष्य उपलब्ध नहीं हुआ है।

इसमें दो सर्वाधिक प्रभावशाली मंच है जिन्हें सामान्य रूप से सभा मंडप और महानवमी डिब्बा के नाम से जाना जाता है। सभा मंडप एक ऊंचा मंच है इसमें लकड़ी के स्तंभों के लिए पास- पास और निश्चित दूरी पर छेद बनाए गए हैं। इन स्तंभों पर दूसरे मंजिल को टिकाया गया था। दूसरी मंजिल तक पहुंचने के लिए सीढ़ी का निर्माण किया गया था।

शहर में मुख्य स्थापत्य थे महानवमी डिब्बा, लोटस महल अथवा कमल महल जो सर्वाधिक सुंदर भवन था, परिषद भवन, विशाल फीलखाना (हाथियों के रहने का स्थान) तथा हजार राम मंदिर जो अत्यधिक सुंदर मंदिर था।

परंतु कुछ विद्वानों का विचार है कि इस स्थान पर इतनी विशाल संख्या में मंदिर मिले हैं कि इसे शाही केंद्र का नाम देना उचित प्रतीत नहीं होता है। किंतु यदि हम निष्पक्षता पूर्वक तथ्यों का अध्ययन करते हैं तो यह भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि शाही केंद्र शब्द शहर के एक भाग विशेष के लिए प्रयोग किया जाना सही है। हमें याद रखना चाहिए कि धर्म और धार्मिक वर्गों की विजयनगर साम्राज्य की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका थी। धर्म की कठोर सिद्धांत विजयनगर साम्राज्य का एक प्रमुख विशेषता था।

अतः हम कह सकते हैं कि विजयनगर के शासक अपना संबंध देवी-देवताओं से जोड़कर लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करना चाहते थे इसलिए शाही केंद्र में अनेक मंदिरों का निर्माण किया गया था।

2. विट्ठल मंदिर तथा विरुपाक्ष मंदिर की स्थापत्य कला पर प्रकाश डालें!

उत्तर- विजयनगर में बड़े पैमाने पर मूर्तियों तथा मंदिरों का निर्माण कराया गया। मंदिर स्थापत्य राजकीय सत्ता की पहचान थी, जिन्होंने विशाल संरचनाओं का निर्माण कराया । इसका सबसे अच्छा उदाहरण राय गोपुरम अथवा राजकीय प्रवेश द्वार थे जो अक्सर केंद्रीय देवालयों की मीनारों को बौना प्रतीत कराते थे और दूर से ही मंदिर होने का संकेत देते थे। यह संभवतः शासकों की ताकत का एहसास भी दिलाते थे क्योंकि वह इतनी ऊंची मीनारों के निर्माण के लिए आवश्यक साधन, तकनीक तथा कौशल जुटाने में सक्षम थे। अन्य विशिष्ट अभिलक्षणों में मंडप और लंबे स्तंभों वाले गलियारे जो अक्सर मंदिर परिसर में स्थित देवस्थलों के चारों ओर बने हुए थे, सम्मिलित हैं जिसमें विरुपाक्ष मंदिर और विट्ठल मंदिर प्रमुख है।

विरुपाक्ष मंदिर का निर्माण कई शताब्दियों में हुआ था। इसका सबसे प्रसिद्ध मंदिर नवी- दसवीं शताब्दीयों का है। विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के बाद इसे और अधिक बड़ा दिया गया । मुख्य मंदिर के सामने बना मंडप कृष्णदेव राय ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में बनवाया था। इसे सूक्ष्मता से उत्कीर्णित स्तंभों से सजाया गया था। पूर्वी

गोपुरम के निर्माण का श्रेय भी उसे ही दिया जाता है। मंदिर के सभागारों का प्रयोग विविध प्रकार के कार्यों के लिए होता था। सभागारों का प्रयोग देवी- देवताओं के विवाह के अवसर पर आनंद मनाने और कुछ अन्य देवी- देवताओं को झूला झुलाने के लिए होता था। इन अवसरों पर विशिष्ट मूर्तियों का प्रयोग होता था। यह छोटे केंद्रीय देवालयों में स्थापित मूर्तियों से भिन्न होती थी।

दूसरा देवस्थाल विट्ठल मंदिर था, जहां के प्रमुख देवता विट्ठल थे। सामान्यतः महाराष्ट्र में पूजे जाने वाले विष्णु के एक रूप है। इस देवता की पूजा कर्नाटक में आरंभ करना उन माध्यमों का द्योतक है जिनसे एक साम्राज्यिक संस्कृति के निर्माण के लिए विजयनगर के शासकों ने अलग-अलग परंपराओं को आत्मसात किया। अन्य मंदिरों की तरह ही इस मंदिर में भी कई सभागार तथा रथ के आकार का अनूठा मंदिर भी है। मंदिर परिसर की एक विशेषता रथ गलियां है जो मंदिर को गोपुरम से सीधी रेखा में जाती हैं। इन गलियों का फर्श पत्थर के टुकड़ों से बनाया गया था और इनके दोनों ओर स्तंभ वाले मंडप थे जिनमें व्यापारी अपनी दुकानें लगाया करते थे।

जिस प्रकार नायकों ने किलेबंदी की परंपराओं को जारी रखा तथा उसे और अधिक व्यापक बनाया वैसे ही उन्होंने मंदिरों के निर्माण की परंपराओं को कायम रखा। कुछ दर्शनीय गोपुरम का निर्माण भी स्थानीय नायकों द्वारा किया गया।

3. कमल महल और हाथियों के अस्तबल जैसे भवनों का स्थापत्य हमें उनके बनवाने वाले शासकों के विषय में क्या बताता है?

उत्तर राजकीय केंद्र के सबसे सुंदर भवनों में एक लोटस महल है जिसका यह नामकरण 19वीं शताब्दी के अंग्रेज यात्रियों ने किया था। विजयनगर के लगभग सभी शासकों की स्थापत्य कला में विशेष रुचि थी। मध्यकालीन अधिकांश राजधानियों के समान विजयनगर की संरचना में भी विशिष्ट भौतिक रूप- रेखा तथा स्थापत्य शैली परिलक्षित होती है। पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित विजयनगर एक विशाल शहर था। इसमें अनेक भव्य महल, सुंदर आवास-स्थान, उपवन और झीलें थीं जिनके कारण नगर देखने में अत्यधिक आकर्षक एवं मनमोहक लगता था। बस्ती के दक्षिण- पश्चिमी भाग में शाही केंद्र स्थित था जिसमें अनेक महत्वपूर्ण भवनों को बनाया गया था। लोटस महल अथवा कमल महल और हाथियों का अस्तबल इसी प्रकार की दो महत्वपूर्ण संरचनाएं थी। इन दोनों संरचनाओं से हमें उनके निर्माता, शासकों की अभिरुचियों एवं नीतियों के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। शाही केंद्र के महलों में सर्वाधिक सुंदर कमल महल था।

यह नामकरण महल की सुंदरता एवं भव्यता से प्रभावित होकर अंग्रेज यात्रियों द्वारा किया गया था। स्थानीय रूप से इस महल को 'चितरंजनी' महल के नाम से जाना जाता है। यह दो मंजिलों वाला एक खुला चौकोर मंडप है। नीचे की मंजिल में पत्थर का एक सुसज्जित अधिष्ठान है। ऊपर की मंजिल में लड़कियों वाले कई सुंदर झरोखे हैं। कमल महल में 9 मीनारें थीं। बीच में सबसे ऊंची मीनार थी और 8 मीनारें उसकी भुजाओं के साथ-साथ थीं। महल की मेहराबों में इंडो-इस्लामिक तकनीकों का स्पष्ट प्रभाव था, जो विजयनगर शासकों की धर्म सहनशीलता की नीति का परिचायक है।

संभवतः यह एक परिषद भवन था, जहां राजा और उसके परामर्शदाता विचार-विमर्श के लिए मिलते थे। हाथियों का विशाल फीलखाना(हाथियों का अस्तबल अथवा रहने का स्थान) कमल भवन के समीप ही स्थित था। फीलखाना की विशालता से स्पष्ट होता है कि विजयनगर के शासक अपनी सेना में हाथियों को अत्यधिक महत्व देते थे। उनकी विशाल एवं सुसंगठित सेना में हाथियों की पर्याप्त संख्या थी। फीलखाना की स्थापत्य कला शैली पर इस्लामी स्थापत्य कला शैली का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। इसके निर्माण में भारतीय इस्लाम स्थापत्य कला शैली का अनुसरण किया गया है। इसमें यह भी स्पष्ट होता है कि विजयनगर के शासक धार्मिक दृष्टि से उदार एवं सहनशील थे।

Jharkhandlabs.com

अध्याय - 8 किसान, जमींदार और राज्य

कृषि समाज और मुगल साम्राज्य (लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. अकबरनामा की रचना किसने की थी?

A. अमीर खुसरो B. अलबरूनी
C. इब्नबतूता D. अबुल फजल

प्रश्न 2. आइन - ए -अकबरी कितने भागों में विभक्त है?

A. दो B. तीन
C. चार D. पाँच

प्रश्न 3. सोलहवी - सत्रहवी सदी के दौरान हिंदुस्तान में कितने प्रतिशत लोग गांव में रहते थे?

A. 75 B. 85
C. 65 D. 95

प्रश्न 4. मुगल काल में भारतीय फारसी स्रोत किसानों के लिए आमतौर पर किस नाम का प्रयोग करते थे?

A. रैयत B. मुजरियान
C. किसान D. इनमें से सभी

प्रश्न 5. रबी फसल किस ऋतु में होती है?

A. बसंत B. ग्रीष्म
C. वर्षा D. पतझड़

प्रश्न 6. मुगल काल में भारत में सबसे ज्यादा उगाई जाने वाली फसलें थी?

A. चावल, गेहूं ,ज्वार -बाजरा आदि
B. चाय , कॉफी ,नील, आदि
C. तिलहन ,दालें ,अफीम ,आदि
D. इनमें से कोई नही

प्रश्न 7. भारत में 17 वी सदी में जो भी फसल के रूप में अफ्रीका और स्पेन के रास्ते आई थी उसका नाम था?

A. मक्का B. गेहूं
C. चावल D. कपास

प्रश्न 8. 16 वी सदी में भारतीय गांवों में जो अनेक बाहरी ताकतें दाखिल हुई वे थी?

A. मुगल राज्य B. व्यापार
C. मुद्रा और बाजार D. इनमें से सभी

प्रश्न 9. तंबाकू पर किस मुगल शासक ने प्रतिबंध लगाया?

A. अकबर B. बाबर
C. जहांगीर D. शाहजहां

प्रश्न 10. पंचायत का सरदार एक मुखिया होता था जिसे कहते थे ?

A. मुकदम या मुखिया B. अमिल या अमीर
C. चौधरी या सरपंच D. पंच या पितामह

प्रश्न 11. अकबर का वित्त मंत्री कौन था?

A. मानसिंह B. टोडरमल
C. बीरबल D. अबुल फजल

प्रश्न 12. आइन- ए - अकबरी अकबरनामा के किस खण्ड से संबंधित है ?

A. प्रथम खंड B. द्वितीय खंड
C. तृतीय खंड D. चतुर्थ खंड

प्रश्न 13. मुगलकालीन ऐतिहासिक स्रोतों में शामिल थी?

A. ऐतिहासिक ग्रंथ
B. सरकारी तथा गैर सरकारी दस्तावेज
C. उस कालांश में बनी इमारतें एवं स्मारक
D. इनमें से सभी

प्रश्न 14. आइन - ए -अकबरी के अनुसार सिचाई वाले क्षेत्रों में वर्ष में कुल फसलें होती थी–

A. 5 B. 3
C. 2 D. 6

प्रश्न 15. तंबाकू का सेवन सर्वप्रथम किस मुगल सम्राट ने किया था ?

A. बाबर B. जहांगीर
C. अकबर D. शाहजहां

वस्तुनिष्ट प्रश्नो के उत्तर--

1.----D, 2–D, 3–B, 4–D, 5–A. 6–A. 7--A. 8--D, 9--C, 10–A, 11–B, 12–C, 13–D, 14 –B, 15 –C

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. पटवारी किसे कहते थे?

उत्तर– पटवारी गांव की जमीन प्रत्येक किसान द्वारा जुते जाने वाले खेतों, फसल के प्रकार और बंजर भूमि का हिसाब किताब रखता था।

प्रश्न 2. खुदकाश्त और पाहिकास्त कौन थे?

उत्तर– खुदकास्त – खुदकाश्त उसी गांव की जमीन पर खेती करते थे जहाँ वे रहते थे।

पाहिकास्त–पाहिकास्त दूसरे गांव में जाकर भाड़े पर जमीन लेकर उस पर खेती करते थे।

प्रश्न 3. जिन्स -ए -कामिल के अंतर्गत कौन सी फसलें आती था ?

उत्तर– कपास और गन्ने जैसी फसलें जिन्स- ए- का मिल के अंतर्गत आती थी। ऐसी फसलों की खेती से राज्य को ज्यादा कर मिलता था।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 4. अकबरनामा की रचना किसने की थे ? यह कितने भागों में विभक्त है?

उत्तर –अकबरनामा की रचना मुगल सम्राट अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल द्वारा की गई थी। यह 3 जिल्दों में विभक्त है।

प्रश्न 5. 17 वी सदी में कौन-कौन सी फसलें, फल एवं सब्जियां विदेशों से भारत आयी?

उत्तर– मक्का, टमाटर ,आलू ,मिर्च ,अनानास और पपीता जैसी फसलें,फल एवं सब्जियां विदेशों से भारत आयी।

प्रश्न 6. आइन - ए -अकबरी कितने भागों में विभक्त है?

उत्तर– आइन - ए-अकबरी 5 भागों में विभक्त है। इसके पहले तीन भागों में प्रशासन का विस्तृत विवरण है। चौथे व पांचवें भाग मे भारत के धार्मिक एवं साहित्यिक परंपराओं का उल्लेख है।

प्रश्न 7. मुगल काल में किसानों के लिए किन -किन शब्दों का प्रयोग होता था?

उत्तर– मुगल काल में किसानों के लिए निम्न शब्दों का प्रयोग होता था–

A. रैयत B. रियाया या मुजरियान
C. खुदकास्त D. पाहिकास्त

प्रश्न 8. पायक कौन थे?

उत्तर– पायक वे लोग थे जो जमीन के बदले सैन्य सेवाएं देते थे। असम के अहोम राजाओं के अपने पायक होते थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. कृषि उत्पादन में महिलाओं की भूमिका का विवरण दीजिए?

उत्तर– मध्यकालीन भारतीय कृषि समाज में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी। खेतिहर परिवारों से संबंधित महिलाएं कृषि उत्पादन में सक्रिय सहयोग प्रदान करती थी तथा पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर खेतों में काम करती थी। पुरुष खेतों की जुताई और हल चलाने का काम करते थे जबकि महिलाएं मुख्य रूप से बुआई, निराई तथा कटाई का काम करती थी ।पकी हुई फसल का दाना निकालने में भी सहयोग प्रदान करती थी।

वास्तव में मध्यकाल विशेष रुप से 16वीं और 17वीं शताब्दी में ग्रामीण इकाइयां एवं व्यक्तिगत खेती का विकास होने के कारण घर परिवार के संसाधन तथा श्रम उत्पादन का प्रमुख आधार बन गया।अतः महिलाएं और पुरुषों के कार्य क्षेत्र में एक विभाजक रेखा खींचना कठिन हो गया था।

उत्पादन के कुछ पहलू जैसे सूत कातना, बर्तन बनाने के लिए मिट्टी को साफ करना और गूंथना, कपड़ों पर कढ़ाई करना आदि मुख्य रूप से महिलाओं के श्रम पर ही आधारित थी। किसान और दस्तकार महिलाएं न केवल खेती के काम में सहयोग प्रदान करती थी अपितु आवश्यक होने पर नियोक्ताओं के घरों में भी काम करती थी और अपने उत्पादन के बेचने के लिए बाजारों में भी जाती थी। उल्लेखनीय है कि श्रम प्रधान समाज में महिलाओं को श्रम का एक महत्वपूर्ण संसाधन समझा जाता था क्योंकि उनमें बच्चे उत्पन्न करने की क्षमता थी।

किंतु हमें यह याद रखना चाहिए कि महिलाओं की जैव वैज्ञानिक क्रियाओं से संबंधित पूर्वाग्रह अब भी विद्यमान थे। उदाहरण के लिए पश्चिमी भारत में राजस्वला महिलाएं हल अथवा कुम्हार के चाक को नही पकड़ सकती थी। इसी प्रकार बंगाल में महिलाओं को मासिक धर्म की अवधि में पान बागानो में जाने की मनाही थी।

प्रश्न 2. मुगल भारत में जमीदारों की भूमिका का वर्णन कीजिए?

उत्तर– मुगल भारत में जमीदार भूमि के मालिक होते थे। इन्हें ग्रामीण समाज में ऊंची हैसियत की वजह से कुछ खास सामाजिक और आर्थिक सुविधा मिली हुई थी। समाज में जमीदारों की उच्च स्थिति के दो कारण थे पहला उनकी जाति और दूसरा उनके द्वारा राज्य को दी जाने वाली विशेष सेवाएं।

जमीदारों की समृद्धि की वजह थी उनकी विस्तृत व्यक्तिगत जमीन। इससे मिल्कियत यानी संपत्ति कहते थे। मिल्कियत जमीन पर जमींदार की निजी इस्तेमाल के लिए खेती होती थी।

जमीदार अपनी इच्छा अनुसार इन जमीनों को बेच सकते थे, किसी और के नाम कर सकते थे और उन्हें गिरवी रख सकते थे। जमीदारों को राज्य की ओर से कर जमा करने का भी अधिकार प्राप्त था। इसके बदले उन्हे वित्तीय मुआवजा मिलता था।

सैनिक संसाधन जमींदारों की शक्ति का एक अन्य स्रोत था। अधिकतर जमीदारों के पास अपने किले अपनी सैनिक टुकड़ी भी होती थी एवं उनके पास घुड़सवार तोपखाने और पैदल सिपाही भी रहते थे।

यदि हम मुगलकालीन गांव में सामाजिक संबंधों को एक पिरामिड के रूप में देखें तो जमीदार इसके संकरे शीर्ष का भाग थे।

जमीदारों में कृषि लायक जमीन को बसाने में अग्रणी भूमिका निभाई और किसानों को खेती के साजो- समान एवं उधार देकर उन्हें वहां बसने के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न 3. 16- 17 वी सदी में कृषि उत्पादन को किस हद तक महज गुजारे के लिए खेती कर सकते हैं? अपने उत्तर के कारण स्पष्ट करें।

उत्तर– 16 -17 वी सदी में दैनिक आहार की खेती पर अधिक जोर दिया जाता था। किसान हर साल भिन्न-भिन्न मौसम में ऐसे काम करते थे जिससे फसल की पैदावार होती थी– जैसे जमीन की जुताई , बीज बोना फसल पकने पर उसकी कटाई करना। इसके अतिरिक्त किसान उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेष ध्यान देते थे जो कृषि आधारित थी जैसे कि तेल और शक्कर आदि। कई ऐसे क्षेत्र भी थे जैसे सूखी जमीन के विशाल हिस्सों से पहाड़ियों वाले इलाके जहां उस तरह की खेती नहीं हो सकती थी जैसे कि ज्यादा उपजाऊ जमीन पर। मौसम के दो मुख्य चक्रों के दौरान खेती की जाती थी - एक खरीफ फसल तथा दूसरी रबी फसल। जिन स्थानों पर बारिश या सिंचाई के अन्य साधन उपलब्ध थे वहां तो वर्ष भर में तीन फसलें भी उगाई जाती थी। इस वजह से पैदावार में अत्यधिक विविधता पाई जाती थी। आईन - ए-अकबरी के अनुसार दोनों मौसम को मिलाकर मुगल प्रांत आगरा में 39 किस्म की फसलें उगाई जाती थी जबकि दिल्ली प्रांत में 43 फसलों की पैदावार होती थी।

jharkhandjcert.com

बंगाल में केवल चावल की 50 किस्में पैदा होती थी। यह बात सही है कि दैनिक आहार की खेती पर ज्यादा जोर दिया जाता था परंतु इसका मतलब यह नहीं था कि मध्यकालीन भारत में खेती केवल गुजारा करने के लिए की जाती थी। विभिन्न स्रोतों से हमें जिन्स ए कामिल जेसी सर्वोत्तम फसलें मिलती हैं। कपास और गन्ना जिन्स ए कामिल फसलों का उदाहरण थी। मुगल राज्य में भी किसानों को ऐसी फसलों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था। तिलहन दलहन तथा चीनी नगदी फसलों के अंतर्गत आती थी। इस बात से यह अनुमान लगाया जाता है कि एक औसत किसान की जमीन पर पेट भरने के लिए होने वाले उत्पादन और व्यापार के लिए किए जाने और उत्पादन एक दूसरे से संबंधित थे।

प्रश्न 4. 16वीं और 17वीं सदी में जंगल वासियों की जिंदगी किस तरह बदल गई?

उत्तर– 16वीं और 17वीं सदी में जंगल वासियों की जिंदगी काफी हद तक बदल गई। जंगलों से प्राप्त उत्पाद जैसे शहद लाह तथा मधुमोम की बहुत अधिक मांग थी। लाख जैसे कुछ वस्तुएं तो 17 वीं सदी में भारत से समुद्री पार होने वाले निर्यात के मुख्य वस्तुएं थी। इस पार के तहत वस्तुओं का आदान प्रदान भी होता था। कुछ कबीले भारत और अफगानिस्तान के बीच होने वाले जमीनी व्यापार में लगे हुए थे जैसे कि पंजाब का लोहनी कबीला। इस कबीले के लोग गांव और शहर के बीच होने वाले व्यापार में लगे हुए थे। सामाजिक कारणों का असर एवं व्यवसायिक खेती का असर जंगल वासियों के जिंदगी पर भी पड़ता था। कबीला व्यवस्था से राज तांत्रिक प्रणाली की तरफ संक्रमण बहुत पहले ही प्रारंभ हो चुका था। परंतु ऐसा लगता है कि 16 वीं सदी में आकर ही यह प्रक्रिया पूरी तरह विकसित हुई । इन बातों की जानकारी हमें उत्तर पूर्वी क्षेत्र में कबीला राज्य के बारे में आईने अकबरी की बातों से मिलती है। जंगल में कई कबीले रहते थे। इनका एक सरदार होता था।

कुछ राजा बन गए तथा उन्होंने सेना तैयार की। सिंध इलाके के कबीला सेना में 6000 घुड़सवार और 7000 पैदल सिपाही होते थे। 16 वी शताब्दी में भी राजतंत्र प्रणाली विकसित हुई। जैसे की अहोम राजा।

प्रश्न 5. मुगल काल में मुद्रा व्यापार की महत्त्व की विवेचना कीजिए?

उत्तर– मुगल काल में भारत के समुद्र व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई और कई नए कार्यों की शुरुआत हुई। लगातार इस बढ़ते व्यापार के कारण भारत से दिखने वाले वस्तुओं के भुगतान के रूप में एशिया में भारी मात्रा में चांदी आई। इस चांदी का एक बड़ा हिस्सा भारत में पहुंच गया। यह भारत के लिए एक अच्छी बात थी क्योंकि यहां चांदी के प्राकृतिक भंडार नहीं थे 16वीं 18वीं शताब्दी के बीच भारत में धातु मुद्रा विशेषकर चांदी के रुपयों की उपलब्धि में स्थितिरता बनी रही। इस प्रकार उद्योग जगत में इस काल में विशेष वृद्धि हुई। इटली का एक यात्री जोवानी कारेरि जो लगभग 1690 ईस्वी में भारत से गुजरा था ने इस बात का सजीव चित्रण किया है कि किस प्रकार चांदी संसार से भारत में पहुंची थी। गांव में भी लेनदेन की व्यापार में वृद्धि हुई । गांव के शहरी रोजगार से जुड़े कारोबार में वृद्धि हुई और इस प्रकार गांव मुद्रा बाजार का अंग बन गए। लेनदेन के कारोबार के कारण उनका दैनिक भुगतान सरल हो गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. आपके मुताबिक कृषि समाज में सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों को प्रभावित करने में जाति किस हद तक एक कारक थी?

उत्तर– कठोर जाति व्यवस्था भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी। समाज अनेक जातियां तथा उप जातियों में विभक्त था जिनकी संख्या 2,000 से अधिक थी। उच्च जाति के लोग निम्न जातियों से घृणा करते थे तथा उनसे किसी प्रकार का संबंध नहीं रखते थे निम्न जातियों के लोग मुख्य रूप से शूद्र जिनकी संख्या हिंदू जनसंख्या का 20% थी उच्च जातीय हिंदुओं द्वारा अछूत समझे जाते थे।

व्यवसाय जाति के आधार पर निर्धारित किए जाते थे। स्वाभाविक रूप से कृषि समाज में सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों के निर्धारण में जाति की महत्वपूर्ण भूमिका थी। जाति एवं जातिगत भेदभाव ने खेतिहर किसानों को अनेक भागों में विभक्त कर दिया था। हालांकि कृषि योग्य भूमि का अभाव नहीं था तथापि कुछ जातियों के लोगों से निम्न समझे जाने के कारण कार्य ही करवाए जाते थे।

खेतों की जुताई का कार्य अधिकांश ऐसे लोगों से करवाया जाता था जो उच्च जातीय हिंदुओं द्वारा निम्न समझे जाने वाले कार्यों को करते थे। उच्च जातीय हिंदू शुद्र से घृणा करते थे और उनके साथ किसी प्रकार का सामाजिक मेलजोल नहीं रखते थे। हिंदुओं के घनिष्ठ संपर्क में रहते रहते मुसलमानों में भी जातीय भेदभाव का प्रसार होने लगा था। निम्न जाति है हिंदुओं के समान निम्न जाति मुसलमानों को भी गरीबी और तंगहाली का जीवन जीना पड़ता था।

निम्न जातियों से संबंधित लोगों चाहे वह हिंदू हो अथवा मुसलमान न तो समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त था और ना ही उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि मध्यकालीन भारतीय समाज में जाति गरीबी सामाजिक स्तर के मध्य प्रत्यक्ष संबंध था। उदाहरण के लिए यद्यपि ग्राम पंचायत में भिन्न-भिन्न जातियों और संप्रदायों का प्रतिनिधित्व साथ है किंतु इसमें छोटे-मोटे एवं नीच काम करने वाले खेतिहर मजदूरों को कोई प्रतिनिधित्व नहीं दिया जाता था। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि कृषि समाज में सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों का निर्धारण मुख्य रूप से जाति द्वारा ही किया जाता था।

उल्लेखनीय है कि मध्यमवर्ग इस प्रकार की स्थिति नहीं थी। 17 वी सदी में मारवाड़ की किताब के अनुसार राजपूत भी किसान थे और जाट भी किंतु जाति व्यवस्था में राजपूतों का स्थान जाटों से ऊंचा था। पशुपालन और बागवानी में बढ़ते मुनाफे के कारण अहीर, गुज्जर और माली जैसे जातियां सामाजिक स्थिति में ऊपर उठी। पूर्वी इलाकों में पशुपालन और मछुआरे जातियां किसानों के सामान सामाजिक स्थिति प्राप्त करने लगी थी।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि मध्यकालीन कृषि समाज में सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों के निर्धारण में जाति का महत्वपूर्ण भाग था। किंतु हमें यह भी याद रखना चाहिए कि मध्यम क्रम में आने वाले जातियों का सामाजिक स्तर उनकी आर्थिक स्थिति में उन्नति होने के साथ-साथ उन्नत होने लगा था।

Jharkhandlab.com

प्रश्न 2. पंचायत और गांव का मुखिया किस तरह से ग्रामीण समाज का नियमन करते थे? विवेचना कीजिए।

उत्तर– 16 वीं और 17 वीं शताब्दी के काल में ग्रामीण समाज में पंचायत और मुखिया का पद बहुत महत्वपूर्ण था। ये दोनों पद ग्रामीण समाज की रीढ़ की हड्डी थी।

पंचायतों का गठन– मुगलकालीन गाँव की पंचायत गांव के बुजुर्गों की सभा होती थी । प्रायः वे गाँव के महत्वपूर्ण लोग हुआ करते थे। जिनके पास अपनी संपत्ति होती थी जिन गांव में विभिन्न जातियों के लोग रहते थे ।वहां पंचायतों में विविधता पाई जाती थी ।पंचायत का निर्णय गाँव में सब को मानना पड़ता था।

पंचायत का मुखिया– पंचायत के मुखिया को मुकद्दम या मंडल कहा जाता था। कुछ स्रोतों से प्रतीत होता है कि मुखिया का चुनाव गाँव के बुजुर्गों की आम सहमति से होता था ।चुनाव के बाद उन्हें उसकी मंजूरी जमींदार से लेनी पड़ती थी ।मुखिया तब तक अपने पद पर बना रहता था। जब तक गांव के बुजुर्गों को उस पर भरोसा था ।गांव की आय-व्यय का हिसाब किताब अपनी निगरानी में तैयार करवाना मुखिया का मुख्य काम था। इस काम में पंचायत का पटवारी उसकी सहायता करता था।

पंचायत का आम खजाना– पंचायत का खर्चा गांव की आम खजाने से चलता था इसमें हर व्यक्ति अपना योगदान देता था। इस कोष का प्रयोग बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए भी होता था ।इस कोष से ऐसे सामाजिक कार्यों के लिए भी खर्च होता था जो किसान स्वयं नहीं कर सकते थे ।जैसे कि मिट्टी के छोटे-मोटे बांध बनाना या नहर खोदना।

ग्रामीण समाज का नियमन– पंचायत का एक बड़ा काम यह देखना था कि गांव में रहने वाले सभी समुदाय के लोग अपनी जाति की सीमाओं के अंदर रहे ।पूर्वी भारत में सभी शादियां मंडल की उपस्थिति में होती थी ।जाति की अवहेलना को रोकने के लिए लोगों के आचरण पर नजर रखना गांव के मुखिया की एक महत्वपूर्ण जिम्मेवारी थी।

पंचायतों को जुर्माना लगाने तथा किसी दोषी को समुदाय से निष्कासित करने जैसे अधिकार प्राप्त थे। समुदाय से बाहर निकलना एक बड़ा कदम था जो एक सीमित समय के लिए लागू किया जाता था ।इसके अंतर्गत दंडित व्यक्ति को दिए गए समय के लिए गांव छोड़ना पड़ता था। इस दौरान वह अपनी जाति तथा व्यवसाय से हाथ धो बैठता था ।ऐसे नीतियों का उद्देश्य जातिगत रिवाजों की अवहेलना को रोकना था।

प्रश्न 3. कृषि इतिहास लिखने के लिए आइन - एं अकबरी को स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने से कौन सी समस्याएं हैं? इतिहासकार इन समस्याओं से कैसे निपटते हैं?

उत्तर– अनपढ़ किसान लेखन कार्य में असमर्थ था। ऐसे में कृषि इतिहास को जानने के लिए 16 वीं 17 वीं शताब्दी के मुगल दरबार के लेखक और कवियों की रचनाओं का सहारा लेना पड़ता था इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण अकबर के दरबारी इतिहासकार अबुल फजल का ग्रंथ आईन - ए - अकबरी है। इसमें राज्य के किसानो जमींदारो और नुमाइंदों के रिश्तों को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है।

इसका मुख्य उद्देश्य अकबर के साम्राज्य को मेलजोल रखने वाले सत्ताधारी वर्ग के रूप में पेश करना था। अबुल फजल के अनुसार मुगल राज के विरुद्ध कोई विद्रोह या किसी प्रकार के स्वायत सत्ता के दावे का असफल होना निश्चित था। किसानो के बड़े वर्ग के लिए यह एक चेतावनी थी। इस प्रकार आईन-ए-अकबरी मे किसानों के बारे में जो जानकारी मिलती है वह उच्च सत्ता वर्ग की जानकारी है।

सामान्य किसानों के बारे में विशेष विवरण नहीं है। इस अभाव की पूर्ति उन दस्तावेजों से होती है, जो मुगलों की राजधानी के बाहर की स्थानों जैसे गुजरात महाराष्ट्र और राजस्थान से मिले हैं। इन दस्तावेजों से सरकार की आमदनी का ज्ञान होता है। ईस्ट इंडिया कंपनी के दस्तावेज भी कृषि संबंधित जानकारी के साथ दी। ये दस्तावेज किसान जमींदार और राज्य के आपसी संबंधों की जानकारी देते हैं।

jharkhandlab.com

अध्याय - 9 राजा और विभिन्न वृत्तांत

मुगल दरबार (लगभग सोलहवीं और सत्रहवीं सदी)

बहुविकल्पीय प्रश्नः-

1. भारत में मुगल साम्राज्य का संस्थापक किसे माना जाता है?

A. बाबर B. हुमायूं
C. औरंगजेब D. जहांगीर

2. बाबर और इब्राहिम लोदी के बीच प्रथम पानीपत का युद्ध कब लड़ा गया था?

A. 1526 B. 1527
C. 1528 D. 1529

3. रज्मनामा के नाम से किस ग्रंथ का फारसी अनुवाद किया गया?

A. गीता B. उपनिषद
C. रामायण D. महाभारत

4. अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक धर्म कब चलाया था?

A. 1590 B. 1581
C. 1570 C. 1575

5. बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा (तुजुक-ए-बाबरी) की रचना मूल रूप से किस भाषा में किया था?

A. फारसी B. अरबी
C. तुर्की D. उर्दू

6. भारत का अंतिम मुगल सम्राट कौन था?

A. औरंगजेब B. बहादुर शाह जफर
C. फर्रूखसियर D. मोहम्मद शाह

7. किस मुगल शासक ने हिंदुओं पर से जजिया कर हटाया था?

A. बाबर B. हुमायूं
C. अकबर D. औरंगजेब

8. स्थापत्य कला का सर्वाधिक विकास किसके समय में हुआ था?

A. बाबर B. अकबर
C. शाहजहां D. जहांगीर

9. मुगलकालीन चित्रकला किसके काल में चरमोत्कर्ष पर पहुंची थी?

A. अकबर B. हुमायूं
C. जहांगीर D. शाहजहां

10. हुमायूंनामा की रचना किसने की थी?

A. अबुल फजल B. B. गुलबदन बेगम
C. हुमायूंD. D. अब्दुल लतीफ

11. अकबर ने तीर्थ यात्रा कर को कब समाप्त किया था?

A. 1562 B. 1563
C. 1564 D. 1565

12. 1576 ई० में हल्दीघाटी का युद्ध किसके बीच लड़ा गया था?

A. बाबर एवं इब्राहिम लोदी के बीच
B. बैरम खां एवं हेमू के बीच
C. अकबर एवं महाराणा प्रताप के बीच
D. हुमायूं एवं शेरशाह के बीच

13. अकबरनामा तीन जिल्दों में विभाजित है, तीसरी जिल्द को किस नाम से जाना जाता है?

A. बाबरनामा B. बादशाहनामा
C. आईन-ए-अकबरी D. हुमायूंनामा

14. बादशाहनामा की रचना किसने की थी?

A. गुलबदन बेगम
B. अब्दुल हमीद लाहौरी
C. अबुल फजल
D. अब्दुल लतीफ

15. एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल का स्थापना कब और किसने किया था?

A. सर विलियम जॉन्स 1784
B. हेनरी बेवरिज 1791
C. चार्ल्स मेटकफ 1785
D. इनमें से कोई नहीं

16. अकबरनामा का अंग्रेजी अनुवाद किसने किया था?

A. सर विलियम जॉन्स B. हेनरी बेवरिज
C. चार्ल्स मेटकफ D. जेम्स प्रिंसेप

1-16 तक के प्रश्नों का उत्तरः-

1-A,2-A,3-D,4-B,5-C,6-B,7-C,8-C,9-C,10-B,11-B,12-C,13-C,14-B, 15-A,16-B

अति लघु उत्तरीय प्रश्नः-

1. मुगल शब्द की उत्पत्ति किस प्रकार हुई?

उत्तरः- मुगल शब्द की उत्पत्ति मंगोल शब्द से हुई है मुगलों ने स्वयं इस विशेषण का प्रयोग नहीं किया क्योंकि पितृ पक्ष से वे तैमूर के वंशज थे, और तैमूरी कहलाते थे। तथा मातृ पक्ष से बाबर चंगेज खान से संबंधित था। 16 वीं सदी के यूरोपीय इतिहासकारों ने बाबर और उसके परिवार के लिए मुगल शब्द का प्रयोग किया।

2. अकबर ने किस भाषा को राज दरबार की मुख्य भाषा बनाया और क्यों?

उत्तर- अकबर ने फ़ारसी को राज दरबार की मुख्य भाषा बनाया था। इसके लिए अकबर को संभवतः ईरान के साथ सांस्कृतिक और बौद्धिक संपर्कों, मुगल दरबार में पद पाने के इच्छुक ईरानी तथा मध्य एशियाई प्रवासियों ने बादशाह को इस भाषा को अपनाए जाने के लिए प्रेरित किया होगा।

Jharkhandlab.com

3. दो संस्कृत ग्रंथों के नाम बताओ जिनका मुगलकाल में फ़ारसी में अनुवाद हुआ।

उत्तर- रामायण तथा महाभारत। फारसी अनुवाद होने के पश्चात महाभारत का नाम रज्मनामा रखा गया।

4. सुलेखन की 'नस्तलिक' शैली क्या थी?

उत्तर नस्तलिक अकबर की मनपसंद लेखन शैली थी। यह एक ऐसी तरल शैली थी जिसे लंबे सपाट प्रभावी ढंग से लिखा जाता था। इसे लिखने के लिए सरकंडे की 5 से 10 मिलीमीटर की नोक वाली एक कलम तथा स्याही का प्रयोग किया जाता था। सामान्यतः कलम की नोक के बीच एक छोटा-सा चीरा लगा दिया जाता था, ताकि वह स्याही को आसानी से सोख ले।

5. अकबर द्वारा अपनाए गए सुलह-ए-कुल की नीति से क्या समझते हैं?

उत्तर अकबर ने अपने विशाल साम्राज्य में एकता एवं शांति स्थापित करने के लिए सुलह-ए-कुल की नीति अपनाई थी। अकबर ने अपने सभी अधिकारियों को प्रशासन में सुलह ए कुल की नीति अपनाने का निर्देश दिए थे और साम्राज्य के सभी संप्रदाय के लोगों के साथ आपसी भाईचारे एवं प्रेम भाव का व्यवहार करने का आदेश दिया था।

6. सबसे महान मुग़ल सम्राट किसे माना जाता है?

उत्तर जलालुद्दीन अकबर (1556-1605) को सबसे महान् मुगल शासक माना जाता है क्योंकि उसने न केवल साम्राज्य का विस्तार किया बल्कि उसे सुदृढ़ और समृद्ध भी बनाया। उन्होंने अपने साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार हिंदुकुश पर्वत तक करने में सफल रहा।

7. भारत में मुग़ल राजवंश का अंत किस प्रकार हुआ?

उत्तर 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद मुगल शासन की केंद्रीय शक्ति कम हो गई। अतः विशाल मुग़ल साम्राज्य के स्थान पर कई क्षेत्रीय शक्तियाँ उभर आईं। लेकिन फिर भी सांकेतिक रूप से मुग़ल शासक की प्रतिष्ठा बनी रही। 1857 में इस वंश के अंतिम शासक बहादुरशाह जफर द्वितीय को अंग्रेजों ने उखाड़ फेंका। इस प्रकार मुग़ल वंश का अंत हो गया।

8. मनसबदारी प्रथा से क्या समझते हैं?

उत्तर- मनसबदारी फारसी भाषा के मनसब शब्द से बना है जिसका अर्थ पद या ओहदा होता है। जिस व्यक्ति को सम्राट द्वारा यह पद दिया जाता था उसे मनसबदार कहा जाता था। इस प्रथा को मुगल सम्राट अकबर ने अपने शासन व्यवस्था को सुदृढ़ प्रदान करने हेतु लागू किया था।

लघु उत्तरीय प्रश्नः-

1. मुगल दरबार में पांडुलिपि तैयार करने की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।

उत्तर मुग़ल दरबार में पांडुलिपि की रचना का मुख्य केंद्र शाही किताबखाना था। यह दरअसल एक लिपिघर था, जहाँ बादशाह की पांडुलिपियों का संग्रह रखा जाता था तथा नई पांडुलिपियों की रचना की जाती थी। पांडुलिपियों की रचना में विविध प्रकार के कार्य करने वाले लोग शामिल होते थे- कागज बनाने वाले, पांडुलिपि के पन्ने तैयार करने वाले, पाठ की नकल करने के लिए सुलेखक, पृष्ठों को चमकाने के लिए कोफ़्तगार, पाठ के दृश्यों को चित्रित करने के लिए चित्रकार, चित्रकारों की पाठ से दृश्यों को चित्रित करने के लिए और जिल्दसाजों की प्रत्येक पन्नों को इकठ्ठा कर उसे अलंकृत आवरण में बैठाने के लिए आवश्यकता होती थी। तैयार पांडुलिपि को एक बहुमूल्य वस्तु, बौद्धिक संपदा, और सौंदर्य के कार्य के रूप में देखा जाता था। वास्तव में ये आकर्षक पांडुलिपियाँ अपने संरक्षक मुग़ल बादशाह की शक्ति को दर्शाती थी।

2. मुग़ल दरबार से जुड़े दैनिक कर्म और विशेष उत्सवों के दिनों ने किस तरह से बादशाह की सत्ता/शक्ति को प्रतिपादित किया होगा?

उत्तर मुगल दरबार से जुड़े दैनिक कार्यों तथा विशेष उत्सवों का मुख्य केंद्र बिंदु बादशाह ही होता था अतः प्रत्येक कार्य तथा उत्सव बादशाह की शक्ति तथा सत्ता को ही प्रतिपादित करता था। इसे इस तरह से समझा जा सकता है-

1. राजदरबार में अनुशासन- दरबार में सभी दरबारियों का स्थान बादशाह द्वारा ही निर्धारित किया जाता था। दरबार में किसी की हैसियत इस बात से निर्धारित होती थी कि वह शासक के कितना पास और दूर बैठा है। जब बादशाह सिंहासन पर बैठ जाता था तो किसी को भी अपनी जगह से कहीं और जाने की अनुमति नहीं होती थी। न ही कोई बादशाह की अनुमति के बिना दरबार से बाहर जा सकता था दरबार के नियमों का उल्लंघन करने वालों को तुरंत दंडित किया जाता था।
2. अभिवादन करने के तरीके- शासक को किए गए अभिवादन का तरीका व्यक्ति के दर्जे को दर्शाता था। अधिक झुककर अभिवादन करने वाले व्यक्ति का दर्जा अधिक ऊँचा माना जाता था। आत्मनिवेदन का उच्चतम रूप सिजदा या दंडवत लेटना था। शाहजहाँ के शासनकाल में इन तरीकों के स्थान पर चार तसलीम तथा जमींबोसी (जमीन चूमना) के तरीके अपनाए गए।
3. झरोखा दर्शन- यह प्रथा अकबर ने आरंभ की थी। इसके अनुसार बादशाह अपने दिन का आरंभ सूर्योदय के समय कुछ व्यक्तिगत धार्मिक प्रार्थनाओं से करता था। इसके बाद वह पूर्व की ओर मुँह किए एक छोटे छज्जे अर्थात् झरोखे में आता था। इसके नीचे लोगों की भीड़ बादशाह की एक झलक पाने के लिए इंतज़ार कर रही होती थी इसे झरोखा दर्शन कहते थे। इसका उद्देश्य शाही सत्ता के प्रति जन विश्वास को बढ़ावा देना था।।
4. विशिष्ट अवसर पर दरबार का माहौल- सिंहासनारोहण की वर्षगाँठ, ईद, शब-ए- बारात तथा होली जैसे विशिष्ट अवसरों पर दरबार का वातावरण जीवंत हो उठता था। इसके अतिरिक्त मुग़ल शासक वर्ष में तीन मुख्य त्योहार मनाया करते थे-सूर्यवर्ष और चंद्रवर्ष के अनुसार शासक का जन्मदिन तथा वसंतागमन पर फ़ारसी नववर्ष नौरोज़। जन्मदिन पर शासक को विभिन्न वस्तुओं से तोला जाता था तथा बाद में ये वस्तुएँ दान में बाँट दी जाती थीं।

3. मुग़ल साम्राज्य में शाही परिवार की स्त्रियों द्वार निभाई गई भूमिका का मूल्यांकन कीजिए?

उत्तर मुगल परिवार में बादशाह की पत्नियाँ और उपलब्धियाँ उसके नजदीकी तथा दूर के रिश्तेदार महिला सेविकाएँ

sharkhandiab.com

तथा गुलाम होते थे। शासक वर्गों में बहुविवाह प्रथा व्यापक रूप से प्रचलित थी।

मुगल परिवार में शाही परिवारों से आने वाली स्त्रियों (बेगमों) तथा अन्य स्त्रियों (अगहा) जो कुलीन परिवारों में से नहीं थीं, में अंतर रखा जाता था। दहेज (मेहर) के रूप में (पर्याप्त नकदी और बहुमूल्य वस्तुएँ लाने वाली बेगमों को अपने पतियों से स्वाभाविक रूप से अगहाओं की तुलना में अधिक ऊँचा दर्जा और सम्मान दिया जाता था। राजतंत्र से जुड़ी महिलाओं में उपपत्नियों (अगाचा) की स्थिति सबसे निम्न थी। इन्हें नकद मासिक भत्ता तथा अपने- अपने दर्जे के अनुसार उपहार मिलते थे।

वंश आधारित पारिवारिक ढाँचा पूरी तरह स्थायी नहीं था। यदि पति की इच्छा हो और उसके पास पहले से ही चार पत्नियाँ न हों तो अगहा और अगाचा भी बेगम की स्थिति पा सकती थीं। ऐसी स्त्रियों को प्रेम तथा मातृत्व विधिवत् रूप से विवाहित पत्नियों के दर्जे तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते थे।

'गुलाम- पत्नियों के अतिरिक्त मुग़ल परिवार में अनेक महिला तथा पुरुष गुलाम होते थे। वे साधारण से साधारण कार्यों से लेकर कौशल, निपुणता तथा बुद्धिमत्ता के कार्य करते थे गुलाम हिजड़े (ख्वाजासर) परिवार के अंदर और बाहर के जीवन में रक्षक, नौकर और व्यापार में दिलचस्पी लेने वाली महिलाओं के एजेंट होते थे। नूरजहां के बाद मुगल परिवार में अनेक महिला तथा पुरुष मुगल रानियों और राजकुमारियों ने महत्वपूर्ण वित्तीय स्रोतों पर नियंत्रण रखना शुरू कर दिया।शाहजहां की पुत्रियों जहांआरा और रौशनआरा हुमायूं की बहन गुलबदन बेगम आदि का नाम महत्वपूर्ण है।

4. मुगल प्रांतीय प्रशासन के मुख्य अभिलक्षणों की चर्चा कीजिए। केंद्र किस तरह से प्रातों पर नियंत्रण रखता था ?

उत्तर मुगल सम्राटों की प्रांतीय शासन व्यवस्था का स्वरूप केंद्रीय शासन व्यवस्था के स्वरूप के समान ही था। प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से साम्राज्य का विभाजन प्रांतों अथवा सूबों में कर दिया गया था प्रत्येक सूबा कई सरकारों में बांटा हुआ था। प्रांतीय शासन व्यवस्था के प्रमुख अभिलक्षणों को इस प्रकार समझा जा सकता है-

1. सूबेदार- सूबेदार प्रांत का सर्वोच्च अधिकारी था। सूबे के सभी अधिकारी उसके अधीन होते थे।
2. दीवान- दीवान प्रांत का प्रमुख वित्तीय अधिकारी था।प्रान्तीय खजाने की देखभाल करना, प्रांत की आय-व्यय का हिसाब रखना, दीवानी मुकद्दमों का फैसला करना, राजस्व विभाग के कर्मचारियों के कार्यों की देखभाल करना आदि दीवान के महत्त्वपूर्ण कार्य थे।
3. बख्शी- बख्शी प्रांतीय सैन्य विभाग का प्रमुख अधिकारी था। प्रांत में सैनिकों की भर्ती करना तथा उनमें अनुशासन बनाए रखना उसके प्रमुख कार्य थे।
4. कोतवाल- प्रांत की राजधानी तथा महत्त्वपूर्ण नगरों की आंतरिक सुरक्षा, शांति एवं सुव्यवस्था तथा स्वास्थ्य और सफाई का प्रबंध कोतवाल द्वारा किया जाता था।
5. सदर और काज़ी- प्रांत में सदर और काजी का पद सामान्यतः एक ही व्यक्ति को दिया जाता था। सदर के रूप में वह प्रजा के नैतिक चरित्र की देखभाल करता था और काजी के रूप में वह प्रांत का मुख्य न्यायाधीश था।
6. शासन के प्रत्येक विभाग के पास लिपिकों का एक बड़ा सहायक समूह, लेखाकार, लेखा परीक्षा, संदेशवाहक और अन्य कर्मचारी होते थे जो तकनीकी रूप से दक्ष अधिकारी थे ये लिखित आदेश व वृत्तांत तैयार करते थे।

मुगल सम्राटों ने प्रांतों पर केन्द्र का नियंत्रण बनाए रखने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठाए थे

1. सम्राट स्वयं प्रांतीय प्रशासन में पर्याप्त रुचि लेता था।
2. प्रांत के प्रमुख अधिकारी सूबेदार की नियुक्ति स्वयं सम्राट के द्वारा की जाती थी और वह सम्राट के प्रति ही उत्तरदायी होता था।
3. प्रशासनिक कार्यकुशलता को बनाए रखने तथा सूबेदार की शक्तियों में असीमित वृद्धि को रोकने के उद्देश्य से प्रायः तीन या पाँच वर्षों के बाद सूबेदार का एक प्रांत से दूसरे प्रांत में तबादला कर दिया जाता था।
4. प्रांतों में कुशल गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना की गई थी। परिणामस्वरूप प्रान्तीय प्रशासन से सम्बन्धित सभी सूचनाएँ सम्राट को मिलती रहती थीं।
5. सम्राट द्वारा समय-समय पर स्वयं प्रांतों का भ्रमण किया जाता था।

5. इतिवृत्त से आप क्या समझते हैं? इनका मुख्य उद्देश्य क्या था ?

उत्तर इतिवृत्त मुख्य रूप से मुगल काल में लिखे गये दस्तावेज थे। ये दस्तावेज प्रमुख रूप से मुगल बादशाहों द्वारा लिखवाये जाते थे।

मुगल बादशाहों द्वारा तैयार कराए गए इतिवृत्त साम्राज्य और उसके दरबार के अध्ययन के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

इतिवृत्तों की रचना के मुख्य उद्देश्य-

1. शासक की भावी पीढ़ी को शासन की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाना।
2. मुगल शासकों के विरोधियों को चेतावनी देना तथा यह बताना कि विद्रोह का परिणाम असफलता है। इतिवृत्तों के लेखक मुख्यतः दरबारी होते थे इतिवृत्तों के मुख्य विषय थे-शासनकाल की घटनाएँ, शासक का परिवार, दरबार तथा अभिजात्यवर्ग, युद्ध आदि।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. उदाहरण सहित मुगल इतिहास के विशिष्ट अभिलक्षणों पर चर्चा कीजिए।

उत्तरः- मुगल सम्राटों की धारणा थी कि परम शक्ति द्वारा उनका कार्य विशाल एवं जातीय जनता पर शासन करने के लिए किया गया था। मुगल सम्राटों ने अपने भव्यता एवं शालीनता के लेखन कार्य को अपने दरबारी इतिहासकारों को सौपा। जिन्होंने यह कार्य विद्वतापूर्वक संपन्न किया। और उन्होंने बादशाह या सम्राट के काल में घटित होने वाली घटनाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

मुगल इतिवृत्तों या इतिहासों के प्रमुख लक्षण :

1. मुगल इतिवृतों के लेखक दरबारी इतिहासकार थे।

Jharkhandlab.com

उन्होंने मुगल शासकों के संरक्षण में इतिवृत्तों की रचना की। अतः स्वाभाविक रूप से शासक पर केंद्रित घटनाएँ, शासक का परिवार, दरबार और अभिजात वर्ग के लोग, युद्ध और प्रशासनिक व्यवस्थाएँ उनके द्वारा लिखे जाने वाले इतिहास के केन्द्रीय विषय थे अकबर, शाहजहाँ और औरंगजेब की जीवन कथाओं पर आधारित इतिवृतों में अकबरनामा, शाहजहाँनामा और आलमगीरनामा जैसे शीर्षक इस तथ्य के प्रतीक हैं कि इनके लेखकों की दृष्टि में बादशाह का इतिहास ही साम्राज्य व दरबार का इतिहास था।

2. इतिवृत्त हमें मुगल राज्य संस्थाओं के विषय में तथ्यात्मक सूचनाएँ प्रदान करते हैं तथा उन आशयों का भी परिचय देते हैं, जिन्हें मुगल शासक अपने साम्राज्य में लागू करना चाहते थे।

3. मुगल इतिवृत्तों का एक महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण साम्राज्य के अंतर्गत आने वाले सभी लोगों के सामने एक मजबूत और समृद्धराज्य की छवि को प्रस्तुत करना था।

4. इतिवृतों का एक अन्य अभिलक्षण मुगल शासन का विरोध करने वाले लोगों को यह स्पष्ट रूप से बता देना था कि साम्राज्य की शक्ति के सामने उनके सभी विरोधों का असफल हो जाना सुनिश्चित था।

5. मुगल इतिवृत्तों का एक अन्य महत्त्वपूर्ण अभिलक्षण भावी पीढ़ियों को शासन का विवरण उपलब्ध करवाना था

6. मुगल इतिवृत्तों का एक प्रमुख अभिलक्षण उनकी रचना फारसी भाषा में किया जाना था। मुगलकाल में सभी दरबारी इतिहास फ़ारसी भाषा में लिखे गए थे। उल्लेखनीय है कि मुगल चगताई मूल के थे। अतः उनकी मातृभाषा तुर्की थी, किन्तु अकबर ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए फारसी को राजदरबार की भाषा बनाया प्रारंभ में फारसी राजा, शाही परिवार और दरबार के विशिष्ट सदस्यों की ही भाषा थी। किंतु शीघ्र ही यह सभी स्तरों पर प्रशासन की भाषा बन गई। अतः लेखाकार, लिपिक तथा अन्य अधिकारी भी इस भाषा का ज्ञान प्राप्त करने लगे। फारसी भाषा में अनेक स्थानीय मुहावरों का प्रवेश हो जाने से इसका भारतीयकरण होने लगा। फ़ारसी और हिन्दवी के पारस्परिक सम्पर्क से एक नई भाषा का जन्म हुआ, जिसे हम 'उर्दू' के नाम से जानते हैं।

7. मुगल इतिवृत्तों का एक अन्य अभिलक्षण उनके रंगीन चित्र हैं। मुगल पांडुलिपियों की रचना में अनेक चित्रकारों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। एक मुगल शासक के शासनकाल में घटित होने वाली घटनाओं का विवरण देने वाले ऐतिहासिक ग्रंथों में लिखित पाठ के साथ-साथ उन घटनाओं को चित्रों के माध्यम से दृश्य रूप में भी व्यक्त किया जाता था। हमें याद रखना चाहिए कि चित्रों का अंकन केवल किसी पुस्तक के सौंदर्य में वृद्धि करने वाली सामग्री के रूप में ही नहीं किया जाता था। वास्तव में, चित्रांकन ऐसे विचारों के संप्रेषण का भी एक शक्तिशाली माध्यम माना जाता था, जिन्हें लिखित माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता था। उदाहरण के लिए, राजा और राजा की शक्ति के विषय में जिन बातों को लेखबद्ध नहीं किया जा सकता था, उन्हें चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया जाता था !

2. मुग़ल अभिजात वर्ग के विशिष्ट अभिलक्षण क्या थे? बादशाह के साथ उनके संबंध किस तरह बने?

उत्तरः- मुग़ल राज्य का महत्त्वपूर्ण स्तम्भ अधिकारियों का दल था जिसे इतिहासकारों ने सामूहिक रूप से अभिजात वर्ग की संज्ञा से परिभाषित किया है। अभिजात वर्ग में भर्ती विभिन्न नृजातीय तथा धार्मिक समूहों से होती थी। इससे यह सुनिश्चित हो जाता था कि कोई भी दल इतना बड़ा न हो कि वह राज्य की सत्ता को चुनौती दे सके। मुगलों के अधिकारी वर्ग को गुलदस्ते के रूप में वर्णित किया जाता था जो वफ़ादारी से बादशाह के साथ जुड़े हुए थे।

साम्राज्य के आरंभिक चरण से ही तुरानी और ईरानी अभिजात अकबर की शाही सेवा में उपस्थित थे। इनमें से कुछ हुमायूँ के साथ भारत चले आए थे। कुछ अन्य बाद में मुगल दरबार में आए थे।

1560 से आगे भारतीय मूल के दो शासकीय समूहों- राजपूतों व भारतीय मुसलमानों (शेखजादाओं) ने शाही सेवा में प्रवेश किया। इनमें नियुक्त होने वाला प्रथम व्यक्ति एक राजपूत मुखिया आंबेर का राजा भारमल कछवाहा था। जिसकी पुत्री से अकबर का विवाह हुआ था।

शिक्षा और लेखाशास्त्र की ओर झुकाव वाले हिंदू जातियों के सदस्यों को भी पदोन्नत किया जाता था। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण अकबर के वित्तमंत्री टोडरमल का है जो खत्री जाति का था। जहाँगीर के शासन में ईरानियों को उच्च पद प्राप्त हुए। जहाँगीर की राजनीतिक रूप से प्रभावशाली रानी नूरजहाँ (1645) ईरानी थी औरंगजेब ने राजपूतों को उच्च पदों पर नियुक्त किया।

फिर भी शासन में अधिकारियों के समूह में मराठे अच्छी-खासी संख्या में थे। अभिजात वर्ग के सदस्यों के लिए शाही सेवा शक्ति, धन तथा उच्चतम प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक जरिया थी। सेवा में आने का इच्छुक व्यक्ति एक अभिजात के जरिए याचिका देता था जो बादशाह के सामने तजवीज प्रस्तुत करता था। अगर याचिकाकर्ता को सुयोग्य माना जाता था तो उसे मनसब प्रदान किया जाता था। मीरबख्शी (उच्चतम वेतन दाता) खुले दरबार में बादशाह के दाएँ ओर खड़ा होता था तथा नियुक्ति और पदोन्नति के सभी उम्मीदवारों को प्रस्तुत करता था, जबकि उसका कार्यालय उसकी मुहर व हस्ताक्षर के साथ-साथ बादशाह की मुहर व हस्ताक्षर वाले आदेश तैयार करता था।

केंद्र में दो अन्य महत्वपूर्ण मंत्री थे दीवान ए आला (वित्त मंत्री) और सद्र उस सुदूर (मदद ए मास अथवा अनुदान विभाग का मंत्री और स्थानीय न्यायाधीशों अथवा काजियों की नियुक्ति का प्रभारी) यह तीन मंत्री कभी-कभी इकट्ठे एक सलाहकार निकाय के रूप में काम करते थे लेकिन यह एक दूसरे से स्वतंत्र होते थे। अकबर ने इन तथा अन्य सलाहकारों के साथ मिलकर साम्राज्य की प्रशासनिक राजकोषीय और मौद्रिक संस्थाओं को आकार प्रदान किया।

दरबार में नियुक्त (तैनात ए रकाब) अभिजातों का एक ऐसा समूह था जिसे किसी भी प्रान्त या सैन्य अभियान में प्रतिनियुक्त किया जा सकता था। वह शासक और उसके घराने की सुरक्षा भी करता था।

3. राजत्व के मुग़ल आदर्श का निर्माण करने वाले तत्वों की पहचान कीजिए।

उत्तर- राजत्व के मुग़ल आदर्श का निर्माण करने वाले मुख्य तत्व को निम्नलिखित रूपों से समझा जा सकता है:-

1. राजा दैवीय शक्ति का प्रतीक- दरबारी इतिहासकारों ने कई साक्ष्यों द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मुग़ल राजाओं को सीधे ईश्वर से शक्ति प्राप्त हुई थी। उनके द्वारा वर्णित दंतकथाओं में से एक कथा मंगोल रानी अलानकुआ की है। वह अपने शिविर में आराम करते समय सूर्य की एक किरण द्वारा गर्भवती हुई थी। उसकी संतान पर इसी दैवीय प्रकाश का प्रभाव था। यह प्रकाश पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा। अबुल फ़ज़ल ने ईश्वरीय प्रकाश को ग्रहण करने वाली चीजों में मुग़ल राजत्व को सबसे ऊँचा स्थान दिया। इस विषय में वह प्रसिद्ध ईरानी-सूफ़ी शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी के विचारों से प्रभावित था जिन्होंने सर्वप्रथम यह विचार प्रस्तुत किया था। इस विचार के अनुसार यह दैवीय प्रकाश राजा में संप्रेषित होता था जिसके फलस्वरूप राजा अपनी प्रजा का आध्यात्मिक मार्गदर्शक बन जाता था । सत्रहवीं शताब्दी से मुग़ल कलाकारों ने बादशाहों को प्रभामंडल के साथ चित्रित करना आरंभ कर दिया। ये प्रभामंडल ईश्वर के प्रकाश के प्रतीक थे। इन प्रभामंडलों को कलाकारों ने ईसा तथा वर्जिन मैरी से लिया था।

2. सुलह-ए-कुलः एकीकरण का एक स्रोत - मुग़ल इतिवृत्त मुगल साम्राज्य को हिंदुओं, जैनियों, पारसियों, मुसलमानों आदि अनेक नृजातीय एवं धार्मिक समुदायों के समूह के रूप में प्रस्तुत करते हैं। बादशाह शांति और स्थायित्व के स्रोत रूप में इन सभी समूहों से ऊपर होता था। वह इनके बीच मध्यस्थता करता था और यह सुनिश्चित करता था कि राज्य में न्याय और शांति बनी रहे। अबुल फ़ज़ल सुलह-ए-कुल (शांति) के आदर्श को प्रबुद्ध शासन का आधार बताता है। सुलह-ए- कुल में यूँ तो सभी धर्मों और मतों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता थी परंतु इसकी एक शर्त यह थी कि वे राज्य सत्ता को क्षति नहीं पहुँचाएँगे और आपस में नहीं लड़ेंगे।

सुलह-ए-कुल का आदर्श राज्य नीतियों के माध्यम से लागू किया गया। मुग़लों के अधीन अभिजात वर्ग एक मिश्रित वर्ग था। इसमें ईरानी तूरानी, अफ़गानी, राजपूत, दक्खनी सभी शामिल थे। इन्हें दिए गए पद और पुरस्कार पूरी तरह से राजा के प्रति उनकी सेवा और निष्ठा पर आधारित थे। इसके अतिरिक्त अकबर ने 1563 में तीर्थयात्रा कर तथा 1564 में जजिया को समाप्त कर दिया। क्योंकि ये दोनों कर धार्मिक पक्षपात के प्रतीक थे। साम्राज्य के सभी अधिकारियों को प्रशासन में सुलह-ए-कुल के नियम का अनुपालन करने के लिए निर्देश भी दिए गए।सभी मुग़ल बादशाहों ने विभिन्न धर्मों के पूजा-स्थलों के निर्माण तथा रख-रखाव के लिए अनुदान दिए । यहाँ तक कि युद्ध के दौरान नष्ट किए मंदिरों की मरम्मत के लिए अनुदान जारी किए जाते थे।

3. सामाजिक अनुबंध के रूप में तथा न्यायपूर्ण प्रभुसत्ताः- अबुल फ़ज़ल ने प्रभुसत्ता को एक सामाजिक समझौते के रूप में प्रस्तुत किया है। उसके अनुसार बादशाह अपनी प्रजा के अस्तित्व की रक्षा करता है:जीवन (जन), धन (माल), सम्मान (नामस) और विश्वास (दीन)। इसके बदले में वह आज्ञापालन तथा संसाधनों में राज्य के हिस्से की माँग करता है।

केवल न्यायपूर्ण संप्रभु (सम्राट्) ही शक्ति और दैवीय मार्गदर्शन द्वारा इस अनुबंध का सम्मान कर पाते थे। न्याय के विचार को मुग़ल राजतंत्र में सर्वोत्तम सद्गुण माना गया। इस विचार को दृश्य रूप में देने के लिए निरूपण हेतु अनेक प्रतीकों की रचना की गई। इन प्रतीकों में से कलाकारों का सबसे मनपसंद प्रतीक था- एक-दूसरे के साथ चिपटकर शांतिपूर्वक बैठे हुए शेर और बकरी या गाय इसका उद्देश्य यह दिखाना था कि मुग़ल राज्य में दुर्बल तथा सबल सभी प्रेमपूर्वक रह सकते हैं। बादशाहनामा के दरबारी दृश्यों में ऐसे प्रतीक का अंकन बादशाह के सिंहासन के ठीक नीचे एक आले में हुआ है।

4. अकबर की धार्मिक नीति का वर्णन करें।

उत्तर अकबर ने अपने साम्राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनायी। 1562 ई. में अकबर ने युद्ध बन्दियों को दास बनाने की प्रथा पर रोक लगायी। 1563 ई. में अकबर ने तीर्थ यात्रा कर को समाप्त किया। धार्मिक प्रश्नों पर वाद-विवाद करने के लिये अकबर ने फतेहपुर सीकरी में 1575 ई. में इबादतखाना का निर्माण कराया। 1579 ई. में अकबर ने महजर की घोषणा की। इसके द्वारा किसी भी विवाद पर अकबर की राय ही अन्तिम राय होगी।

अकबर ने अपना ज्ञान बढ़ाने के लिये विभिन्न धर्मों के विद्वानों से उनके धर्म की जानकारी ली-

1. हिन्दू धर्म के पुरुषोत्तम एवं देवी से हिन्दू धर्म की जानकारी प्राप्त की। हिन्दू धर्म से प्रभावित होकर वह माथे पर तिलक लगाने लगा। उसने हिन्दू धर्म की पुस्तकों का अनुवाद करवाया।
2. पारसी धर्म के दस्तूर मेहर जी राणा से पारसी धर्म की जानकारी ली। इससे प्रभावित होकर उसने सूर्य की उपासना आरम्भ की। दरबार में हर समय अग्नि जलाने की आज्ञा दी।
3. अकबर ने जैन धर्म की शिक्षा आचार्य शांतिचन्द एवं हीर विजय सूरी से ली।
4. सिख धर्म से प्रभावित होकर पंजाब का एक वर्ष का कर माफ कर दिया।
5. ईसाई धर्म से प्रभावित होकर आगरा एवं लाहौर में गिरजाघर का निर्माण कराया।

इस प्रकार सत्य की खोज करते-करते उन्होंने पाया कि सभी धर्मों में अच्छाइयाँ हैं मगर कोई भी धर्म सम्पूर्ण नहीं है। अतः उसने 1581 ई में स्वयं का एक धर्म दीन-ए-इलाही चलाया। इस धर्म के द्वारा वह हिन्दू व मुस्लिम धर्म को मिलाकर साम्राज्य में राजनीतिक एकता कायम करना चाहता था। उस धर्म को स्वीकार करने वाला एकमात्र हिन्दू बीरबल था।

1564 ई. में अकबर ने जजिया कर बन्द कर दिया था। यह समस्त भारत की गैर-मुस्लिम जनता से वसूला जाता था।

अकबर ने सुलह-ए-कुल की नीति अपनायी। इस नीति के द्वारा अकबर ने अपने साम्राज्य में शांति एवं एकता स्थापित करने का प्रयास किया । अबुल फजल सुलह ए-कूल के आदर्श को प्रबुद्ध शासन की आधारशिला मानता था। सभी अधिकारियों को प्रशासन में सुलह-ए-कुल की नीति अपनाने के निर्देश दिये गये।

Jharkhandlab.com

5. मुगल सम्राट अकबर को भारत का राष्ट्रीय शासक के रुप में वर्णन करें।

उत्तर- अकबर को भारत का राष्ट्रीय सम्राट भी कहा जाता है। उसके शासनकाल में भारत में राजनैतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकता एवं सामंजस्य की स्थापना हुई तथा भारत एक राष्ट्र के रूप में उभरा।

अकबर ने अपनी विजय उपलब्धियों द्वारा एक विशाल साम्राज्य की स्थापना करके उसे प्रशासनिक आधार भी प्रदान किया। उसने अपने संपूर्ण साम्राज्य में एक जैसी शासन प्रणाली स्थापित की। उसकी प्रांतीय शासन व्यवस्था, राजस्व व्यवस्था, भू व्यवस्था, न्याय-व्यवस्था आदि सभी व्यवस्थाएँ संपूर्ण साम्राज्य में एक समान थीं। सैनिक तथा असैनिक सेवाओं में सभी पद सबके लिए समान रूप से खुले थे।राजपूत राज्यों से समानता के आधार पर वैवाहिक संबंध स्थापित करके अकबर ने वीर राजपूत जाति का सक्रिय सहयोग प्राप्त कर लिया।

एक राष्ट्रीय शासक के रूप में अकबर की दूसरी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि देश में सामाजिक एवं आर्थिक एकता की स्थापना थी। उसने अपनी समस्त प्रजा को बिना किसी भेदभाव के समान नागरिकता एवं सुविधाएँ प्रदान कीं। राजस्व व्यवस्था अथवा भू- कर प्रणाली के क्षेत्र में हिन्दू-मुसलमानों में कोई भेदभाव नहीं किया गया। व्यापार अथवा व्यापारिक करों के क्षेत्र में भी धर्म अथवा जाति को आधार नहीं बनाया गया और न ही न्याय अथवा दंड देने के समय हिन्दू-मुसलमान में कोई भेदभाव किया गया।

शाही दरबार में होली, दीपावली, दशहरा, बसंत और नौरोज जैसे त्योहारों को समान रूप से मनाकर अकबर ने सामाजिक एकता की पहचान दी। धार्मिक एकता की स्थापना करने के लिए अकबर ने राजनीति को धर्म से पृथक् करके देश में धर्मनिरपेक्ष राज्य की स्थापना की। स्वयं मुसलमान होते हुए भी उसने प्रत्येक धर्म के आदर्शों का पालन किया।

केवल इतना ही नहीं, देश में धार्मिक एकता का वातावरण उत्पन्न करने के लिए और अकबर ने 'दीन-ए-इलाही' नामक स्वयं का एक संघ स्थापित किया, जिसमें सभी धर्मों के सराहनीय तत्व समाहित थे। जिसमें बिना किसी भेदभाव के सभी के लिए द्वार खुले थे।

हिन्दू-मुसलमानों में परस्पर निकटता स्थापित करने के लिए उसने फ़ारसी को समस्त साम्राज्य की सरकारी भाषा बना दिया। अकबर ने एक अनुवाद विभाग की स्थापना की, जिसके निरीक्षण में हिंदुओं के अनेक धार्मिक, साहित्यिक एवं ऐतिहासिक ग्रंथों का अनुवाद फ़ारसी भाषा में किया गया। सम्राट अकबर के शासनकाल में स्थापत्यकला, चित्रकला, संगीतकला आदि के क्षेत्र में भी राष्ट्रीय विचारधाराओं एवं आदर्शों का समावेश हुआ।

निःसंदेह, सम्राट अकबर आजीवन भारत को एक संगठित राष्ट्र का रूप देने और देश में एकता तथा सद्भावना बनाए रखने के कार्यों में संलग्न रहा। अतः इस दृष्टि से वह भारत का महान राष्ट्रीय सम्राट था।

Jharkhandlab.com

अध्याय-10 उपनिवेशवाद और देहात
सरकारी अभिलेखों का अध्ययन

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. **भारत में औपनिवेशिक शासन व्यवस्था सर्वप्रथम कहाँ स्थापित हुई ?**
   a. बंबई b. बंगाल
   c. मद्रास d. कोई नहीं

2. **1793 ई० में जब बंगाल में इस्तमरारी बंदोबस्त लागू किया गया उस समय बंगाल का गवर्नर कौन था ?**
   a. कार्नवालिस b. सर जॉन शोर
   c. लार्ड क्लाइव d. कोई भारतीय

3. **जोतदार कौन होते थे ?**
   a. गाँव का मुखिया b. धनवान रैय्यत
   c. जमींदार d. न्यायधीश

4. **पांचवीं रिपोर्ट' ब्रिटिश संसद में कब पेश की गई थी ?**
   a. 1800 b. 1812
   c. 1813 d. 1850

5. **कलकत्ता में स्थित अलीपुर चिड़ियाघर की स्थापना किसने की ?**
   a. फ्रांसीस बुकानन b. जेवियर लकड़ा
   c. जॉन हैरिस d. इनमें से कोई नहीं ।

6. **फ्रांसीस बुकानन कौन था ?**
   a. चिकित्सक b. कलाकार
   c. कलेक्टर d. निदेशक

7. **पहाड़िया जनजाति के जीवन के प्रतीक के रूप में निम्न में से किसे जाना जाता है?**
   a. हल b. कुदाल
   c. चाकू d. इनमे से कोई नहीं

8 **गुन्जरिया क्या है?**
   a. पर्वत b. नदी
   c झरना d. शहर

9. **किस विद्रोह के परिणाम के रूप में संथाल परगने का निर्माण हुआ?**
   a. मुंडा बिद्रोह b. तिलका विद्रोह
   c. संथाल विद्रोह d. इनमे से कोई नहीं

10. **संथाल विद्रोह कब हुआ था?**
    a. 1855 b. 1830
    c. 1821 d. 1809

11. **मैनचेस्टर कॉटन कंपनी का निर्माण कब हुआ?**
    a. 1857 b. 1858
    c. 1859 d. 1860

12. **दक्कन दंगा आयोग द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट ब्रिटिश संसद में कब पेश की गयी?**
    a. 1875 b. 1876
    c. 1877 d. 1878

13. **दामिन-ए-कोह क्या है?**
    a. संथालों की भूमि b. उपाधि
    c. जागीर d. इनमे से कोई नहीं

ANSWER
1.b 2.a 3.b .4.c. 5.a .6.a. 7.a 8.a 9 a 10.a 11.c. 12.d 13.a

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1 उपनिवेशवाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: उपनिवेशवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत औपनिवेशिक राष्ट्र उपनिवेश के आर्थिक, प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों का प्रयोग अपने हितों के लिए करता है और अपने इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इन राष्ट्र पर अपना नियंत्रण स्थापित करता है ।

प्रश्न2. हल और कुदाल के बीच संघर्ष का क्या आशय है?

उत्तर: संथालों और पहाड़िया के बीच की लड़ाई।

प्रश्न3: बेनामी शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?

उत्तर: गुमनाम।

प्रश्न4. अमला कौन था?

उत्तर:- राजस्व इकट्ठा करने के समय, ज़मींदार का एक अधिकारी जिसे आमतौर पर अमला कहते थे,।

प्रश्न5. बुकानन कौन था?

उत्तर: फ्रांसिस बुकानन एक चिकित्सक था जो भारत आया और बंगाल चिकित्सा सेवा में (1794 से 1815 तक) कार्य किया।

प्रश्न6: औपनिवेशिक काल में व्हाइट और ब्लैक टाउन का क्या आशय है?

उत्तर: "व्हाइट" और "ब्लैक" टाउन शब्द नगर संरचना में नस्ली भेदभाव के प्रतीक थे। अंग्रेज़ गोरी चमड़ी के होते थे इसलिए उन्हें व्हाइट (White) कहा जाता था, जबकि भारतीय को काले (Black) ।

प्रश्न7: बम्बई दक्कन में ब्रिटिश द्वारा लागू की गई राजस्व प्रणाली का नाम बताइये ।

उत्तर : अंग्रेजी सरकार द्वारा बंबई दक्कन में लागू की गई राजस्व प्रणाली को रैय्यतवाड़ी कहा जाता है।

प्रश्न8. बंगाल के स्थायी भूमि बंदोबस्त की कोई दो विशेषताएँ लिखिये।

उत्तर : क. जमींदारों को लगान वसूली के साथ-साथ (भू - स्वामी) के अधिकार भी प्राप्त हुये ।

Jharkhandlab.com

ख. सरकार को दिये जाने वाले लगान की राशि को निश्चित कर दिया गया, जिसे अब बढ़ाया नहीं जा सकता।

प्रश्न9. अंग्रेजों द्वारा भारत में उपनिवेश की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था ?

उत्तरः अंग्रेजों का उद्देश्य व्यापार करना जिसमे मुख्या रूप से इंग्लैंड में बनी वस्तुएं भारत में बेचना था।

प्रश्न10. बंगाल और बिहार में स्थायी बंदोबस्त शुरू करने का श्रेय किसको दिया जाता है?

उत्तरः लार्ड कार्नवालिस।

प्रश्न11. ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना कब हुई?

उत्तरः 1600 ई० ।

प्रश्न12. सूर्यास्त कानून से आप समझते हैं?

उत्तरः इस व्यवस्था के अंतर्गत जमींदारों को एक निश्चित राशि पर भूमि दे दी गई। जमींदार की मृत्यु के पश्चात उसके उत्तराधिकारी को भूमि का स्वामित्व प्राप्त हो जाता था। जमींदारों को यह निश्चित राशि एक निश्चित समय को सूर्यास्त के पहले चुका देनी पड़ती थी नहीं तो उनकी जमीन नीलाम कर दी जाती थी इस कानून को सूर्यास्त कानून कहा जाता था।

प्रश्न13. झूम खेती से आप क्या समझते हैं?

उत्तरः झूम कृषि एक आदिम प्रकार की कृषि है जिसमें पहले वृक्षों तथा वनस्पतियों को काटकर उन्हें जला दिया जाता है और साफ की गई भूमि को पुराने उपकरणों (लकड़ी के हलों आदि) से जुताई करके बीज बो दिये जाते हैं। जब तक मिट्टी में उर्वरता विद्यमान रहती है इस भूमि पर खेती की जाती है। झारखण्ड में झूम कृषि को कुरूवा कहा जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. स्थायी बंदोबस्त से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रमुख विशेषताएं लिखें।

उत्तरः स्थायी बंदोबस्त अथवा इस्तमरारी बंदोबस्त ईस्ट इण्डिया कंपनी और बंगाल के जमींदारों के बीच कर वसूलने से सम्बंधित एक स्थाई व्यवस्था हेतु समझौता था जिसे बंगाल में लार्ड कार्नवालिस द्वारा 1793 को लागू किया गया।

A. स्थायी बंदोबस्त की विशेषताएँ।

a. स्थायी बंदोबस्त बंगाल के राजाओं तथा तालुक्केदारों के साथ किया गया।

b. इसके द्वारा उन्हें भूमि का स्वामी बना दिया एवं भूमि अधिकार स्वीकार कर लिया गया।

c. जमींदारों द्वारा सरकार को दिया जाने वाला वार्षिक लगान स्थायी रूप से निश्चित कर दिया गया।

d. जमींदार ग्राम में भू-स्वामी नहीं अपितु राजस्व संग्राहक भी था। उन्हें आदेश दिया गया कि किसानों से लगान उनका मूल रूप से वसूल की गई धनराशि का केवल 1/11 भाग अपने पास रखे और 10/11 भाग सरकार को दे।

e. जमींदार भूमि को विक्रय कर सकते थे अथवा गिरवी रख सकते थे।

f. जमींदार द्वारा लगान की निर्धारित धनराशि का भुगतान न किए जाने पर सरकार उसकी भूमि का कुछ भाग विक्रय कर लगान की वसूली कर सकती थी।

प्रश्न2. ईस्ट इंडिया कंपनी जमींदारों को नियंत्रित और विनयमित करने के लिए क्या कदम उठाये?

उत्तरः1 कंपनी ज़मींदारों को पूरा महत्त्व तो देती थी पर वह उन्हें नियंत्रित तथा विनियमित करना, उनकी सत्ता को अपने वश में रखना और उनकी स्वायत्तता को सीमित करना भी चाहती थी। फलस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी ने जमींदारों को नियंत्रित और विनयमित करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाये।

a. ज़मींदारों की सैन्य टुकड़ियों को भंग कर दिया गया, सीमा शुल्क - समाप्त कर दिया गया और उनकी कचहरियों को कंपनी द्वारा नियुक्त कलेक्टर की देखरेख में रख दिया गया।

b. ज़मींदारों से स्थानीय न्याय और स्थानीय पुलिस की व्यवस्था करने की शक्ति छीन ली गई।

c. समय के साथ-साथ, कलेक्टर का कार्यालय सत्ता के एक विकल्पी केंद्र के रूप में उभर आया और ज़मींदार के अधिकार को पूरी तरह सीमित एवं प्रतिबंधित कर दिया गया।

प्रश्न3. साहूकारों जमींदारों और औपनिवेशिक राज्य के विरुद्ध संथाल विद्रोह के कारणों की व्याख्या कीजिय।

उत्तरः साहूकारों जमींदारों और औपनिवेशिक राज्य के विरुद्ध संथाल विद्रोह (1855-56) के निम्नलिखित कारण थे।

1. संथालों के नियंत्रण वाली भूमि पर सरकार (राज्य) भारी कर लगा रही थी।

2. साहूकार (दिकू) बहुत ऊंची दर पर ब्याज लगा रहे थे तथा कर्ज न अदा करने की स्थिति मे जमीन पर कब्जा कर लेते थे।

3. जमींदार लोग दामिन इलाके में अपने नियंत्रण कर उस पर दावा कर रहे थे।

4. संथाल लोग महसूस करने लगे कि एक आदर्श संसार का निर्माण, जहाँ उनका अपना शासन हो, जर्मीदार, साहूकार और औपनिवेशक राज्य के खिलाफ विद्रोह अनिवार्य है।

Q4. पहाडिया लोगों ने बाहरी लोगों के आगमन पर कैसी प्रतिक्रिया दर्शाई?

उत्तरः पहाडिया लोग बाहर से आने वाले लोगों को संदेह तथा अविश्वास की दृष्टि से देखते थे। बाहरी लोगों का आगमन पहाडियां लोगों के लिए जीवन का संकट बन गया था। उनके पहाड़ व जंगलों पर कब्जा करके खेत बनाए जा रहे थे। पहाड़ी लोगों में इसकी प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था। पहाड़ियों के आक्रमणों में तेजी आती गई। अनाज व पशुओं की लूट के साथ इन्होंने अंग्रेजों की कोठियों, ज़मींदारों की कचहरियों तथा महाजनों के घर-बारों पर अपने मुखियाओं के नेतृत्व में संगठित हमले किए और लूटपाट की। वही दूसरी तरफ़, ब्रिटिश अधिकारियों ने दमन की नीति को अपनाया। उन्हें बेरहमी से मारा-पीटा गया परंतु पहाडिया लोग दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में जाकर बाहरी लोगों (ज़मींदारों व जोतदारों) पर हमला करते रहे। ऐसे क्षेत्रों में अंग्रेज़ों के सैन्य बलों के लिए भी इनसे निपटना आसान नहीं था। ऐसे में ब्रिटिश अधिकारियों ने शांति संधि के प्रयास शुरू किए जिसमें उन्हें सालाना भत्ते की पेशकश की गई। बदले में उनसे यह आश्वासन चाहा कि वे शांति व्यवस्था बनाए रखेंगे। उल्लेखनीय हैं कि अधिकतर मुखियाओं ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया। जिन कुछ मुखियाओं ने

jharkhandlab.com

इस प्रस्ताव को स्वीकार किया था, उन्हें पहाडिया लोगों ने पसंद नहीं किया।

प्रश्न5 साहूकारों के खिलाफ दक्कन के रैयत गुस्सा क्यों थे?

उत्तर : साहूकारों के खिलाफ दक्कन के रैयत के गुस्से का मुख्य कारण निम्नलिखित है–

1. साहूकारों का ऋण देने से इनकार करना, जिससे रैयत के क्रोध को बढ़ावा मिला।
2. वे और गहरे कर्ज में डूब गए थे और वे जीवित रहने के लिए साहूकारो पर पूरी तरह से निर्भर थे।
3. साहूकार देहात के प्रथागत मानदंडों का उल्लंघन कर रहे थे। एक प्रथागत मानदंड था कि आरोप लगाया गया ब्याज मूल राशि से अधिक नहीं हो सकता है, लेकिन उन्होंने इस मानदंड का उल्लंघन किया। कई मामलों में यह पाया गया कि साहूकारों ने 100 रुपये के ऋण के ब्याज के रूप में 2,000 रुपये का शुल्क लिया।

प्रश्न6: ग्रामीण बंगाल के बहुत से इलाकों में जोतदार एक ताकतवर हस्ती क्यों था?

उत्तर: ग्रामीण बंगाल में बहुत-से इलाकों में जोतदार काफ़ी शक्तिशाली थे। वे ज़मींदारों से भी अधिक प्रभावशाली थे उनके शक्तिशाली होने के निम्नलिखित कारण थे:

1. उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों तक आते-आते, जोतदारों ने जमीन के बड़े-बड़े रकबे, जो कभी-कभी तो कई हजार एकड़ में फैले थे, अर्जित कर लिए थे।
2. स्थानीय व्यापार और साहूकार के कारोबार पर भी उनका नियंत्रण था और इस प्रकार वे उस क्षेत्र के गरीब काश्तकारों पर व्यापक शक्ति का प्रयोग करते थे।
3. गाँवों में, जोतदारों की शक्ति, जमींदारों की ताकत की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली होती थी। जमींदार के विपरीत जो शहरी इलाकों में रहते थे, जोतदार गाँवों में ही रहते थे और गरीब ग्रामवासियों के काफी बड़े वर्ग पर सीधे अपने नियंत्रण का प्रयोग करते थे।
4. जोतदार ग्राम में ज़मींदारों के लगान वृद्धि के प्रयासों का विरोध करते थे। वे ज़मींदारी अधिकारीयों को अपने लगान वृद्धि को लागू करने से सम्बन्धित कर्तव्यों का पालन नहीं करने देते थे।

खंड -घ

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न1. इस्तमरारी बंदोवस्त के बाद बहुत-सी जमींदारियां क्यों नीलाम कर दी गयी?

उत्तर: इस्तमरारी व्यवस्था में सरकार जमींदारों की भूमि का कुछ भाग बेचकर लगान की वसूली कर सकती थी। इस्तमरारी बन्दोबस्त के बाद बहुत सी ज़मींदारियां नीलाम की जाने लगी।

इसके अनेक कारण थे:

1. कंपनी द्वारा निर्धारित प्रारंभिक राजस्व माँगें अत्यधिक ऊँची थीं। स्थायी अथवा इस्तमरारी बंदोबस्त के अंतर्गत राज्य की राजस्व माँग का निर्धारण स्थायी रूप से किया गया था। इसका तात्पर्य था कि आगामी समय में कृषि में विस्तार तथा मूल्यों में होने वाली वृद्धि का कोई अतिरिक्त लाभ कंपनी को नहीं मिलने वाला था। अतः इस प्रत्याशित हानि को कम-से-कम करने के लिए कंपनी राजस्व की माँग को ऊँचे स्तर पर रखना चाहती थी। ब्रिटिश अधिकारियों का विचार था कि कृषि उत्पादन एवं मूल्यों में होने वाली वृद्धि के परिणामस्वरूप ज़मींदारों पर धीरे-धीरे राजस्व की माँग का बोझ कम होता जाएगा और उन्हें राजस्व भुगतान में कठिनता का सामना नहीं करना पड़ेगा। किंतु ऐसा संभव नहीं हो सका। परिणामस्वरूप ज़मींदारों के लिए राजस्व - राशि का भुगतान करना कठिन हो गया।
2. उल्लेखनीय है कि भू-राजस्व की ऊँचीं माँग 1790 की दशक में लागू की गई थी। इस काल में कृषि उत्पादों की कीमतें कम थी, जिससे रैयत (किसानों) के लिए, जमींदार को उनकी देय राशियाँ चुकाना मुश्किल था। इस प्रकार जमींदार किसानों से राजस्व इकट्ठा नहीं कर पाता था और कंपनी को अपनी निर्धारित धनराशि का भुगतान करने में असमर्थ हो जाता था।
3. राजस्व की माँग में परिवर्तन नहीं किया जा सकता था। उत्पादन अधिक हो या बहुत कम, राजस्व का भुगतान ठीक समय पर करना होता था। इस संबंध में सूर्यास्त कानून का अनुसरण किया जाता था। इसका तात्पर्य था कि यदि निश्चित तिथि को सूर्य छिपने तक भुगतान नहीं किया जाता था तो जमींदारियों को नीलाम किया जा सकता था।
4. इस्तमरारी अथवा स्थायी बंदोबस्त के अंतर्गत जमींदारों के अनेक विशेषाधिकारों को समाप्त कर दिया गया था।

   उनकी सैनिक टुकड़ियों को भंग कर दिया गया। उनके सीमाशुल्क वसूल करने के अधिकार को समाप्त कर दिया गया था। उन्हें उनकी स्थानीय न्याय तथा स्थानीय पुलिस की व्यवस्था करने की शक्ति से भी वंचित कर दिया गया। परिणामस्वरूप अब ज़मींदार शक्ति प्रयोग द्वारा राजस्व वसूली नहीं कर सकते थे।
5. राजस्व वसूली के समय जमींदार का अधिकारी जिसे सामान्य रूप से 'अमला' कहा जाता था, ग्राम में जाता था। कभी कम मूल्यों और फसल अच्छी न होने के कारण किसान अपने राजस्व का भुगतान करने में असमर्थ हो जाते थे, तो कभी रैयत जानबूझकर ठीक समय पर राजस्व का भुगतान नहीं करते थे। इस प्रकार जमींदार ठीक समय पर राजस्व का भुगतान नहीं कर पाता था और उसकी ज़मींदारी नीलाम कर दी जाती थी।
6. कई बार ज़मींदार जानबूझकर राजस्व का भुगतान नहीं करते थे। भूमि के नीलाम किए जाने पर उनके अपने एजेन्ट कम से कम बोली लगाकर उसे (अपने ज़मींदारके लिए) प्राप्त कर लेते थे। इस प्रकार ज़मींदार को राजस्व के रूप में पहले की अपेक्षा कहीं कम धन राशि का भुगतान करना पड़ता था।

प्रश्न2: अमेरिकी गृहयुद्ध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर: अमेरिकी गृहयुदध ने भारत में रैयत समुदाय के जीवन को निम्न रूप से प्रभावित किया।

1. अमेरिका में गृहयुद्ध सन् 1861 से 1865 के बीच हुआ। इस गृहयुद्ध के दौरान भारत की रैयत को खूब लाभ हुआ। कपास की कीमतों में अचानक उछाल आया क्योंकि इंग्लैंड के उद्योगों को अमेरिका से कपास मिलना बंद हो गया था। भारतीय कपास की माँग बढ़ने के कारण कपास उत्पादक रैयत को ऋण की भी समस्या नहीं रही।
2. इस बात का दक्कन के देहाती इलाकों में काफी असर हुआ। दक्कन के गाँवों के रैयतों को अचानक असीमित ऋण उपलब्ध होने लगा। उन्हें कपास उगाने वाली प्रत्येक एकड़ भूमि के लिए अग्रिम राशि दी जाने लगी। साहूकार भी सबसे ऋण देने के लिए हर समय तैयार रहने लगे जिससे उनकी रैयतों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा।
3. जब तक अमेरिका में संकट की स्थिति बनी रही तब तक बंबई दक्कन में कपास का उत्पादन बढ़ता गया। 1860 से 1864 के दौरान कपास उगाने वाले एकड़ों की संख्या दोगुनी हो गई। 1862 तक स्थिति यह आई कि ब्रिटेन में जितना भी कपास का आयात होता था, उसका 90 प्रतिशत भाग अकेले भारत से जाता था। इस तेजी में भी सभी कपास उत्पादकों को समृद्धि प्राप्त नहीं हो सकी। कुछ धनी किसानों को तो लाभ अवश्य हुआ, लेकिन अधिकांश किसान कर्ज के बोझ से और अधिक दब गए।
4. जबअमेरिका में गृहयुद्ध समाप्त हो गया तो वहां कपास का उत्पादन फिर से चालू हो गया और ब्रिटेन में भारतीय कपास की निर्यात में गिरावट आती चली गयी परिणामस्वरूप महाराष्ट्र में निर्यात व्यापारी और साहूकार अब दीर्घावधिक ऋण देने के लिए उत्सुक नहीं रहे। उन्होंने यह देख लिया था कि भारतीय कपास की माँग घटती जा रही है और कपास की कीमतों में गिरावट आ रही है। इसलिए उन्होंने अपना कार्य-व्यवहार बंद करने, किसानों को अग्रिम राशियाँ प्रतिबंधित करने और बकाया ऋणों को वापिस माँगने का निर्णय लिया। इन परिस्थितियों में किसानों की दशा अत्यधिक दयनीय हो गई।

प्रश्न3 किसानों का इतिहास लिखने में सरकारी स्रोतों के उपयोग के बारे में क्या समस्याएँ आती हैं ?

उत्तर : इतिहास के पुनर्निर्माण में सरकारी स्रोतों; जैसे-राजस्व अभिलेखों, सरकार द्वारा नियुक्त सर्वेक्षणकर्ताओं की रिपोर्ट एवं पत्रिकाओं आदि का महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु किसानों का इतिहास लिखने में सरकारी स्रोतों का प्रयोग करते समय लेखक को निम्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है-

1. सरकारी स्रोत वास्तविक स्थिति का निष्पक्ष वर्णन नहीं करते। अतः उनके द्वारा प्रस्तुत विवरणों को पूरी तरह सत्य नहीं समझा जा सकता।
2. सरकारी स्रोत विभिन्न घटनाओं के संबंध में किसी-न-किसी रूप में सरकारी दृष्टिकोण तथा अभिप्रायों का विवरण सरकारी दृष्टिकोण से ही प्रस्तुत करते हैं।
3. सरकारी स्रोतों की सहानुभूति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकार के प्रति ही होती है।
4. सरकारी स्रोत किसी-न-किसी रूप में पीड़ितों के स्थान पर सरकार के ही हितों के समर्थक होते हैं।

   उदाहरणार्थ, दक्कन दंगा आयोग की नियुक्ति विशेष रूप से यह ज्ञात करने के लिए की गई थी कि सरकारी राजस्व की माँग का विद्रोह के प्रारंभ में क्या योगदान था अथवा क्या किसान राजस्व की ऊँची दर के कारण विद्रोह हेतु उतारू हो गए थे। आयोग ने समस्त जाँच-पड़ताल करने के बाद जो रिपोर्ट प्रस्तुत की उसमें विद्रोह का प्रमुख कारण ऋणदाताओं या साहूकारों को बताया गया। रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से यह बताया गया कि सरकारी माँग किसानों की उत्तेजना या क्रोध का कारण बिल्कुल नहीं थी। किंतु आयोग इस प्रकार की टिप्पणी करते हुए यह भूल गया कि आखिर किसान साहूकारों की शरण में जाते क्यों थे। वास्तव में, सरकार द्वारा निर्धारित भू-राजस्व की दर इतनी अधिक थी एवं वसूली के तरीके इतने कठोर थे कि किसान को विवशतापूर्वक साहूकार की शरण में जाना ही पड़ता था। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह था कि औपनिवेशिक सरकार जनता में व्याप्त असंतोष या रोष के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानने के लिए तैयार नहीं थी।

प्रश्न4. पहाडिया लोगों की आजीविका संथालों की आजीविका से किस रूप में भिन्न थी ?

उत्तर पहाड़िया लोगों की आजीविका तथा संथालों की आजीविका में अंतर निम्न रूपों में देखा जा सकता है।

1. पहाडिया लोग झूम खेती करते थे और जंगल के उत्पादों से अपना जीविकोपार्जन करते थे। जंगल के छोटे से भाग झाड़ियों को काटकर तथा घास-फूस को जलाकर वे जमीन साफ़ कर लेते थे। राख की पोटाश से जमीन पर्याप्त उपजाऊ बन जाती थी। पहाडिया लोग उस ज़मीन पर अपने खाने के लिए विभिन्न प्रकार की अनाज उपजाते थे। इस प्रकार वे अपनी आजीविका के लिए जंगलों और चरागाहों पर निर्भर थे।

   किन्तु संथाल अपेक्षाकृत स्थायी खेती करते थे। ये परिश्रमी थे और इन्हें खेती की समझ थी। इसलिए जमींदार लोग इन्हें नई भूमि निकालने तथा खेती करने के लिए मज़दूरी पर रखते थे।
2. पहाडिया लोगों की खेती कुदाल पर आधारित थी। ये राजमहल की पहाड़ियों के इर्द-गिर्द रहते थे। वे हल को हाथ लगाना पाप समझते थे।

   वही दूसरी ओर, संथाल हल की खेती यानी स्थाई कृषि सीख रहे थे। ये गुंजारिया पहाड़ियों की तलहटी में रहने वाले लोग थे।
3. पहाडिया लोग का कृषि के अतिरिक्त शिकार व जंगल के उत्पाद आजीविका के साधन थे। वे काठ कोयला बनाने के लिए जंगल से लकड़ियाँ एकत्रित करते थे। खाने के लिए महुआ नामक पौधे के फूल एकत्र करते थे। जंगल से रेशम के कीड़ें के कोया एकत्रित करके बेचते थे।

   किंतु संथाल लोगों के जमींदारों और व्यापारियों के साथ संबंध प्रायः मैत्रीपूर्ण होते थे। वे व्यापारियों एवं साहूकारों के साथ लेन-देन भी करते वही दूसरी ओर खानाबदोश जीवन को छोड़कर एक स्थान पर बस जाने के कारण संथाल स्थायी खेती करने लगे थे, वे बढ़िया तम्बाकू और सरसों जैसी वाणिज्यिक फसलों को उगाने लगे थे। परिणामस्वरूप, उनकी आर्थिक स्थिति उन्नत होने लगी और वे व्यापारियों एवं साहूकारों के साथ लेन- देन भी करने लगे।

प्रश्न5. संथाल विद्रोह के कारण और परिणाम लिखें।

उत्तरः संथाल विद्रोह आदिवासी विद्रोहों में सबसे शक्तिशाली व महत्वपूर्ण माना जाता है। इसका प्रारम्भ 30 जून 1855 ई. में हुआ तथा 1856 के अन्त तक दमन कर दिया गया।

इसे 'हुल आन्दोलन' के नाम से भी जाना जाता है। यह मुख्य रूप से भागलपुर से लेकर राजमहल क्षेत्र के बीच केन्द्रित था। इस क्षेत्र को "दामिन - ए - कोह" के नाम से जाना जाता था।

संथाल विद्रोह के कारण:

संथाल शान्तिप्रिय तथा विनम्र लोग थे। जो आरम्भ में मानभूम, बड़ाभूम, हजारीबाग, मिदनापुर, बांकुड़ा तथा बीरभूम प्रदेश में रहते थे और वहाँ की भूमि पर खेती करते थे। स्थायी भूमि बन्दोवस्त व्यवस्था लागू हो जाने के कारण संथालो की भूमि छीनकर जमींदारों को दे दी गयी। जमींदारों की अत्यधिक उपज मांग के कारण इन लोगों को अपनी पैतृक भूमि छोड़कर राजमहल की पहाड़ियों के आसपास बसना पड़ा।

वहाँ पर कड़े परिश्रम से इन लोगों ने जंगलों को काटकर भूमि कृषि योग्य बनाई। जमींदारों ने इस भूमि पर भी अपना दावा कर दिया। सरकार ने भी जमींदारों का समर्थन किया और संथालों को उनकी जमींन से बेदखल कर दिया। जमींदार उनका शोषण करने लगे अंग्रेज अधिकारी जमींदारों का साथ देने लगे।

अतः अधिकारियों, जमींदारों और साहूकारों के विरोध में सिद्धू और कान्हू नामक दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून 1855 ई. में भोगनाडीह नामक स्थान पर 6 हजार से अधिक आदिवासी संगठित हुए और विदेशी शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया।

तात्कालीन कारण:-

सरकार द्वारा भागलपुर से वर्दमान के बीच रेल बिछाने के काम में संथालों से बेगारी करवाना। संथालों की मुसीबत उस समय और बढ़ गई जब सरकार ने भागलपुर- वर्दमान रेल परियोजना के तहत रेल बिछाने के काम में संथालों को बड़ी संख्या में बेगार करने के लिए मजबूर किया।

- जिन लोगों ने ऐसा करने से इनकार किया, उन्हें कोड़ों से पीटा गया। संथालों ने इसका प्रतिहार करने का निश्चय किया।
- उन्होंने रेलवे ठेकेदारों के ऊपर हमले किए और रेल परियोजना में लगे अधिकारियों व इंजीनियरों के तंबू उखाड़ दिए गए।

संथाल विद्रोह के परिणाम:

1. संथालों ने कम्पनी के राज्य की समाप्ति तथा अपने सूबेदार के राज्य के आरम्भ की घोषणा कर दी।
2. सरकार ने विद्रोह को दबाने के लिए सैनिक कार्यवाही प्रारम्भ कर दी तथा विद्रोह प्रभावित क्षेत्रों में मार्शल लॉ लगा दिया तथा सिद्धू और कान्हू को पकड़ने के लिए 10 हजार रुपये का इनाम घोषित कर दिया।
3. संथाल क्षेत्र को एक अलग नॉन रेगुलेशन जिला बना दिया गया, जिसे संथाल परगना का नाम दिया गया

jharkhandlab.com

अध्याय-11 विद्रोही और राज
1857 का आंदोलन और उसके व्याख्यान

बहु विकल्पीय प्रश्न

1. 1857 के विद्रोह के समय भारत का गवर्नर जनरल कौन था?
(A) लॉर्ड वेलेजली (B) लॉर्ड विलियम बेंटिक
(C) लॉर्ड डलहौजी (D) लॉर्ड कैनिंग

2. 1857 का विद्रोह कब प्रारंभ हुआ?
(A) 10 मई 1857 (B) 14 जून 1857
(C) 15 अगस्त 1857 (D) 31 मई 1857

3. 1857 की विद्रोह का प्रमुख कारण क्या था?
(A) हड़प नीति (B) ईसाई धर्म का प्रचार
(C) सती प्रथा की समाप्ति (D) चर्बी वाला कारतूस

4. 1857 के विद्रोह में शहीद होने वाला पहला व्यक्ति कौन था?
(A) बहादुर शाह जफर (B) तात्या तोपे
(C) मंगल पांडे (D) नाना साहेब

5. 1857 के विद्रोह का नेतृत्व किसने किया था?
(A) वीर कुंवर सिंह (B) रानी लक्ष्मीबाई
(C) नाना साहब (D) बहादुर शाह जफर

6. मंगल पांडे को फांसी कब दी गई थी?
(A) 29 मार्च 1857 (B) 8 मार्च 1857
(C) 8 अप्रैल 1857 (D) 10 मई 1857

7. "द ग्रेट रिवॉल्ट"नामक पुस्तक किसने लिखी?
(A) जेम्स आईटम (B) अशोक मेहता
(C) वी डी सावरकर (D) विलियम स्मिथ

8. रानी लक्ष्मीबाई को और किस नाम से जाना जाता है?
(A) छबीली (B) मनु
(C) मणिकर्णिका (D) इनमें से सभी

9. 1857 के विद्रोह में बिहार का नेतृत्व किसने किया था?
(A) नाना साहिब (B) वीर कुंवर सिंह
(C) रानी लक्ष्मीबाई (D) दिलीप सिंह

10. क्रांति के दमन के बाद कौन क्रांतिकारी नेता नेपाल भाग गया?
(A) नाना साहेब (B) बेगम हजरत म
(C) A और B दोनों (D) इनमें से कोई नहीं

11. पील कमीशन का गठन किस उद्देश्य से किया गया था?
(A) सेना के पुनर्गठन के लिए
(B) विद्रोहियों को सजा देने के लिए
(C) शिक्षा के प्रसार के लिए
(D) लगान व्यवस्था में सुधार के लिए

12. मुगल बादशाह को अपदस्थ कर कहां भेज दिया गया था?
(A) इंग्लैंड (B) कलकत्ता
(C) रंगून (D) काबुल

13. रानी लक्ष्मी बाई किस स्थान से विद्रोह का नेतृत्व कर रही थी?
(A) बिहार (B) कानपुर
(C) दिल्ली (D) झांसी

14. "सहायक संधि" की व्यवस्था किसने की?
(A) लॉर्ड क्लाइव ने (B) वारेन हेस्टिंग्स ने
(C) लॉर्ड हेस्टिंग्स ने (D) लॉर्ड वेलेजली ने

15. अवध में 1857 की क्रांति का नेतृत्व किसने किया?
(A) रानी लक्ष्मी बाई (B) बेगम हजरत महल
(C) बेगम जीनत महल (D) तात्या टोपे

16. "हड़प नीति" किसने लागू की थी?
(A) लॉर्ड डलहौजी (B) लॉर्ड क्लाइव
(C) लॉर्ड कर्जन (D) वारेन हेस्टिंग

उत्तर- 1(D), 2(A), 3(D), 4(C), 5(D), 6(C), 7(B), 8(D), 9(B), 10(C), 11(A), 12(C), 13(D), 14(D), 15(B), 16(A)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 1857 के विद्रोह में भाग लेने वाले पुरुष नेताओं के नाम बताएं।

उत्तर- नाना साहेब, तात्या टोपे, वीर कुंवर सिंह, बहादुर शाह जफर।

2. 1857 की क्रांति का प्रतीक चिन्ह क्या था?

उत्तर- 1857 की क्रांति का चिह्न- रोटी और कमल का फूल।

3. "खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी"
यह पंक्ती किस के विषय में कही गई है?

उत्तर- यह पंक्ति रानी लक्ष्मी बाई के विषय में कही गई है।

4. मंगल पांडे कौन थे?

उत्तर- मंगल पांडे बैरकपुर में 34वीं रेजिमेंट के सिपाही थे। जिन्होंने 1857 के क्रांति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

5. 1857 का विद्रोह सबसे पहले कब और कहां से शुरू हुई?

उत्तर- 1857 का विद्रोह सबसे पहले 10 मई 1857 को मेरठ में शुरू हुई।

6. 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम क्यों कहा जाता है?

उत्तर- 1857 के विद्रोह को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम इसलिए कहा जाता है क्योंकि अंग्रेजों के शोषण के विरुद्ध यह पहला जन आंदोलन था।

jharkhandlab.com

7. 1857 के विद्रोह में मुख्य भूमिका निभाने वाली चार महिलाओं के नाम बताएं।

उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल ,महारानी बैजाबाई सिंधिया, वीरांगना ताईबाई।

8. लॉर्ड डलहौजी ने हड़प नीति के तहत किन- किन राज्यों को अपने अधीन किया था?

उत्तर- सतारा, झांसी, नागपुर, जौनपुर, संबलपुर, उदयपुर आदि।

9. अवध के अंतिम नवाब कौन थे जिन्हें अंग्रेजों ने पेंशन देकर कोलकाता भेज दिया था?

उत्तर- अवध के अंतिम नवाब वाजिद अली शाह थे जिन्हें अंग्रेजों ने 12 लाख रुपए वार्षिक पेंशन देकर कोलकाता भेज दिया था।

10. 1857 के विद्रोह के प्रमुख केंद्रों के नाम बताएं।

उत्तर- 1857 के विद्रोह के प्रमुख केंद्रों के नाम- मेरठ, दिल्ली, बनारस , अवध , कानपुर , झांसी, इलाहाबाद।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण क्या था?

उत्तर- गवर्नर जनरल हाडिग ने सैनिकों के हथियारों में परिवर्तन लाने का प्रयास किया। 1856 ईसवी में उसने सैनिको की पुरानी बंदूक "ब्राउन बैस" के स्थान पर "एनफील्ड राइफल" नामक नई बंदूकें देने का निश्चय किया। इन राइफलो का प्रयोग करने के लिए कारतूसो को राइफल में भरने से पूर्व मुंह से खोलना पड़ता था। जनवरी 1857 ई. में बंगाल के बैरकपुर छावनी में यह समाचार फैल गई कि इन कारतूसों में गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई थी जिससे हिंदू और मुस्लिम सैनिकों में आक्रोश उत्पन्न हो गया। 29 मार्च 1857 ईस्वी को मंगल पांडे नामक एक ब्राह्मण ने बैरकपुर छावनी में अपने अफसरों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इस प्रकार चर्बी वाले कारतूस 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण बना।

2. 1857 के घटनाक्रम को निर्धारित करने में धार्मिक विश्वासों की किस हद तकभूमिका थी?

उत्तर- इसमें कोई संदेह नहीं था कि 1857 के घटनाक्रम को निर्धारित करने में धार्मिक विश्वासों की महत्वपूर्ण भूमिका थी जो इस प्रकार थी-

1. ईसाई धर्मप्रचारक अपने धर्म का प्रचार-प्रसार कर रहे थे साथ ही वे हिन्दू और इस्लाम धर्म की आलोचना करते थे।
2. परंपरागत भारतीय शिक्षा को कमजोर करने के लिए देशी शिक्षा देनेवाली शिक्षण संस्थाओं के अनुदान बंद कर दिए गए। छात्रवृत्तियाँ भी समाप्त कर दी गईं। अँगरेजी शिक्षा और ईसाई धर्म की शिक्षा को बढ़ावा दिया गया।
3. मंदिरों-मस्जिदों की संपत्ति का अधिग्रहण कर लिया गया। इससे लोगों में यह धारणा बैठ गई कि अंग्रेज उनके धर्म और संस्कृति को नष्ट कर रहे हैं। फरायजी और वहाबी आंदोलनों ने मुसलमानों में अंग्रेजों के प्रति कटुता की भावना बढ़ा दी। इसी प्रकार, पंडित, संन्यासी भी अंग्रेज विरोधी प्रचार कर रहे थे।

3. 1857 के विद्रोह में अफवाहों की क्या भूमिका थी?

उत्तर- 1857 के विद्रोह में अफवाहों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी जो इस प्रकार है-

(क) 1857 की सबसे महत्वपूर्ण अफवाह यह थी कि एनफील्ड राइफल की कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी लगी हुई थी।

(ख) ऐसी अफवाह फैली की कंपनी सरकार हिंदू-मुसलमानों की जाति और धर्म को नष्ट करने का षड्यंत्र कर रही है और इसके लिए सरकार ने आटा में गाय और सुअर की हड्डियों का मिश्रण किया है

(ग) यह अफवाह फैल चुकी थी कि 23 जून 1857 को कंपनी शासन के 100 वर्ष पूरे होते ही अंग्रेजों की सत्ता समाप्त हो जाएगी। और इसका जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

4. विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित करने के क्या तरीके अपनाए गए?

उत्तर- विद्रोहियों के बीच एकता स्थापित करने के लिए अनेक तरीकों का अनुसरण किया गया जो इस प्रकार है-

(1) गाय और सूअर की चर्बी वाले कारतूस, आटे में गाय और सूअर की हड्डियों के पाउडर और प्लासी के युद्ध के सौ वर्ष पूरे होते ही भारत से अंग्रेज शासन के समाप्त हो जाने जैसे विचारों के प्रसार से हिन्दू-मुसलमानों की धार्मिक भावनाओं को समान रूप से उत्तेजित करके उन्हें एकजुट किया गया।

(2) हिन्दू-मुसलमानों ने मिलकर मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेतृत्व संभालने का आग्रह किया।

(3) विद्रोह के समय लोगों की जाति और धर्म को स्थान नहीं दिया। विद्रोहियों द्वारा जारी की गई घोषणाओं में जाति और धर्म का भेदभाव किए बिना समाज के सभी वर्गों का आह्वान किया गया।

(4) मुस्लिम शहजादों अथवा नवाबों की ओर से अथवा उनके नाम पर जारी की गई घोषणाओं में हिन्दुओं की भावनाओं का भी ध्यान दिया गया।

(6) मुगल सम्राट बहादुर शाह के नाम से जारी की गई घोषणा में मुहम्मद और महावीर दोनों के नाम पर जनता को इस संघर्ष में भाग लेने का अनुरोध किया गया।

5. अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचलने के लिए क्या कदम उठाए?

उत्तर- अंग्रेजों ने इस विद्रोह को कुचलने के लिए कूटनीति एवं अनेक कठोर उपायों का अनुसरण किया-

(1) उत्तर भारत पर पुनः अधिकार स्थापित करने के लिए सैनिक टुकड़ियाँ भेजने से पहले अंग्रेजों ने सैनिकों को सहायता के लिए अनेक कानूनों को पारित किया।

(2) मई और जून 1857 ई. में अनेक कानूनों को पास किया गया। इनके अनुसार सम्पूर्ण उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। इसके अन्तर्गत केवल फौजी अधिकारियों को ही नहीं अपितु सामान्यतः अंग्रेजों को भी यह अधिकार दे दिया गया कि वे केवल सन्देह के आधार पर ही भारतीयों पर मुकदमा चला सकते थे और उन्हें सजा दे सकते थे।

(3) विद्रोह की अवधि में कानून एवं मुकदमे की सामान्य प्रक्रिया को समाप्त कर दिया गया। यह भली-भाँति स्पष्ट कर दिया गया था कि विद्रोहियों की एकमात्र सजा 'सजा-ए-मौत' थी।

Jharkhandlab.com

(4) नए कानूनों और ब्रिटेन से आने वाली नई सैनिक टुकड़ियों से लैस होकर ब्रिटिश शासन ने विद्रोह को कुचलने का कार्य प्रारम्भ कर दिया। विद्रोह का दमन करने के लिए सर्वप्रथम दिल्ली पर अधिकार करना परमावश्यक था। अतः जून 1857 में अंग्रेजों ने दिल्ली पर दो दिशाओं से आक्रमण किया। 5 दिन के कड़े संघर्ष के बाद 14 सितंबर 1857 को अंग्रेजी सेना ने दिल्ली में प्रवेश कर लिया और कैप्टन हडसन मुगल सम्राट बहादुर शाह द्वितीय एवं बेगम जीनत महल को बंदी बना लिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 1857 के विद्रोह के प्रमुख कारणों की विवेचना करें।

उत्तर- 1857 के विद्रोह को सिपाही विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है इस विद्रोह को भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है क्योंकि अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ यह पहला जन विद्रोह था जो काफी बड़े पैमाने पर हुआ था ।

1857 के विद्रोह के निम्नलिखित कारण थे -

(1) राजनीतिक कारण- राजनीतिक कारणों में सबसे महत्वपूर्ण कारण डलहौजी की गोद निषेध तथा राज्य हड़प नीति को माना जाता है उसने इस नीति के तहत सातारा, नागपुर, झांसी, उदयपुर, संबलपुर, जौनपुर और बघाट आदि अनेक राज्यों को ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बना लिया इसके अलावा उसने कुशासन के आधार पर अवध पर अधिकार किया।

डलहौजी ने पेंशन तथा उपाधियां भी समाप्त कर दी साथ ही साथ उन्होंने बहादुर शाह के बाद के मुगलों की बादशाहत को समाप्त कर दिया तथा लाल किले को खाली करने का आदेश दिया। जिससे लोग अंग्रेज विरोधी हो गए। उन्होंने देशी राज्यों को हड़प कर उनकी सेना को भंग कर दिया जिससे सैनिकों का रोजगार छिन जाने से उनमें असंतोष फैल गया।

(2) सामाजिक कारण- लॉर्ड विलियम बेंटिक ने समाज सुधार के नाम पर भारतीय समाज की अनेक कुरीतियों जैसे सती प्रथा ,बाल हत्या, नरबलि जैसे प्रथाओं को बंद करने का प्रयास किया तथा विधवा विवाह का समर्थन कर विधवा पुनर्विवाह कानून लागू किया।भारतीयों ने अपनी सभ्यता के नष्ट हो जाने के डर से इसका विरोध किया। अंग्रेजों ने रेल, सड़क ,डाक ,तार एवं अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार किया और इसे भारतीय ईसाई धर्म के प्रचार का माध्यम मानने लगी और भारतीयों के मन में विद्रोह की भावना भड़क उठी।

(3) धार्मिक कारण- 1813 ईसवी के चार्टर एक्ट ने, इसाई पादरियों को भारत आने की अनुमति दी। 1850 में एक अधिनियम पारित किया गया जिसके अनुसार यह कानून बना कि धर्म परिवर्तन करने वालों को उनकी पैतृक संपत्ति से वंचित नहीं किया जाएगा। ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित स्कूलों में बाइबिल का अध्ययन अनिवार्य था जिलों में ईसाई धर्म का प्रचार किया जाने लगा तथा सेना में भी सरकारी खर्च पर ईसाई पादरी नियुक्त किए जाने लगे।

(4) सैनिक कारण- भारतीय सैनिकों को सभी सुविधाएं प्राप्त नहीं थी जो अंग्रेजी सैनिकों को प्राप्त थी। जैसे अंग्रेज सैनिकों की अपेक्षा बहुत कम वेतन, अपमानजनक बर्ताव, शारीरिक हिंसा आदि इसके अलावा भारत में अंग्रेज और भारतीय सैनिकों की संख्या में असमानता ने भी विद्रोह को प्रेरित किया।

(5) तात्कालिक कारण- विद्रोह का तात्कालिक कारण 1857 में नई एनफील्ड राइफल में लगाई जाने वाली कारतूस को माना जाता है इसका व्यवहार करने के पूर्व इसे दांतो से काटना पड़ता था और उस समय यह अफवाह फैल गई थी कि कारतूस में गाय और सुअर की चर्बी मिली हुई है 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी के एक सैनिक मंगल पांडे ने कारतूस का प्रयोग करने से इनकार कर दिया उसने दो अंग्रेज अधिकारियों की हत्या कर दी और 8 अप्रैल को मंगल पांडे को फांसी की सजा दी गई और सेना की टुकड़ी को भंग कर दिया गया। 10 मई को विद्रोह प्रारंभ हो गया।

2. 1857 के विद्रोह की विफलता के कारणों का उल्लेख करें।

उत्तर- 1857 के विद्रोह में विद्रोहियों को आरंभिक सफलता तो मिली, परंतु शीघ्र ही वे पराजित होने लगे। दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, झाँसी, कालपी और अन्य स्थानों पर अँगरेजों ने कब्जा जमा लिया। दिसंबर 1858 तक विद्रोह को पूरी तरह दबा दिया गया। इस तरह विद्रोह असफल हो गया जिसके कारण इस प्रकार है-

(i) **योग्य नेतृत्व का अभाव** - विद्रोह मुगल बादशाह बहादुरशाह के नेतृत्व में हुआ, परंतु उसमें नेतृत्व करने की क्षमता नहीं थी। विद्रोह के अन्य नेताओं में भी आपसी तालमेल नहीं था, वे एक साथ योजना बनाकर युद्ध नहीं करते थे तथा उनमें कुशल सेनापति के गुणों का अभाव था। अतः, वे अँगरेज सेनापतियों का सामना नहीं कर सके।

(ii) **समय से पूर्व विद्रोह आरंभ**- बिना किसी निश्चित योजना के निर्धारित समय के पूर्व ही विद्रोह शुरू हो गया। इससे विद्रोह योजनाबद्ध रूप से नहीं हो सका। एक अंग्रेज इतिहासकार ने लिखा कि "यदि पूर्व निश्चय के अनुसार एक तारीख को सारे भारत में स्वाधीनता का युद्ध शुरू होता तो भारत में एक भी अंग्रेज जीवित न बचता।"

(iii) **विद्रोह का अनुपयुक्त समय** – विद्रोह का समय क्रांतिकारियों के लिए अनुपयुक्त था। उस समय तक लगभग पूरा भारत अँगरेजी सत्ता के अधीन हो चुका था। अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति भी अँगरेजों के अनुकूल थी। अतः, अंग्रेजों ने अपनी सारी शक्ति विद्रोह के दमन में लगा दी।

(iv) **विद्रोह का निश्चित उद्देश्य नहीं**– विद्रोह में भाग लेनेवाले नायकों का एकसमान उद्देश्य नहीं था। अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए वे इसमें भाग ले रहे थे। यह निश्चित नहीं किया गया था कि क्रांति की सफलता के बाद क्या व्यवस्था होगी। अतः, विद्रोही पूरे मनोयोग से विद्रोह में भाग नहीं ले सके।

(v) **संगठन एवं योजना का अभाव**- विद्रोहियों में संगठनात्मक दुर्बलता थी। विभिन्न क्षेत्रों के क्रांतिकारी एवं उनके नेता अपनी-अपनी योजनानुसार अलग-अलग कार्य करते रहे। इसके विपरीत अँगरेजों ने योजनाबद्ध रूप से विद्रोह का दमन किया।

(vi) **विद्रोहियों के सीमित साधन**- अँगरेजों की तुलना में विद्रोहियों के साधन अत्यंत सीमित थे। उनके पास पर्याप्त धन, रसद, गोला-बारूद और प्रशिक्षित सैनिकों का सर्वथा अभाव था। उनके पास आवागमन

jharkhandlab.com

के साधनों एवं गुप्तचर व्यवस्था का भी अभाव था।

(vii) विद्रोह का सीमित स्वरूप- -विद्रोह के स्थानीय एवं सीमित स्वरूप ने भी इसकी विफलता में योगदान दिया। क्रांति का केंद्रबिंदु उत्तरी और मध्य भारत के कुछ भाग ही थे। बंगाल, पूर्वोत्तर भारत, पंजाब, कश्मीर, उड़ीसा, पश्चिम और दक्षिण भारत में इसका व्यापक प्रभाव नहीं था। दिल्ली को केंद्र बनाने से विद्रोह उतना अधिक नहीं फैल सका जितना फैल सकता था। फलतः विद्रोहों की अत्यधिक, स्थानबद्ध प्रकृति के कारण अँगरेज उनसे एक-एक कर निबटने में कामयाब रहे।

3. 1857 के विद्रोह के लिए डलहौजी कहां तक उत्तरदायी था?

उत्तर- लॉर्ड डलहौजी 1848 ई. में भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया और यहां आते ही उन्होंने अपनी साम्राज्यवादी नीति का प्रसार किया और यह कहना सही होगा कि उसने अपने साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण के लिए जिन नीतियों का पालन किया वो 1857 के विद्रोह के लिए उत्तरदाई साबित हुआ। जो इस प्रकार है-

(क) अपहरण या गोद निषेध नीति- डलहौजी ने ब्रिटिश साम्राज्य के विस्तार के लिए एक कूटनीतिक सिद्धांत का निर्माण किया जो राज्य अपहरण या गोद निषेध नीति के नाम से जाना जाता है। इस नीति के तहत उसने वैसे राजाओं को जो निसंतान थे और अपने उत्तराधिकारी के रूप में किसी बालक को गोद लेना चाहते थे वैसी परंपरा को डलहौजी ने समाप्त कर दिया और उनके राज्य को कंपनी में मिला लिया जाता था इस नीति के तहत उसने सातारा, जयपुर, संबलपुर,नागपुर ,उदयपुर तथा झांसी का विलय किया।

(ख) कुशासन की नीति- लॉर्ड डलहौजी ने हड़प नीति के अलावा कुशासन के आधार पर 13 फरवरी 1856ई.को अवध का अधिग्रहण किया। डलहौजी ने प्रशासनिक कुशासन का बहाना बनाकर अवध के नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से हटाकर राज्य पर अधिकार कर लिया और नवाब पर अलोकप्रिय होने का आरोप लगाकर उसे 12 लाख रुपए वार्षिक पेंशन देकर कोलकाता भेज दिया।

(ग) पेंशन तथा उपाधियों की समाप्ति- लॉर्ड डलहौजी ने अनेक देशी नरेशो के पेंशनो तथा उपाधियों को समाप्त कर दिया। उसने कर्नाटक और तंजौर के शासकों की मृत्यु के बाद उनकी उपाधियां समाप्त कर दी और अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद उनके दत्तक पुत्र नाना साहब की पेंशन बंद कर दी। इसके परिणाम स्वरूप नाना साहब ब्रिटिश सरकार के घोर विरोधी बन गए।

(घ) मुगल सम्राट के प्रति असम्मानजनक व्यवहार- डलहौजी ने 1849 ई० में घोषणा की कि बहादुर शाह जफर के बाद के मुगलों को लाल किला छोड़कर कहीं और रहना पड़ेगा। 1856 ई० में लॉर्ड कैनिंग ने घोषणा की कि बहादुर शाह जफर के बाद के मुगल "बादशाह" की उपाधि धारण नहीं कर सकेंगे। इन घोषणाओं के द्वारा कंपनी के अधिकारी मुगल शासन को समाप्त करना चाहते थे।

4. 1857 के विद्रोह के क्या परिणाम हुए?

उत्तर- 1857 का विद्रोह भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी यद्यपि 1857 का विद्रोह असफल रहा किंतु इसके परिणाम अभूतपूर्व ,व्यापक और स्थायी सिद्ध हुए साथ ही साथ इस विद्रोह ने भारतीयों के मन में राष्ट्रवादी चेतना का विकास किया।

1857 के विद्रोह के परिणाम इस प्रकार है-

(1) संवैधानिक परिवर्तन- 2 अगस्त 1858 ई. को ब्रिटिश संसद ने भारत अधिनियम पारित कर भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी की शासन को समाप्त कर दिया गया। भारत का शासन ब्रिटिश ताज के हाथों में चला गया और भारत के प्रशासन के लिए भारत सचिव की नियुक्ति की गई।

(2) महारानी विक्टोरिया का घोषणा पत्र- भारतीयों में अंग्रेजों के प्रति असंतोष को दूर करने के लिए महारानी विक्टोरिया ने घोषणा की कि राजाओं को दत्तक पुत्र अर्थात गोद लेने का अधिकार होगा और अब देसी राज्यों को अंग्रेजी राज्य में विलय नहीं किया जाएगा साथ ही साथ भारतीयों के सामाजिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप भी नहीं किया जाएगा।

(3) मुगल सत्ता का अंत- 1526 में बाबर द्वारा स्थापित मुगल सत्ता का अंत 1857 के विद्रोह में हो गया। मुगल बादशाह और उनकी बेगम को गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाकर तथा गद्दी से हटाकर उसे निर्वासित कर रंगून भेज दिया गया और वही कैद खाने में 1862 ई० में बादशाह की मृत्यु हो गई और बादशाह के गद्दी से हटाए जाने के साथ ही भारत में मुगल सत्ता समाप्त हो गई।

(4) गवर्नर जनरल की स्थिति में परिवर्तन- 1858 के अधिनियम द्वारा गवर्नर जनरल की स्थिति में परिवर्तन लाया गया अब गवर्नर जनरल को वायसराय या सम्राट का प्रतिनिधि कहा जाने लगा।

(5) सैनिक संगठन में परिवर्तन- विद्रोह के बाद सैन्य व्यवस्था में काफी बदलाव किया गया। पील कमीशन 1858 की सिफारिशों के अनुसार सेना में यूरोपीय सिपाहियों की संख्या में बढ़ोतरी की गई जबकि भारतीय सैनिकों की संख्या घटा दी गई तथा सेना और तोपखाना के महत्वपूर्ण पदों से भारतीयों को अलग रखा गया और आंतरिक सुरक्षा का दायित्व अंग्रेजी सैनिकों को सौंप दिया गया।

jharkhandgyan.com

अध्याय-12 औपनिवेशिक शहर
नगरीकरण, नगर योजना, स्थापत्य

बहुविकल्पीय प्रश्नः-

1. **1661 ईस्वी में ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में पुर्तगाल के शासक से कौन सा शहर मिला?**
   (A) मद्रास (B) बम्बई
   (C) कलकत्ता (D) गोवा

2. **औपनिवेशिक काल में उत्तर भारत में कौन सा अधिकारी होता था जो नगर में आंतरिक मामलों पर नजर रखता था और कानून व्यवस्था बनाय रखता था-**
   (A) पुरवाल (B) कोतवाल
   (C) प्रधान (D) नागरक

3. **गंज क्या है?**
   (A) छोटे स्थायी बाजार (B) बड़े स्थायी बाजार
   (C) छोटे नगर (D) बड़े नगर

4. **अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के एजेंट 1639ई. में कहां बस गए थे?**
   (A) मछलीपट्टनम में (B) मद्रास में
   (C) पांडिचेरी में (D) कलकता में

5. **प्लासी का युद्ध कब हुआ था?**
   (A) 1757 (B) 1857
   (C) 1764 (D) इनमें से कोई नहीं।

6. **अखिल भारतीय जनगणना का पहला प्रयास कब किया गया?**
   (A) 1872 (B) 1881
   (C) 1890 (D) 1672

7. **कब से भारत में दशकीय जनगणना एक नियमित व्यवस्था बन गई-**
   (A) 1872 (B) 1881
   (C) 1890 (D) 1672

8. **भारतीय रेलवे की शुरुआत कब से हुई-**
   (A) 1850 (B) 1853
   (C) 1860 (D) 1861

9. **कलकत्ता में अंग्रेजों की किलेबंदी का क्या नाम था?**
   (A) फोर्ट सेंट जॉर्ज (B) फोर्ट विलियम
   (C) फोर्ट सेंट डेविड (D) इनमें से कोई नहीं ।

10. **"फोर्ट सेंट जॉर्ज"की स्थापना कहां की गई थी?**
    (A) कलकत्ता (B) मद्रास
    (C) बंम्बई (D) दिल्ली

11. **औपनिवेशिक भारत में स्टील उत्पादन कहां किया जाता था?**
    (A) कानपुर (B) जमशेदपुर
    (C) कलकत्ता (D) मद्रास

12. **औपनिवेशिक भारत के किस शहर में चमड़े की चीजें,ऊनी और सूती कपड़े बनते थे?**
    (A) जमशेदपुर (B) कानपुर
    (C) कलकत्ता (D) मद्रास

13. **अंग्रेज लोग किस मौसम को बीमारियां पैदा करने वाला मानते थे?**
    (A) ठंडा मौसम (B) गर्म मौसम
    (C) वर्षा का मौसम (D) इनमें से कोई नहीं।

14. **'कलकत्ता' शहर की निर्माण की गई है-**
    (A) सुतानती में (B) कोलकाता में
    (C) गोविंदपुर में (D) तीनों गांव को मिलाकर।

15. **लॉर्ड वेलेज्ली भारत का गवर्नर जनरल कब बना?**
    (A) 1797 (B) 1799
    (C) 1798 (D) 1800

16. **'गेटवे ऑफ इंडिया' का निर्माण कब किया गया?**
    (A) 1911 ई (B) 1910 ई.
    (C) 1912 ई. (D) 1913 ई.

17. **ब्रिटेन के राजा जॉर्ज पंचम और उसकी पत्नी मेरी के स्वागत के लिए बनाया गया?**
    (A) गेटवे ऑफ इंडिया (B) इंडिया गेट
    (C) Aएवं B दोनों (D) इनमें से कोई नहीं।

18. **कलकत्ता में सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना कब की गई थी?**
    (A) 1771 ई. (B) 1772 ई.
    (C) 1773 ई. (D) 1770 ई.

19. **कलकत्ता की जगह दिल्ली को राजधानी कब बनाया गया ?**
    (A) 1910 (B) 1911
    (C) 1912 (D) 1913

20. **किस वर्ष वास्कोडिगामा भारत पहुंचा?**
    (A) 1998 (B) 1498
    (C) 1598 (D) 1398

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तरः-

1. B 2.B 3.A 4.B 5.A 6.A 7.B 8.B 9.B 10.B 11.B 12.B 13.B 14.D 15. C16.A 17.A 18.C 19. B 20.B

Jharkhandlab.com

अति लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1. 17वीं शताब्दी में विकसित तीन शहरों के नाम बताएं? जो 18 वीं शताब्दी में पतनोन्मुख हो गए। इनका स्थान किन तीन नगरों ने ले लिया?

उत्तरः- पतनोन्मुख नगरः- सूरत, मछलीपट्टनम एवं ढाका।

नए नगरः- बम्बई, कलकत्ता एवं मद्रास।

प्रश्न 2. बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने 1756 ई० में कहां आक्रमण किया था?

उत्तरः- 1756 ई० में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने कलकत्ता पर हमला किया और अंग्रेज अधिकारियों द्वारा बनाए गए माल गोदाम (छोटे किले) पर कब्जा कर लिया।

प्रश्न 3. हिल स्टेशनों के आरंभिक उद्देश्य क्या थे?

उत्तरः- हिल स्टेशनों की स्थापना का आरंभिक उद्देश्य ब्रिटिश सेना की जरूरतों से जुड़ा था। यह सैनिकों को ठहराने, सीमा की निगरानी करने तथा शत्रु पर हमला बोलने के लिए महत्वपूर्ण स्थान थे।

प्रश्न 4. आमार कथा (मेरी कहानी) आत्मकथा किसकी है?

उत्तरः- विनोदिनी दासी। यह बंगाली रंगमंच में 19वीं सदी के आखिर और बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों की जानी-मानी हस्ती थी।

प्रश्न 5. कलकत्ता की लॉटरी कमेटी क्या थी?

उत्तरः- कलकत्ता की 'लॉटरी कॉमेटी' लॉटरी बेचकर नगर नियोजन के लिए पैसा इकट्ठा करती थी। लॉर्ड वेलेजली के जाने के बाद कलकता के नगर नियोजन का काम सरकार की सहायता से इसी कमेटी ने किया।

प्रश्न 6. मद्रास, कलकत्ता तथा बम्बई मूलतः कैसे शहर थे?

उत्तरः- मद्रास, कलकत्ता तथा बम्बई मूल रूप से मत्स्य ग्रहण तथा बुनाई के गांव थे। वे अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी की व्यापारिक गतिविधियों के परिणाम स्वरूप व्यापार के महत्वपूर्ण केंद्र बन गए।

प्रश्न 7. कंपनी के एजेंट मद्रास तथा कलकत्ता में कब -कब बसे? बम्बई कंपनी को कैसे प्राप्त हुई?

उत्तरः- कंपनी के एजेंट 1639 ई० में मद्रास तथा 1690 ई० में कलकत्ता में बसे। ब्रिटेन के राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज के रूप में पुर्तगाल के राजा से 1661 ईस्वी को मिला,फिर चार्ल्स द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को 1668 ई० में बेच दिया। इस प्रकार बम्बई कंपनी को प्राप्त हुई।

प्रश्न 8. औपनिवेशिक काल में बम्बई, कलकत्ता तथा मद्रास में जनसंख्या वृद्धि के तीन कारण बताइए?

उत्तरः-

1 ये नगर प्रशासन और सत्ता के केंद्र थे।

2 इनमें नए भवनों तथा संस्थानों का विकास हुआ।

3 यहां रोजगार के नए नए अवसर विकसित हुए। जिसके कारण लोग बड़ी संख्या में इन शहरों की ओर आकर्षित हुए।

प्रश्न 9. 1857 के विद्रोह के बाद औपनिवेशिक शहरों के भवनों का स्वरूप किस प्रकार बदल गया? कोई दो उदाहरण दीजिए।

उत्तरः- 1857 के विद्रोह के बाद औपनिवेशिक शहरों का स्वरूप-

1 बड़े-बड़े बंगले बनाए जाने लगे जो बगीचा में बनाए गए।

2 भवनों के निर्माण में यूरोपीय वास्तु शैलियों को अपनाया गया।

प्रश्न10. अखिल भारतीय जनगणना का सर्वप्रथम प्रयास कब किया गया? इसकी प्रारंभिक दो उद्देश्यों का उल्लेख कीजिए?

उत्तरः- अखिल भारतीय जनगणना का सर्वप्रथम प्रयास 1872 ई० में किया गया।

इसकी आरंभिक दो उद्देश्यः-

1. लोगों के लिंग जाति तथा व्यवसायों के आंकड़े प्राप्त करना।
2. बीमारियों से होने वाली मौतों की जानकारी प्राप्त करना।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

प्रश्न 1. औपनिवेशिक शहरों में रिकॉर्ड्स संभाल कर क्यों रखे जाते थे?

उत्तर- औपनिवेशिक शहरों में रिकॉर्ड शहरीकरण के विकास की गति को जानने के लिए संभाल कर रखे जाते थे। इनसे निम्नलिखित बातों का पता चलता था-

(a) शहरों की जनसंख्या के उतार-चढ़ाव का पता लगाया जा सकता था।

(b) शहरों में हो रही व्यापारिक गतिविधियों का पता चलता था।

(c) सामाजिक जीवन का पता लगाया जा सकता था।

(d) शहरों के विकास के लिए और क्या किया जाना चाहिए,का पता लगाया जाता था।

(e) बढ़ते हुए शहरों में जीवन की गति और दिशा को नियंत्रण किया जा सकता था।

प्रश्न 2. औपनिवेशिक संदर्भ में शहरीकरण की रुझानों को समझने के लिए जनगणना संबंधी आंकड़े किस हद तक उपयोगी होते हैं?

उत्तरः- औपनिवेशिक संदर्भ में शहरीकरण के रुझानों को समझने के लिए जनसंख्या के आंकड़े बहुत ही उपयोगी सिद्ध होते हैं;-

(क.) ये आंकड़े शहरीकरण की गति को दर्शाते हैं। हमें पता चलता है कि 1800 ई० के बाद शहरीकरण की गति धीमी रही। पूरी 19वीं शताब्दी तथा बीसवीं शताब्दी के पहले दो दशकों में शहरी जनसंख्या का अनुपात लगभग स्थिर रहा।

(ख.) ये हमें उस समय के लोगों के व्यवसायों के बारे में बताते हैं।

(ग.) ये लोगों के लिंग, जाति, धर्म, शिक्षा के स्तर आदि की जानकारी देते हैं।

(घ) ये उस समय के रंगभेद के प्रतीक है। उदाहरण के लिए गोरे 'व्हाइट टाउन' में रहते थे, जबकि भारतीय 'ब्लैक

Jharkhandlab.com

टाउन' में अस्वास्थ्यकर वातावरण में रहते थे।

(ङ) जनसंख्या के आंकड़े, मृत्यु दर तथा बीमारियों से मरने वाले लोगों की संख्या बताते हैं।

(च) ये आंकड़े स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव को दर्शाते हैं।

प्रश्न 3. व्हाइट और ब्लैक टाउन शब्दों का क्या महत्व था?

उत्तरः- "व्हाइट और ब्लैक टाउन" भारतीयों पर अंग्रेजों की जातीय श्रेष्ठता के प्रतीक थे। अंग्रेज गोरी चमड़ी वाले थे और उन्हें व्हाइट कहा जाता था, जबकि भारतीयों को काले अर्थात ब्लैक लोग माना जाता था।

व्हाइट टाउन औपनिवेशिक शहरों के भाग थे, जहां केवल गोरे लोग रहते थे। छावनियों को भी सुरक्षित स्थानों पर विकसित किया गया तथा छावनियों में यूरोपियों के अधीन भारतीय सैनिक तैनात किए जाते थे। ये इलाके मुख्य शहर से अलग परंतु जुड़े हुए होते थे। चौड़ी सड़कों , बड़े बगीचों में बने बंगलों, परेड मैदान और चर्च आदि से लैस यह छावनियां यूरोपीय लोगों के लिए एक सुरक्षित आश्रय स्थल थी। व्हाइट टाउन व्यवस्थित शहरी जीवन का प्रतीक था। ब्लैक टाउन में भारतीय लोग रहते थे। ये अव्यवस्थित थे तथा गंदगी और बीमारी का स्रोत थे। इन्हें अराजकता एवं उपद्रव का केंद्र माना जाता था।

प्रश्न 4. प्रमुख भारतीय व्यापारियों ने औपनिवेशिक शहरों में खुद को किस तरह स्थापित किया?

उत्तरः- प्रमुख भारतीय व्यापारी काफी धनी थे। वे पढ़े-लिखे भी थे। वे चाहते थे कि वह भी अंग्रेजों की तरह व्हाइट टाउन जैसे साफ-सुथरे इलाकों में रहे और उन्हें भी समाज में उचित सम्मान प्राप्त हो। इस उद्देश्य से उन्होंने निम्नलिखित कदम उठाए-

1 उन्होंने औपनिवेशिक शहरों अर्थात बम्बई कलकता और मद्रास में एजेंटों तथा बिचौलियों के रूप में काम करना शुरू कर दिया।

2 उन्होंने ब्लैक टाउन में बाजारों के आसपास परंपरागत ढंग के ढलानी मकान बनवाए। उन्होंने भविष्य में पैसा लगाने के लिए शहर के अंदर बड़ी-बड़ी जमीनें भी खरीद ली थी।

3 अपने अंग्रेज स्वामियों को प्रभावित करने के लिए त्योहारों पर रंगीन भोजों का आयोजन करते थे।

4 समाज में अपनी उच्च स्थिति को दर्शाने के लिए उन्होंने मंदिर बनवाए।

5 मद्रास में कुछ द्विभाषी व्यापारी ऐसे भारतीय थे जो स्थानीय भाषा और अंग्रेजी दोनों ही बोलने जानते थे। पर भारतीय समाज तथा गौरव के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे।

6 संपत्ति इकट्ठा करने के लिए वे सरकार में अपनी पहुंच का प्रयोग करते थे।

7 ब्लैक टाउन में परोपकारी कार्यों और मंदिरों को संरक्षण प्रदान करने के कारण समाज में उनकी स्थिति काफी मजबूत थी।

प्रश्न 5 औपनिवेशिक मद्रास में शहरी और ग्रामीण तत्व किस हद तक घुल मिल गए थे?

उत्तरः- मद्रास को बहुत से गाँवों को मिलाकर विकसित किया गया था। धीरे-धीरे भिन्न भिन्न प्रकार के आर्थिक कार्य करने वाले कई समुदाय आकर मद्रास में बस गए। यूरोपवासी 'व्हाइट टाउन' में रहते थे, जिसका केंद्र फोर्ट सेंट जॉर्ज अथवा सेंट जॉर्ज किला था। अंग्रेजों की सत्ता मजबूत होने के साथ-साथ यूरोपीय निवासी किले से बाहर जाने लगे। गार्डन हाउसेस अथवा बगीचों वाले मकान सबसे पहले माउंट रोड और पूनावाली रोड पर बनने शुरू हुए। ये सड़कें किले से छावनी तक जाती थी। इस दौरान संपन्न भारतीय भी अंग्रेजों की तरह रहने लगे थे। परिणाम स्वरूप मद्रास के इर्द-गिर्द स्थित गांव का स्थान बहुत से नए उपशहरी प्रदेशों ने ले लिया। इसलिए भी संभव हो सका क्योंकि संपन्न लोग परिवहन सुविधाओं की लागत वहन कर सकते थे। परंतु गरीब लोग अपने काम की जगह के निकट स्थित गांव में ही रहते थे। मद्रास के बढ़ते शहरीकरण का परिणाम यह हुआ कि इन गांव के बीच वाले प्रदेश शहर में समा गए। इस प्रकार मद्रास में शहरी तथा ग्रामीण तत्व आपस में घुल मिल गए और मद्रास दूर दूर तक फैली एक अल्प सघन आबादी वाला अर्ध ग्रामीण शहर बन गया।

प्रश्न 6. शैलवासों की स्थापना के प्रमुख कारण क्या थे?

अथवा

ब्रिटिश शासकों के लिए हिल स्टेशन क्यों महत्वपूर्ण थे?

अथवा

पर्वतीय सैरगाहों (हिल स्टेशनों) के विकास की प्रक्रिया को समझाइये।

उत्तरः- छावनियों की तरह पर्वतीय सैरगाह (हिल स्टेशन) भी औपनिवेशिक शहरी विकास का एक महत्वपूर्ण अंग थी। हिल स्टेशनों की स्थापना और बसावट का संबंध सबसे पहले ब्रिटिश सेना की जरूरतों से था। सिमला (वर्तमान शिमला) की स्थापना गोरखा युद्ध (1815 -1816) के दौरान की गई थी। आंग्ल - मराठा युद्ध (1818) के कारण अंग्रेजों की दिलचस्पी माउंट आबू में बढ़ने लगी। 1835 ई० में उन्होंने सिक्किम के राजाओं से दार्जिलिंग को प्राप्त किया था। यह हिल स्टेशन फौजियों को ठहराने, सीमा की देखभाल करने और दुश्मन के खिलाफ हमला बोलने के लिए महत्वपूर्ण स्थान थे।

अंग्रेजों के मतानुसार भारतीय पहाड़ों की मृदु और ठंडी जलवायु विशेष रुप से स्वास्थ्यवर्धक थी। वे गर्म मौसम को बीमारियां पैदा करने वाला मानते थे। उन्हें गर्मियों के कारण हैजा और मलेरिया की सबसे ज्यादा आशंका रहती थी। वे फौजियों को इन बीमारियों से दूर रखने की पूरी कोशिश करते थे।सेना की भारी-भरकम मौजूदगी के कारण यह स्थान पहाड़ियों में एक नई तरह की छावनी बन गए। इन हिल स्टेशनों को सेनेटोरियम के रूप में भी विकसित किया गया और सिपाहियों को यहां विश्राम करने एवं इलाज कराने के लिए भेजा जाने लगा। हिल स्टेशनों की जलवायु यूरोप की ठंडी जलवायु से मिलती-जुलती थी इसलिए नए शासकों को यहां की आबोहवा काफी लुभाने लगी। यही कारण था कि वायसराय प्रत्येक वर्ष गर्मियों में अपने दल बल के साथ हिल स्टेशनों पर पहुंच जाते थे। 1864 ईस्वी में वायसराय जॉन लॉरेंस ने आधिकारिक रूप से अपने काउंसिल शिमला में स्थानांतरित कर दी और इस तरह गर्म मौसम में राजधानियां बदलने के सिलसिले पर विराम लगा दिया। शिमला भारतीय सेना के कमांडर इन चीफ (प्रधान सेनापति) का भी अधिकृत आवास बन गया।

Jharkhandboard.com

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. 19वीं शताब्दी में नगर नियोजन को प्रभावित करने वाली चिंताएं कौन सी थी?

उत्तर:- 19वीं शताब्दी में नगर नियोजन को प्रभावित करने वाली प्रमुख चिंताएं निम्नलिखित थीं-

(1) नगर को समुद्र के निकट बसाना नगर- नियोजन की एक प्रमुख चिंता थी। कंपनी सरकार नगरों को समुद्र के निकट विकसित करना चाहती थी,ताकि यूरोपियों के व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति भली-भांति की जा सके। यूरोपीय माल बिना किसी कठिनाई के भारत लाया जा सके और भारत का माल आसानी से यूरोप में भेजा जा सके।

(2.) दूसरी महत्वपूर्ण चिंता सुरक्षा से संबंधित थी। 1857 ई० के विद्रोह ने भारत में औपनिवेशिक अधिकारियों को इतना अधिक भयभीत कर दिया था की उन्हें हमेशा विद्रोह की आशंका बनी रहती थी। इसलिए सुरक्षा की दृष्टि से वे भारतीयों के खतरे से दूर अलग एवं पूर्ण रूप से सुरक्षित बस्तियों में रहना चाहते थे। इसी उद्देश्य से पुराने बस्तियों के आसपास स्थित चरागाहों एवं खेतों को साफ करवा दिया गया। 'सिविल लाइंस'नाम से एक नए शहरी क्षेत्र विकसित किए गए ,जिनमें केवल यूरोपीय लोग ही निवास कर सकते थे।

(3) नगर -नियोजन के लिए शहरों के नक्शे बनवाना एक आवश्यक चिंता थी। किसी भी स्थान की बनावट अथवा भू-संरचना को समझने के लिए मानचित्रों की आवश्यकता होती थी।

(4) औपनिवेशिक सरकार भारतीय लोगों के साथ रंगभेद और जातिभेद की भावना रखती थी। यूरोपियों की दृष्टि में भारतीय असभ्य लोग थे। वे अपने क्लबों और सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग करने की अनुमति नहीं देना चाहते थे। अतः वे अपना नगर हिंदुस्तानी कस्बों से अलग स्थान पर बनाना चाहते थे।

(5) यूरोपीय कंपनियां अपनी बस्ती अधिक हरियाली, गंदे तालाबों, बदबू और नालियों की खस्ता हालत जैसे स्थानों पर नहीं बनाना चाहते थे। उनका मानना था कि ऐसे स्थानों पर बीमारियां फैलती है। अतः शहर को अधिक स्वास्थ्यकर बनाने का एक उपाय शहर में खुले स्थान छोड़े जाने के रूप में ढूंढ निकाला ।

(6) नगर -नियोजन के कार्य को देखने के लिए अनेक प्रकार की कमेटियों का गठन करना, इसकी एक प्रमुख चिंता थी, जो शहर को साफ सुथरा बनाने के लिए बाजारों,घाटों,कब्रिस्तानों और चर्म शोधन वाले स्थान को साफ रखें।

(7) नगरों के रख-रखाव के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता थी। अतः धन जुटाना एक प्रमुख चिंता थी। इसके लिए कलकता जैसे शहर की रख रखाव के लिए लॉटरी कमेटी का गठन किया गया था,जो जनता के बीच लॉटरी बेचकर धन इकट्ठा करती थी।

प्रश्न 2. कलकत्ता के एक आधुनिक नगर बनने की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर: कलकत्ता का एक आधुनिक नगर के रूप में उद्भव तथा विकास:- कलकत्ता औपनिवेशिक काल में एक प्रमुख नगर था। हुगली नदी के किनारे एक छोटे से गांव से विकसित होकर ब्रिटेन के भारतीय साम्राज्य की राजधानी बना। यह 1911 ई० तक अंग्रेजों के अधीन भारत की राजधानी बना रहा। इसलिए इस नगर का अत्यधिक महत्व है। कलकता के आधुनिक नगर के रूप में उभरने की प्रक्रिया तथा कलकता में नगरीकरण व नगर नियोजन की निम्नलिखित बिंदुओं में वर्णन किया जा सकता है:-

1. कलकता नगर का इतिहास- सर्वप्रथम 1690 ई० में एक अंग्रेज व्यापारी जॉब चारनॉक (Job Charnock) ने हुगली नदी के किनारे सुतानाती नामक गांव में एक व्यापारिक कोठी स्थापित की थी। इसी से आगे चलकर कोलकाता नगर के मार्ग प्रशस्त हुआ।

   1698 ई० में जॉब चारनॉक को सुतानाती,कलकत्ता और गोविंदपुर नामक तीनों गांव की जमींदारी प्राप्त हो गई। उनकी नवीन किलेबंद बस्ती "फोर्ट विलियम" कहलाने लगी। यहां एक प्रेसिडेंट और कौंसिल की स्थापना की गई।

2. नगर का प्रारंभिक नियोजन- अंग्रेजों ने बंगाल में अपने शासन के शुरू से ही नगर-नियोजन का कार्यभार अपने हाथों में ले लिया था। इसका मुख्य कारण सुरक्षा संबंधी उद्देश्य थे। 1756 ई० में बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला ने कोलकाता पर हमला किया और अंग्रेज व्यापारियों द्वारा माल गोदाम के तौर पर बनाए गए छोटे किले पर कब्जा कर लिया। कुछ समय बाद 1757 में प्लासी के युद्ध में जब सिराजुद्दौला को परास्त कर दिया गया तो उसके पश्चात कंपनी ने किले को मजबूत बनाने का निर्णय लिया, जिससे कि उस पर आसानी से अधिकार न किया जा सके। कंपनी ने इन तीनों गांवों में सबसे दक्षिण में पड़ने वाले गोविंदपुर गांव की जमीन को साफ करने के लिए वहां के व्यापारियों और बुनकरों को हटने का आदेश जारी कर दिया। नवनिर्मित फोर्ट विलियम के इर्द-गिर्द एक विशाल जगह खाली छोड़ दी गई जिसे स्थानीय लोग मैदान या गारेर-मठ कहने लगे थे। खाली मैदान रखने का मकसद था कि अगर दुश्मन की सेना किले की तरफ बढ़े तो उस पर किले से बेरोक -टोक गोलीबारी की जा सके।

   अंग्रेजों को जब कलकता में अपने स्थायी निवास के विषय में विश्वास जागृत होने लगा तो उन्होंने किले से बाहर मैदान की परिधि में अपने निवास के लिए इमारते बनवाने प्रारंभ कर दी। इस प्रकार कोलकाता में नगर -नियोजन का प्रारंभ हुआ। किले के चारों और बनाया गया खाली मैदान जिसका अस्तित्व वर्तमान में भी है ,कोलकाता के प्रथम महत्वपूर्ण नगर नियोजन का प्रतीक चिन्ह है।

3. नगर को स्वास्थ्यपरक बनाने के उपाय-

   1798 में जब लॉर्ड वेलेजली भारत के गवर्नर जनरल बनकर आए तो उन्होंने गवर्नमेंट हाउस के नाम से अपने लिए एक विशाल इमारत का निर्माण करवाया। लार्ड वेलेजली नगर के भारतीय आबादी वाले भाग की अव्यवस्थाओं से चिंतित हुए। नगर के इस भाग में प्रमुख समस्याएं थी-आवश्यकता से अधिक हरियाली, गंदे तालब, तथा गंदे पानी के निकास की समुचित व्यवस्था का अभाव। उनका मानना था कि रुके हुए पानी के इन गंदे तालाबों तथा दलदली भूमि से जहरीली गैस निकलती है जो कि अधिकांश बीमारियों का कारण है। शहर को ज्यादा स्वास्थ्य परक बनाने का एक तरीका यह ढूंढा गया कि शहर में खुले स्थान छोड़े जाए। लॉर्ड वेलेज्ली ने 1803 ई० में नगर नियोजन की आवश्यकता पर एक

प्रशासकीय आदेश जारी किया और इस विषय में कई कमेटियों का गठन किया। बहुत सारे बाजारों, घाटों ,कब्रिस्तानों और चर्म शोधन इकाइयों को साफ किया गया या हटा दिया गया। इसके बाद जन स्वास्थ्य एक ऐसा विचार बन गया जिसकी शहरों की सफाई और नगर नियोजन परियोजनाओं में बार-बार बल दी जाने लगी।

4. नगर -नियोजन में नस्लीय भेदभाव से भारतीयों में असंतोष तथा राष्ट्रवादी भावनाओं का उदय-

19वीं सदी आते आते शहर में सरकारी दखलअंदाजी और ज्यादा सख्त हो चुकी थी। वो जमाना अब बीत चुका था, जब नगर नियोजन को सरकार और निवासियों, दोनों की साझा जिम्मेदारी माना जाता था। अब सरकार ने धन की व्यवस्था समेत नगर नियोजन के समस्त कार्य अपने हाथ में ले लिए थे। इस आधार पर और ज्यादा तेजी से झोपड़ियों को हटाया जाने लगा और दूसरे इलाकों की कीमत पर ब्रिटिश आबादी वाले हिस्सों को तेजी से विकसित किया जाने लगा। "स्वास्थ्यकर " और"अस्वास्थ्यकर" के नए विभेद के सहारे "व्हाइट" और "ब्लैकटाउन" वाले नस्ली विभाजन को और बल मिला। नगर पालिका में भारतीय प्रतिनिधियों ने कई बार इस प्रकार के पूर्वाग्रहों तथा बस्तियों के विध्वंस के विरुद्ध आवाज उठाई। जनता ने भी सरकार की नीतियों का विरोध किया और इस प्रकार इससे भारतीयों में उपनिवेशवाद विरोधी तथा राष्ट्रवादी भावनाओं का उदय हुआ।

जैसे-जैसे ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार होता गया, अंग्रेज कलकता,बम्बई, मद्रास जैसे शहरों को शानदार शाही राजधानियों में तब्दील करने की कोशिश करने लगे। उनकी सोच से ऐसा लगता था मानो शहरों की भव्यता से ही शाही सत्ता की ताकत प्रतिबिंबित होती है। आधुनिक नगर नियोजन में किसी हर चीज को शामिल किया गया जिसके प्रति अंग्रेज अपनेपन का दावा करते थेः तर्कसंगत क्रम व्यवस्था, सटीक क्रियान्वयन, पश्चिमी सौंदर्यात्मक आदर्श, शहरों का साफ और व्यवस्थित, नियोजित और सुंदर होना जरूरी था।

प्रश्नः 3. औपनिवेशिक शहर में सामने आने वाले नए तरह के सार्वजनिक स्थान कौन से थे?उनके क्या उद्देश्य थे?

उत्तरः- औपनिवेशिक शहर नए शासकों की वाणिज्यिक संस्कृति को प्रतिबिंबित करते थे। राजनीतिक सत्ता और संरक्षण भारतीय शासकों के स्थान पर ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारियों के हाथ में जाने लगा। दुभाषिए, बिचौलिए, व्यापारी और माल आपूर्तिकर्ता के रूप में काम करने वाले भारतीयों का भी इन नए शहरों में एक महत्वपूर्ण स्थान था। नदी या समुद्र के किनारे आर्थिक गतिविधियों से गोदियों और घाटियों का विकास हुआ। समुद्र किनारे गोदाम, वाणिज्यिक कार्यालय, जहाजरानी उद्योग के लिए बीमा एजेंसियां, यातायात डिपों और बैंकिंग संस्थानों की स्थापना होने लगी। कंपनी के मुख्य प्रशासकीय कार्यालय समुद्र तट से दूर बनाए गए। कलकता में स्थित रायटर्स बिल्डिंग इसी तरह का एक कार्यालय हुआ करती थी। यहां राइटर्स का मतलब क्लर्कों से था। ब्रिटिश शासन में नौकरशाही के बढ़ते कद का संकेत था। किले की चारदीवारी के आस-पास यूरोपीय व्यापारियों और एजेंटों ने यूरोपीय शैली के महलनुमा मकान बना लिए थे। कुछ ने शहर की सीमा से सटे उपशहरी इलाकों में बगीचा घर बना लिए थे। शासक वर्ग के लिए नस्ली विभेद पर आधारित क्लब रेसकोर्स और रंगमंच भी बनाए गए।

अमीर भारतीय एजेंटों और बिचौलियों ने बाजारों के आसपास ब्लैक टाउन में परंपरागत ढंग के दलानी मकान बनवाएं। उन्होंने भविष्य में पैसा लगाने के लिए शहर के भीतर बड़ी-बड़ी जमीनें भी खरीद ली थी। अपने अंग्रेज स्वामियों को प्रभावित करने के लिए वे त्योहारों के समय रंगीन दावतों का आयोजन करते थे। समाज में अपनी हैसियत साबित करने के लिए उन्होंने मंदिर भी बनवाए। मजदूर वर्ग के लोग अपने यूरोपीय और भारतीय स्वामियों के लिए खानसामा, पालकीवाहक, गाड़ीवान,चौकीदार,पोर्टर और निर्माण व गोदी मजदूर के रूप में विभिन्न सेवाएं उपलब्ध कराते थे। वह शहर के विभिन्न इलाकों में कच्ची झोपड़ियों में रहते थे।

प्रश्न 4. नए शहरों में सामाजिक संबंध किस हद तक बदल गए? ।

उत्तरः- नए शहरों के विकास ने सामाजिक संबंधों को अनेक रूपों में प्रभावित किया। नए शहरों का वातावरण अनेक रूपों में पुराने शहरों के वातावरण से भिन्न था। पुराने शहरों में विद्यमान सामंजस्य एवं जान-पहचान का नए शहरों में अभाव था। इन शहरों में लोग अत्यधिक व्यस्त रहते थे और यहाँ जीवन सदैव दौड़ता-भागता-सा प्रतीत होता था। इन शहरों में यदि एक ओर अत्यधिक संपन्नता थी तो दूसरी ओर अत्यधिक दरिद्रता। यहाँ अत्यधिक धनी व्यक्ति भी रहते थे और अत्यधिक दरिद्र व्यक्ति भी । परिणामस्वरूप लोगों का परस्पर मिलना-जुलना सीमित हो गया । किन्तु नए शहरों में टाउन हॉल, सार्वजनिक पार्को और बीसवीं शताब्दी में सिनेमा हॉलों जैसे सार्वजनिक स्थानों के निर्माण से शहरों में भी लोगों को परस्पर मिलने-जुलने के अवसर उपलब्ध होने लगे थे।

शहरों में नवीन सामाजिक समूह विकसित हो जाने के परिणामस्वरूप पुरानी पहचानें अपना महत्त्व खोने लगीं। लगभग सभी वर्गों के सम्पन्न लोग शहरों की तरफ उमड़ने लगे। नए-नए व्यवसायों के विकसित होने के कारण शहरों में क्लर्कों, शिक्षकों, वकीलों, डॉक्टरों, इंजीनियरों और अकाउंटेंट्स आदि की माँग में निरन्तर वृद्धि होने लगी। इस प्रकार मध्यवर्ग' का विस्तार होने लगा। यह वर्ग बौद्धिक एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न वर्ग था। इस वर्ग के लोगों की स्कूलों, कॉलेजों एवं पुस्तकालयों जैसे नए शिक्षा संस्थानों तक पहुँच थी। शिक्षित होने के कारण उनका समाज में महत्त्व बढ़ने लगा। वे अख़बारों, पत्रिकाओं एवं सार्वजनिक सभाओं में अपनी राय व्यक्त करने लगे। इस प्रकार, बहस एवं चर्चा का एक नया सार्वजनिक दायरा विकसित होने लगा। सामान्य जागरूकता का विकास होने लगा और सामाजिक रीति- रिवाजों, कायदे-कानूनों एवं तौर-तरीकों की उपयोगिता पर अनेक प्रश्नचिह्न लगाए जाने लगे।

नवीन शहरों के विकास ने महिलाओं के सामाजिक जीवन को अनेक रूपों में प्रभावित किया। उल्लेखनीय है कि नए शहरों में महिलाओं को अनेक नए अवसर उपलब्ध थे। मध्यवर्ग की महिलाओं ने पत्र-पत्रिकाओं, आत्मकथाओं एवं पुस्तकों के माध्यम से समाज में अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के प्रयास प्रारंभ कर दिए थे। किन्तु पितृसत्तात्मक भारतीय समाज ऐसे प्रयासों का स्वागत करने के लिए तैयार नहीं था। परम्परागत भारतीय समाज में महिलाओं का स्थान घर की चारदीवारी के अन्दर था। अतः शिक्षित महिलाओं के ऐसे प्रयासों को अनेक लोगों ने परम्परागत पितृसत्तात्मक कायदे- कानूनों को बदलने के प्रयास समझा। रूढ़िवादियों

Jharkhandlab.com

को भय था कि शिक्षित महिलाएँ सामाजिक रीति-रिवाजों को उलट- पुलट कर रख देंगी जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था का आधार ही डावांडोल हो जाएगा।

उल्लेखनीय है कि महिलाओं की शिक्षा की पुरजोर वकालत करने वाले सुधारक भी महिलाओं को केवल माँ और पत्नी की परम्परागत भूमिकाओं में ही देखना चाहते थे। किन्तु शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं में जागरूकता को उत्पन्न किया और धीरे-धीरे सार्वजनिक स्थानों में महिलाओं की उपस्थिति में वृद्धि होने लगी। महिलाएँ सेविकाओं, फैक्ट्री मजदूरों, शिक्षिकाओं, रंगकर्मियों और फिल्म कलाकारों के रूप में शहर के नए व्यवसायों में भाग लेने लगीं। किन्तु घर से बाहर सार्वजनिक स्थानों में जाने वाली महिलाओं को पर्याप्त समय तक सामाजिक दृष्टि से सम्मानित नहीं समझा जाता था। नए-नए व्यवसायों के अस्तित्व में आने के परिणामस्वरूप शहरों में शारीरिक श्रम करने वाले गरीब मजदूरों अथवा कामगारों का एक नया वर्ग अस्तित्व में आने लगा। कुछ लोग रोजगार के नए अवसरों की खोज में शहर की ओर भागने लगे, तो कुछ एक भिन्न जीवन-शैली के आकर्षण से प्रभावित होकर शहर की ओर उमड़ने लगे। मजदूरों एवं कामगारों के लिए शहर का जीवन अनेक संघर्षों से परिपूर्ण था। वस्तुएँ महँगी होने के कारण यहाँ रहने का खर्च उठाना सरल नहीं था और फिर नौकरी पक्की न होने के कारण सदा काम मिलने की गारंटी भी नहीं होती थी। इसलिए रोजगार की खोज में गाँवों से शहर में आने वाले अधिकांश पुरुष अपने परिवारों को ग्रामों में ही छोड़कर आते थे। उल्लेखनीय है कि शहरों में रहने वाले गरीबों ने वहाँ अपनी एक पृथक् संस्कृति की रचना कर ली थी जो जीवन से परिपूर्ण थी। वे उत्साहपूर्वक धार्मिक उत्सवों, तमाशों और स्वांग आदि में भाग लेते थे। तमाशों और स्वांगों में वे प्रायः अपने भारतीय एवं यूरोपीय स्वामियों का मजाक उड़ाते थे। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि नए शहरों में सामाजिक संबंध पर्याप्त सीमा तक परिवर्तित हो गए।

jharkhandlab.com

अध्याय-13 महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन
सविनय अवज्ञा और उससे आगे

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. महात्मा गाँधी के राजनीतिक गुरू कौन थे?
A. फिरोजशाह B. लाजपत राय
C. गोपाल कृष्ण गौखले D. चितरंजन दास

2. महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस कब आए?
A. 1893 B. 1915
C. 1908 D. 1914

3. बंगाल के विभाजन की घोषणा किस वर्ष हुई?
A. 1905 B. 1906
C. 1911 D. 1914

4. काला कानून किसे कहा गया है ?
A. शिक्षा बिल B. इलवर्ट बिल
C. रालेट बिल D. इनमें से कोई नहीं

5. चम्पारण सत्याग्रह का सम्बन्ध किस राज्य से है?
A. गुजरात B. बिहार
C. मध्य प्रदेश D. महाराष्ट्र।

6. चौरीचौरा काण्ड कब हुआ?
A. 5 जनवरी, 1922 B. 4 फरवरी, 1922
C. 16 मार्च,1922 D. इनमे से कोई नहीं

7. 1920 में किस महान नेता की मृत्यु हुई?
A. महात्मा गाँधी B. फिरोजशाह मेहता
C. बालगंगाधर तिलक D. लाजपत राय

8. गाँधी जी ने असहयोग आन्दोलन किस वर्ष आरम्भ किया?
A. 1920 B. 1922
C. 1930 D. 1942

9. भारत छोड़ो आंदोलन कब शुरू हुआ?
A. 1945 B. 1942
C. 1930 D. 1920

10. करो या मरो का नारा किसने दिया?
A. जवाहर लाल नेहरू B. महात्मा गांधी
C. सुभाष चंद्र बोस D. बाल गंगाधर

11. तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा किसका कथन है?
A. भगत सिंह B. चंद्रशेखर आजाद
C. महात्मा गांधी D. सुभाष चंद्र बोस

12. स्वराज पार्टी के संस्थापक कौन थे?
A. दादा भाई नौरोजी B. रामकृष्ण गोखले
C. चितरंजन दास D. महात्मा गांधी

13. क्रिप्स प्रस्ताव को किसने पोस्ट डेटेड चेक कहा?
A. राजेंद्र प्रसाद B. महात्मा गांधी
C. जवाहरलाल नेहरू D. सुभाष बोस

14. सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारंभ किसने किया?
A. गांधीजी B. जवाहरलाल नेहरू
C. अबुल कलाम आजाद D.सुभाष चंद्र बोस

15. गांधी इरविन समझौता कब हुआ
A. 1928 B. 1931
C. 1935 D. 1938

बहुविकल्पीय प्रश्नों के उत्तर:

1- C, 2-B, 3 - A, 4-C, 5-B, 6-B, 7-C, 8A, 9-B, 10-B, 11-D, 12-C, 13- B, 14-A, 15- B

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. दांडी यात्रा किसके द्वारा शुरू किया गया?
उत्तर: दांडी यात्रा महात्मा गांधी के द्वारा शुरू किया गया।

2. दांडी यात्रा कब और कहां से शुरू किया गया?
उत्तर: दांडी यात्रा 12 मार्च 1930 को साबरमती आश्रम से शुरू किया गया।

3. महात्मा गांधी ने नमक कानून कब बंद किया?
उत्तर: महात्मा गांधी ने नमक कानून 6 अप्रैल 1930 ई. को भंग किया।

4. भारत छोड़ो आंदोलन कब शुरू किया गया?
उत्तर: भारत छोड़ो आंदोलन अगस्त 1942 ई. में शुरू किया गया।

5. अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी की स्थापना किसने किया था?
उत्तर: अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी की स्थापना ए० ओ० ह्यूम० ने किया था।

6. अप्रैल 1919 में जालियांवाला बाग हत्याकांड कहां हुआ था?
उत्तर: अप्रैल 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड अमृतसर में हुआ था।

7. गांधी जी ने असहयोग आंदोलन किस वर्ष शुरू किया था?
उत्तर: गांधी जी ने असहयोग आंदोलन 1920 ई. में शुरू किया था।

8. पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव कांग्रेस के किस अधिवेशन में और कब पास किया गया?
उत्तर: पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव लाहौर अधिवेशन, 1929 ई० में पास किया गया।

Jharkhandlab.com

9. 'My experiments with truth' किसकी आत्मकथा है?

उत्तरः 'My experiments with truth' महात्मा गांधी की आत्मकथा है।

10. खिलाफत आंदोलन किसके द्वारा शुरू किया गया था?

उत्तरः खिलाफत आंदोलन मोहम्मद अली और शौकत अली के द्वारा शुरू किया गया था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. चंपारण सत्याग्रह और खेड़ा सत्याग्रह पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर : भारत वापस लौटने पर गाँधी जी का साक्षात्कार चंपारण और खेड़ा के किसानों की दयनीय दशा से हुआ। गाँधी जी ने इन दोनों स्थानों पर अपने विचारों पर आधारित सत्याग्रह का प्रयोग किया जिसके सकारात्मक परिणाम निकले। यह गाँधी जी के द्वारा सत्याग्रह का भारत में पहला प्रयोग था, जिसमें उन्हें अपेक्षित सफलता मिली।

(i) चंपारण सत्याग्रह - 1917 ई.: बिहार के चंपारण में "तीन कठिया" प्रथा प्रचलित थी जिसके अन्तर्गत किसानों को अपनी 3/20 भाग भूमि में नील की खेती करनी पड़ती थी तथा उसे अंग्रेजों द्वारा निर्धारित सस्ते दामों पर बेचना पड़ता था।

चंपारण की जनता ने गाँधी जी को चंपारण आने का निमंत्रण दिया। गाँधी जी ने चंपारण जाकर किसानों की दुर्दशा देखी। सरकार ने उन्हें चंपारण छोड़ने का आदेश दिया, लेकिन गाँधी जी ने आदेश मानने से इंकार कर दिया तथा सत्याग्रह के लिए तैयार हो गए। सरकार ने किसानों की दशा में सुधार हेतू - एक जांच समिति बनाई तथा उसमें गाँधी जी को भी शामिल किया। जांच समिति की अनुशंशाओं पर किसानों के पक्ष में सरकार द्वारा कदम उठाए गए।

(ii) खेड़ा सत्याग्रह - 1918 ई. : गुजरात के खेड़ा जिले में खराब फसल के बावजूद किसानों से लगान की मांग की गई। इससे किसानों में व्यापक तनाव ने जन्म लिया।

गाँधी जी ने सरदार बल्लभ भाई पटेल की सहायता से किसानों के दुःख को दूर किया । अन्ततः सरकार ने सिर्फ उन्हीं किसानों से राजस्व की माँग की जो इसे देने में सक्षम थे।

इन दोनों सत्याग्रहों में गाँधी जी को व्यापक सफलता मिली। वे भारत के विभिन्न भागों की परिस्थितियों से अवगत हुए तथा उन्हें लगा कि भारत में सत्याग्रह का सफल प्रयोग किया जा सकता है। इन दोनों आंदोलनों की सफलता ने गाँधी जी को असहयोग आंदोलन प्रारंभ करने का आधार प्रदान किया।

2. खिलाफत आन्दोलन से आप क्या समझते हैं?

उत्तरः खिलाफ़त आंदोलन (1919-1920) मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में भारतीय मुसलमानों का एक आंदोलन था।

तुर्की के सुल्तान को मुस्लिम संसार के खलीफा अर्थात् धार्मिक प्रमुख का पद प्राप्त था। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन ने यह घोषणा की कि युद्ध के बाद तुर्की का विभाजन तथा खलीफा के पद को समाप्त कर दिया जाएगा।

ब्रिटेन की इस घोषणा से भारतीय मुसलमानों को ठेस पहुँचा। अतः उन्होंने ब्रिटेन के खिलाफ आंदोलन चलाने का निश्चय किया जो खिलाफत आंदोलन के रूप में सामने आया। चूँकि यह खलीफा पद के संरक्षण के पक्ष में किया गया आंदोलन था। अतः इसे खिलाफत आंदोलन कहा गया।

कांग्रेस ने इस आंदोलन का समर्थन किया और गाँधी जी ने इसे असहयोग आंदोलन के साथ विलय करा लिया।

3. दांडी यात्रा से आप क्या समझते हैं? संक्षेप में लिखिए। अथवा सविनय अवज्ञा आंदोलन क्या था? यह क्यों शुरू किया गया।

उत्तरः देश में अराजक व्यवस्था के बीच ब्रिटिश सरकार ने नमक कानून लाकर भारतीयों को आक्रोशित किया ।गाँधी जी ने सरकार पर दबाव बनाने के उद्देश्य से दांडी यात्रा के द्वारा सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की। यह 1930 से 1934 ई. तक चला। सविनय अवज्ञा आंदोलन गाँधीवादी प्रतिरोध का एक रूप था।

सविनय अवज्ञा से गाँधी जी का अभिप्राय ब्रिटिश कानूनों का विनम्रता पूर्वक शांति से अवज्ञा करना अथवा उनके आदेशों की अवहेलना करना था। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारंभ दांडी के समुद्रतट पर एक मुट्ठी नमक बनाकर कानून का उल्लंघन किया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन, असहयोग आंदोलन से इस अर्थ में भिन्न था कि जहाँ असहयोग आंदोलन में लोगों को अंग्रेजों के साथ सहयोग करने से मना किया गया था वहीं सविनय अवज्ञा आन्दोलन में लोगों को अंग्रेजी सरकार के कानूनों का उल्लंघन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन के तहत देश के विभिन्न भागों में नमक कानून का उल्लंघन किया गया, सरकारी नमक के कारखानों के सामने प्रदर्शन किया गया, शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गयी, विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी, किसानों ने लगान चुकाने से इन्कार कर दिया, गाँवों में तैनात कर्मचारी इस्तीफे देने लगे तथा लोगों ने लकड़ी तथा अन्य वनोत्पादों को बीनने तथा मवेशियों को चराने के लिए आरक्षित वनों में घुसकर वन कानूनों का उल्लंघन करना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार डांडी मार्च से शुरू हुए सविनय अवज्ञा आंदोलन ने ब्रिटिश साम्राज्य की जड़े हिला दी।

4. विरोध के प्रतीक के रूप में नमक का चुनाव क्यों किया गया और आन्दोलन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा।

अथवा,

गाँधीजी के अनुसार नमक विरोध का प्रतीक क्यों था? व्याख्या कीजिए।

उत्तरः नमक प्रत्येक व्यक्ति के जीवन से जुड़ा था और नमक के कारणों से जनता को यह समझाना आसान था कि किस प्रकार विदेशी सरकार उनके मूलभूत अधिकार अर्थात भोजन के अधिकार को बाधित कर रही है। इस कानून में ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के नमक बनाने में रोक लगाई तथा नमक बनाने और विक्रय का अधिकार अपने पास रखा । नमक कानून एक कलंक के समान था। आम भारतीय को ऊँचे दामों पर नमक खरीदना पड़ता था।

गाँधीजी के अनुसार नमक विरोध का प्रतीक था, क्योंकि

(i) अँग्रेजी सरकार नमक उत्पादन में एकाधिकार रखी हुई थी।

jharkhandlab.com

(ii) सरकार नमक पर कर लगाकर मूल्य से चौदह गुना अधिक कीमत वसूलती थी।

(iii) जनता को इसके उत्पादन से रोकती थी जबकि जनता आसानी से नमक बनाया करती थी।

(iv) भारत में नमक प्राकृतिक रूप से उपलब्ध था।

(v) भारतीयों द्वारा बनाए गए नमक को नष्ट कर दिया जाता था तथा दंडित भी किया जाता था।

(vi) नमक बनाने से रोकना एक सुलभ ग्राम उद्योग से वंचित करने के समान था

उपर्युक्त कारणों से नमक कानून स्वतंत्रता संघर्ष का महत्वपूर्ण मुद्दा बन गया। गांधी जी ने नमक को विरोध का प्रतीक मानते हुए नमक कानून तोड़ने का फैसला किया। गांधीजी साबरमती आश्रम से 12 मार्च 1930 को दांडी की 240 मील की यात्रा प्रारंभ किये और 6 अप्रैल 1930 को दांडी के समुद्रतट पर एक मुट्ठी नमक बनाकर सविनय अवज्ञा आंदोलन का शुरुआत किये।

5. गांधीजी के प्रारंभिक जीवन का परिचय दें।

उत्तर : महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर, 1869 ई. को गुजरात के पोरबन्दर नामक स्थान में हुआ था गाँधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। उनके पिता करमचंद गाँधी राजकोट में दीवान के पद पर थे। गाँधीजी की माता का नाम पुतलीबाई था । तेरह वर्ष की आयु में गाँधी जी का विवाह कस्तूरबा से हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा राजकोट के अल्फ्रेड हाईस्कूल में हुई। 4 सितम्बर, 1888 ई. में वे इंग्लैण्ड गये।जहाँ उन्होंने वकालत की पढ़ाई की। 1891 ई. में बैरिस्टर बन कर भारत वापस आए।

एक मुकदमे के सिलसिले में, 1893 ई. महात्मा गाँधी दक्षिण अफ्रिका गये। दक्षिण अफ्रीका में भी अंग्रेजों के भेदभाव पूर्ण नीति का विरोध किया। 1915 ई. में गाँधी जी दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटे। प्रारंभ में गांधी जी ने ब्रिटिश सरकार की सहायता किये। प्रथम विश्व युद्ध में अंग्रेजों की सहायता करने के कारण 'भर्ती कराने वाला सार्जेंट' कहलाए। युद्ध के पश्चात ब्रिटिश शासन से विश्वास उठ गया। उसके बाद भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय हो गए। इनके राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले थें।एक वर्ष पूरे भारत भ्रमण करने के बाद अपना पहला विद्रोह 1917 ई. में चंपारण (बिहार) में किये जिसमे सफलता मिली।

महात्मा गाँधी ने भारतीय जनता को राजनीतिक रूप से प्रशिक्षित किया। उन्होंने 'सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह' की नीति के द्वारा ब्रिटिश शासन का विरोध किया।गांधीजी अपने विशिष्ट रणनीतियों से राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई दिशा प्रदान किये जैसे:

1. अहिंसा की नीति के द्वारा गाँधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन को हिंसात्मक होने से बचाया।
2. सत्याग्रह,असहयोग, सविनय अवज्ञा, हड़ताल, शांतिपूर्ण प्रदर्शन आदि के माध्यम से जनता की व्यापक भागीदारी राष्ट्रीय आंदोलन में हुई।

राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण गांधीजी को कई वर्ष जेल में भी बिताना पड़ा।अंततः ब्रिटिश सत्ता को भारत को स्वतंत्र करने के लिए विवश होना पड़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में गाँधीजी की भूमिका का वर्णन करें।

अथवा,

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को गाँधीजी ने जन आन्दोलन कैसे बना दिया?

उत्तर: गाँधी जी ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन आंदोलन बनाया। इसके लिए उनके द्वारा निम्नलिखित रणनीतियां अपनाई गई जो विनाशक हथियारों से भी ज्यादा कारगर साबित हुई-

1. **अहिंसा** : गाँधी जी कहते है की "अहिंसा कायर का कवच नही हैं अपितु यह बहादुरी का उच्चतम गुण है।

अहिंसा का सामान्य अर्थ हैं 'किसी की हिंसा न करना, किसी भी प्राणी को मानसिक या शारीरिक चोट न पहुंचाना आदि। 'गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन में अहिंसा का सफल प्रयोग किया।

(ii) **सत्याग्रह का प्रयोग** : सत्य के प्रश्न पर संघर्ष करने की रणनीति सत्याग्रह है। सत्याग्रह के प्रारंभिक प्रयोग गाँधी जी ने चंपारण और खेड़ा में किसानों की दशा में सुधार हेतु आंदोलन करके किया।

(iii) **हड़ताल का सफल प्रयोग** : गांधी जी ने अहमदाबाद मिल मजदूरों के संघर्ष में हड़ताल का सफल प्रयोग किया। जिसके फलस्वरूप मजदूरों के वेतन में 35 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

(iv) **असहयोग** : इस आंदोलन की रणनीति में प्रत्येक स्तर पर सरकार का विरोध एवं बहिष्कार करना था। गांधीजी ने 1920 ई. में असहयोग आंदोलन प्रारंभ किये जिसमे जनता ने बढ़-चढ़कर पूर्ण उत्साह से भाग लिया।

(v) **सविनय अवज्ञा आंदोलन** : सरकार के कानून को विनम्रता पूर्वक मानने से मना करना। 1930 ई में गांधीजी ने नमक कानून को भंग करके सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत किया ।

(vi) **'स्वदेशी' और 'बहिष्कार'** : उन्होंने स्वदेशी को अपनाया तथा स्वयं चरखा चलाया तथा खादी वस्त्र पहने और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया।

(vii) **संघर्ष- तैयारी- संघर्ष की रणनीति** : जन आंदोलन को और अधिक व्यापक तथा नियंत्रित करने के लिए गांधी जी ने "संघर्ष - तैयारी - संघर्ष" की रणनीति का आविष्कार किया। जब सक्रिय संघर्ष नहीं चल रहा हो तब रचनात्मक कार्य द्वारा लोगों को आंदोलन से जोड़े रखना जैसे-

1. हिंदू मुस्लिम एकता को बनाए रखने का प्रयास करना।
2. छुआछूत के खिलाफ लोगों को जागरूक करना।
3. आंदोलन में स्त्रियों की भागीदारी सुनिश्चित करना।
4. देशी हस्तशिल्प को पुनर्जीवित करने का प्रयास करना।

इस प्रकार गाँधी जी ने सभी वर्गों के लोगों को स्वतंत्रता आन्दोलन में शामिल कर स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन बना दिया।

Jharkhandclub.com

2. असहयोग आन्दोलन के बारे में क्या जानते हैं? वर्णन करें।

उत्तर : अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरोध में गांधीजी ने अगस्त 1920 ई. को असहयोग आन्दोलन प्रारंभ करने की घोषणा की। 1920 ई. के कलकत्ता के विशेष अधिवेशन तथा नागपुर अधिवेशन में गांधी जी की घोषणा का कांग्रेस ने समर्थन किया।

असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम :

A. उपाधियों और अवैतनिक पदों का बहिष्कार।
B. सरकारी सभाओं का बहिष्कार।
C. स्वदेशी का प्रयोग।
D. सरकारी स्कूलों व कॉलेजों का परित्याग।
E. वकीलों द्वारा सरकारी न्यायालय का परित्याग।
F. राष्ट्रीय न्यायालयों की स्थापना।
G. हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल।
H. अस्पृश्यता की समाप्ति।

गांधीजी तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा उपाधियों के परित्याग से इस आंदोलन की शुरुआत हुई। कांग्रेस ने विधानमंडल के चुनाव का बहिष्कार किया।स्वदेशी शिक्षण संस्थान स्थापित किए गए जैसे काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, जामिया मिलिया इस्लामियाआदि, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। चरखे का प्रचलन बढ़ा 'तिलक स्वराज फंड' की स्थापना हुई और शीघ्र ही इसमें 1 करोड़ रुपये जमा हो गए। स्वशासन के स्थान पर स्वराज को अंतिम लक्ष्य घोषित किया गया।

आंदोलन के दौरान हिन्दू मुस्लिम एकता का भी प्रस्फुटन हुआ। असहयोग आंदोलन का प्रारंभ शहरी मध्यम वर्ग की हिस्सेदारी से प्रारंभ हुआ। विद्यार्थियों ने स्कूल-कॉलेज छोड़ दिये, शिक्षकों ने त्यागपत्र दे दिया, वकीलों ने मुकदमे लड़ने बंद कर दिये तथा मद्रास के अतिरिक्त प्रायः सभी प्रांतों में परिषद् चुनावों का बहिष्कार किया गया।विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया, शराब की दुकानों की पिकेटिंग की गयी। व्यापारियों ने विदेशी व्यापार में पैसा लगाने से इन्कार कर दिया। देश में खादी का प्रचलन और उत्पादन बढ़ा। सरकार ने इस आंदोलन को सख्ती से दबाया।

असहयोग आंदोलन को वापस लेने का फैसला 5 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश की चोरीचौरा नामक स्थान में आंदोलनकारियों और पुलिस में झड़प हो गई जिसमें 22 पुलिस वाले मारे गए। इस घटना से गांधी जी ने असहयोग आंदोलन को वापस ले लिया।अंततः 12 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलन की समाप्ति कर दी गई।

असहयोग आंदोलन के प्रभाव :

(i) आंदोलन ने राष्ट्रीय भावना का विकास किया, अंग्रेजो के प्रति विरोध का वातावरण बनाया।
(ii) स्वदेशी वस्तुओं के इस्तेमाल में वृद्धि हुई और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हुआ।
iii) देशी शिक्षण संस्थाओं का विकास हुआ।
(iv) कांग्रेसी पार्टी भी अपनी नीतियों एवं कार्यक्रमों में बदलाव किया।
(v) हिंदी को राष्ट्रभाषा का महत्त्व दिया गया तथा अंग्रेजी के प्रयोग में कमी आई।
(vi) खादी का प्रचलन प्रारंभ हुआ। चरखा राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक बन गया।
(vii) आंदोलन जनसाधारण तक पहुंची।
(viii) आंदोलन की असफलता ने कांतिकारी गतिविधियों को प्रेरणा दी।

3. 'भारत छोड़ो' आंदोलन के कारण और प्रभाव बताइए। अथवा, स्पष्ट कीजिए कि 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन सही मायने में एक जन आन्दोलन था?

उत्तर : भारत छोड़ो आंदोलन के कारण :

1. मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन की असफलता से यह बात स्पष्ट हो गई थी कि विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटेन भारतीयों को किसी भी प्रकार के शासन का अधिकार देना नहीं चाहता था।
2. विश्व युद्ध के कारण कीमतों में वृद्धि तथा रोजाना की वस्तुओं के अभाव के कारण जनता में असंतोष बढ़ रहा था।
3. जनता ब्रिटिश विरोधी भावना और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग की समर्थक बन गई थी।
4. द्वितीय विश्व युद्ध में भारत का ब्रिटिश को बिना शर्त सहयोग से इनकार करना।
5. कांग्रेस से जुड़े विभिन्न निकाय जैसे अखिल भारतीय किसान सभा, फॉरवर्ड ब्लॉक आदि ने दो दशकों से अधिक समय से आंदोलन करके इस आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार कर रखी थी।

14 जुलाई 1942 को वर्धा अधिवेशन में कांग्रेस कार्यसमिति ने भारत छोड़ो आंदोलन के निर्णय को स्वीकृति दी। 08 अगस्त मुंबई में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमे महात्मा गाँधी ने 'अँगरेजो भारत छोड़ो' (Quit India) का प्रस्ताव रखा।अँगरेजों के भारत छोड़ देने अर्थात् उनके द्वारा अपनी सत्ता हटा लेने के उपरांत भारत की शासन व्यवस्था और सरकार के निर्माण के संबंध में भी एक व्यापक रूपरेखा भी प्रस्तुत की गयी।

आंदोलन में महात्मा गांधी ने 'करो या मरो' (Do or Die) का नारा जनता को दिया।

8 अगस्त 1942 को समस्त शीर्ष नेता गिरफ्तार कर लिए गए। आंदोलन की शुरुआत 9 अगस्त 1942 से हुई। काँग्रेस को अवैध संगठन घोषित कर दिया गया। सभाओं और प्रदर्शनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

सरकार ने आंदोलन का दमन पूरी बर्बरता और कठोरता के साथ किया था। समूचा देश सैन्य शिविरों में बदल गया था। सेना और पुलिस का राज्य स्थापित हो गया था। जनता का विद्रोह अहिंसात्मक सत्याग्रह से हटकर ब्रिटिश सत्ता के समस्त प्रतीकों पर हमले के रूप में आया जैसे डाकघरों को जलाना, रेल की पटरी को उखाड़ना, तिरंगा झंडा फहराना आदि।

jharkhandlab.com

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रभाव :

(1) सरकार की दमनकारी कार्यवाहियों से जनता नाराज हो उठी। भारतीय जनता पूरी तरह से अंग्रेजों के विरुद्ध हो गई थी।

(2) हड़ताल, प्रदर्शन, तोड़-फोड़ और हिंसा की अनिगिनत घटनाएँ हुई। सरकारी सम्पत्तियों को नुकसान पहुँचाया गया। रेलवे स्टेशन, थाने, डाकघर जला दिये गये। रेल की पटरियाँ उखाड़ कर , पुल क्षतिग्रस्त कर आवागमन के सारे मार्ग बंद कर दिये गये।

(3) किसानों, मजदूरों,छात्रों, स्त्रियों आदि समाज के सभी वर्गों के विशाल जनसमूह ने इस आंदोलन में भाग लेकर इसे जन आंदोलन बनाया।

(4) इस आंदोलन द्वारा जनसमर्थन और समांतर सरकार ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय जनता में ब्रिटिश शासन के प्रति कितना गहरा असंतोष व नफरत है।

(5) इस आंदोलन के बाद ब्रिटिश शासन को यह अहसास हो गया कि भारत को और अधिक दिनों तक अपने अधीन नहीं रखा जा सकता हैं।

(6) अंतरराष्ट्रीय स्तर में भी भारतीय जनता के गहरे असंतोष एवं दमनकारी कार्रवाई की जानकारी मिल गयी। फलतः उन्होंने भी ब्रिटिश सरकार पर भारत को स्वतंत्र करने के लिए दबाव डालना शुरू कर दिया।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत छोड़ो आन्दोलन सही मायने में एक जन आन्दोलन था।

Jharkhandlab.com

अध्याय-14 विभाजन को समझना
राजनीति, स्मृति, अनुभव

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 1947 के विभाजन को जिंदा बचे लोगों ने क्या कहकर व्यक्त किया ?

A. मार्शल लॉ B. मारामारी
C. रोला या हुल्लड़ D. इनमें से सभी

2. सीमान्त गाँधी किसे कहा जाता था?

A. मोहम्मद अली जिन्ना B. रहमत अली
C. खान अब्दुल गफ्फार. D. मोहम्मद इकबाल 'खान

3. बंगाल का विभाजन कब "हुआ था?

A. 1905 B. 1909
C. 1919 D. 1920

4. मुस्लिम लीग की स्थापना कब एवं कहाँ किया गया था?

A 1905, लखनऊ में B. 1,906, ढाका में
C. 1907, सूरत में D. 1909, कलकत्ता में

5. मुसलमानों के लिए पृथक चुनाव क्षेत्र का प्रस्ताव कब लाया गया था?

A. 1907 B. 1909
C. 1916 D. 1920

6. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी एवं मुस्लिम लीग के बीच समझौता कब हुआ था?

A. 1909 B. 1907
C. 1916 D: 1919

7. हिन्दु महासभा का गठन कब किया गया था?

A. 1910 B. 1915
C. 1920 D. 1925

8. 1937 ई. के प्रान्तीय चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने 11 प्रान्तों में से कितने प्रान्तों में अपनी सरकार बनाई ?

A. 8 प्रान्तों में B. 11 प्रान्तों में
C. 7 प्रान्तों में D. इनमें से कोई नहीं

9. सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा किसने लिखा था ?

A. चौधरी रहमत अली B. मोहम्मद इकबाल
C. मोहम्मद अली जिन्ना D. इनमें से कोई नहीं

10. मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान का प्रस्ताव कब लाया था?

A. 23 मार्च 1940 B. 24 फरवरी 1942
C. 5 मार्च 1946 D. 16 अगस्त 1942

11. भारत छोड़ो आन्दोलन कब से प्रारंभ मानी जाती है।

A. 15 अगस्त 1942 B. 8 अगस्त 1942
C. 24 मार्च 1946 D. 16 अक्टूबर 1946

12. कैबिनेट मिशन भारत कब आया ?

A. मार्च 1946 B. अप्रैल 1945
C. जून 1942 D. मई 1945

13. मुस्लिम लीग ने प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस कब मनाया?

A. 23 मार्च 1946 B. 24 मार्च 1947
C. 16 अगस्त 1946 D. 23 अगस्त 1942

14. भारत छोड़ो आन्दोलन में करो या मरो का नारा किसने दिया था ?

A. सुभाष चन्द्र बोस B. महात्मा गांधी
C. जवाहर लाल नेहरू D. डॉ राजेन्द्र प्रसाद

15. पाकिस्तान शब्द किसने दिया था?

A मोहम्मद जिन्ना B. चौधरी रहमत अली
C. लियाकत अली D. मोहम्मद इकबाल

प्रश्न 1-15 तक का उत्तर:-

1-D, 2-C, 3-A, 4-B, 5-B, 6-C, 7-B, 8-C, 9-B, 10-A, 11-B, 12-A 13-C, 14-B, 15-B.

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत का विभाजन कब हुआ ?

उत्तर- भारत का विभाजन 1947 ई. को लॉर्ड माउंटबेटन योजना के तहत हुआ, जो दो संप्रभु राष्ट्र भारत एवं पाकिस्तान के रूप में सामने आया।

2. भारत को स्वतंत्रता किस अधिनियम के तहत मिली?

उत्तर - भारत को स्वतंत्रता 1947 के भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम के तहत मिली।14 अगस्त 1947 ई को पाकिस्तान, एवं 15 अगस्त 1947 को भारत को आजादी मिली।

3. लखनऊ समझौता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच दिसंबर 1916 ई में कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में एक समझौता के तहत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच आपसी तालमेल हुआ था। जिसे लखनऊ समझौता के नाम से जाना जाता है।

4. साम्प्रदायिकता से आप क्या समझे समझते हैं?

उत्तर- साम्प्रदायिकता से तात्पर्य उस संकीर्ण मनोवृति से है, जो धर्म और जाति के नाम पर पूरे समाज तथा राष्ट्र के व्यापक हितों के विरुद्ध व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत धार्मिक हितों को प्रोत्साहित एवं संरक्षण देने की भावना को महत्व देती है।तथा आपस में झगड़ा पैदा करती है।

Jharkhandlab.com

5. **उन दो नेताओं के नाम बताइए जो अंत तक विभाजन का विरोध करते रहे?**

उत्तर- महात्मा गाँधी और अब्दुल गफ्फार खान जिसे सिमान्त गाँधी भी कहा जाता था। इन दोनों महान नेताओं ने भारत विभाज्य का अन्त तक विरोध करते रहे।

6. **हिन्दु महासभा का स्थापना कब एवं क्यों किया गया था?**

उत्तर - हिन्दु महासभा की स्थापना 1915 ई. में हुई थी। यह एक हिन्दु पार्टी थी, जो हिन्दुओं के बीच जाति एवं संप्रदाय के फर्कों को समाप्त कर हिन्दु समाज में एकता पैदा करने की कोशिश करती थी।

7. **1909 में मुसलमानों के लिए बनाए गए पृथक् चुनाव क्षेत्रों के सांप्रदायिक राजनीति पर क्या असर पड़ा?**

उत्तर - पृथक् चुनाव क्षेत्रों के कारण मुसलमान विशेष चुनाव क्षेत्रों से अपने प्रतिनिधि चुन सकते थे। तथा इस व्यवस्था से मुस्लिम लीग के राजनेता सांप्रदायिक नारे लगाकर अपना पक्ष मज़बूत बनाने लगे।

8. **भारत विभाजन के दौरान महात्मा गांधी नोआखली क्यों गए थे?**

भारत- विभाजन के दौरान हिंदू एवं मुसलमानो के बीच नोआखली मे संप्रदायिक दंगा अत्यधिक बढ़ गया था। जिसे शांत करने के लिए महात्मा गांधी नआखली गए थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **1940 के प्रस्ताव के जरिए मुस्लिम लीग ने क्या मांग की?**

उत्तर - 1940 में मुस्लिम लीग ने उपमहाद्वीप के मुस्लिम बहुल इलाकों के लिए सीमित स्वायत्तता की माँग की इस प्रस्ताव में कहीं भी विभाजन या पाकिस्तान का उल्लेख नहीं था। इस प्रस्ताव को लिखने वाले पंजाब के प्रधानमंत्री और यूनियनिस्ट पार्टी के नेता सिकंदर हयात खान ने 1 मार्च, 1941 को पंजाब असेंबली को संबोधित करते हुए यह कहा था कि वह ऐसे पाकिस्तान की अवधारणा के विरुद्ध हैं जिसमें "यहाँ मुस्लिम राज और बाकी जगहों पर हिंदू राज होगा...!" यदि पाकिस्तान का अर्थ यह है कि पंजाब में विशुद्ध मुस्लिम राज स्थापित होने वाला है तो मेरा उससे कोई संबंध नहीं है।" उन्होंने अपने विचारों को संघीय इकाइयों के लिए उल्लेखनीय स्वायत्तता के आधार पर एक ढीले- ढाले (संयुक्त) महासंघ की स्थापना के समर्थन में फिर से दोहराया।

2. **आम लोग विभाजन को किस तरह देखते थे?**

उत्तर- आम लोग विभाजन को भिन्न-भिन्न नजरों से देख रहे थे। जैसे-

1. कुछ लोगों को लगता था कि शांति के स्थापित होते ही, वे अपने-अपने घरों को लौट जाएँगे। वे इसे कोई स्थायी प्रक्रिया नहीं मान रहे थे।
2. विभाजन के दंगों से बचे कुछ लोग इसे मारा- मारी, मार्शल लॉ, रौला,हुल्लड़ आदि शब्दों से संबोधित कर रहे थे।
3. कुछ लोग इसे एक प्रकार का गृहयुद्ध मान रहे थे।
4. कुछ ऐसे भी लोग थे जो स्वयं को उजड़ा हुआ और असहाय अनुभव कर रहे थे। उनके लिए यह विभाजन उनसे बचपन की यादें छीनने वाला तथा मित्रों तथा रिश्तेदारों से तोड़ने वाला मान रहे थे।

3. **कुछ लोगों को ऐसा क्यों लगता था कि बँटवारा बहुत ही अचानक हुआ?**

उत्तर- मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान की माँग पूरी तरह स्पष्ट नहीं थी। उपमहाद्वीप के मुस्लिम बहुल प्रदेशों के लिए सीमित स्वायत्तता की माँग से लेकर विभाजन होने के बीच बहुत ही कम समय लगा केवल सात साल कोई नहीं जानता था कि पाकिस्तान के गठन का क्या अर्थ होगा और उससे भविष्य में लोगों का जीवन कैसा होगा। 1947 में अपने मूल प्रदेश को छोड़कर नयी जगह जाने वाले अनेक लोगों को यही लगता था कि जैसे ही शांति स्थापित होगी, वे लौट आएँगे। आरंभ में मुस्लिम नेताओं ने भी एक संप्रभु राज्य के रूप में पाकिस्तान की माँग पर कोई विशेष बल नहीं दिया था। स्वयं जिन्ना भी पाकिस्तान की सोच को सौदेबाजी में एक पैंतरे के रूप में ही प्रयोग कर रहे थे। इसका उद्देश्य सरकार द्वारा कांग्रेस को मिलने वाली रियायतों पर रोक लगाना तथा मुसलमानों के लिए और अधिक रियायतें प्राप्त करना था। दूसरे विश्व युद्ध के कारण अंग्रेज विश्व राजनीति में कमजोर पड़ गए। इधर 1942 में आरंभ हुए विशाल भारत छोड़ो आंदोलन के परिणामस्वरूप अंग्रेजों को झुकना पड़ा और संभावित सत्ता हस्तांतरण के लिए भारतीय पक्षों के साथ बातचीत के लिए तैयार हो गए। और15 अगस्त 1947 ई को भारत आजाद हो गया।

4. **विभाजन के खिलाफ़ महात्मा गाँधी की दलील क्या थी?**

उत्तर- गाँधी जी प्रारंभ से ही देश के विभाजन के विरुद्ध थे। वह किसी भी कीमत पर विभाजन को रोकना चाहते थे। अतः वह अंत तक विभाजन का विरोध करते रहे। विरोध स्वरूप उन्होंने कहा था कि विभाजन उनकी लाश पर होगी। उन्होंने एक प्रार्थना सभा में अपने भाषण में कहा था, कि मैं फिर वह दिन देखना चाहता हूँ जब हिंदू और मुसलमान आपसी सलाह के बिना कोई काम नहीं करेंगे। मैं दिन-रात इसी आग में जला जा रहा हूँ कि उस दिन को जल्दी- से-जल्दी साकार करने के लिए क्या करूँ। लीग से मेरी गुजारिश है कि वे किसी भी भारतीय को अपना शत्रु न मानें हिंदू एवं मुसलमान, दोनों एक ही मिट्टी से उपजे हैं; उनका खून एक है, वे एक जैसा भोजन करते हैं, एक ही पानी पीते हैं, और एक ही जबान बोलते हैं।

इसी प्रकार 26 सितम्बर 1946 ई० को महात्मा गाँधी ने 'हरिजन' में लिखा था,किन्तु मुझे विश्वास है कि मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की जो माँग उठायी है, वह पूरी तरह गैर-इस्लामिक है और मुझे इसको पापपूर्ण कृत्य कहने में कोई संकोच नहीं है। इस्लाम मानवता की एकता और भाईचारे का समर्थक है न कि मानव परिवार की एकजुटता को तोड़ने का। जो तत्व भारत को एक-दूसरे के खून के प्यासे टुकड़ों में बाँट देना चाहते हैं, वे भारत और इस्लाम दोनों के शत्रु हैं। भले ही वे मेरी देह के टुकड़े-टुकड़े कर दें, किन्तु मुझसे ऐसी बात नहीं मनवा सकते, जिसे मैं गलत मानता हूँ।

उन्होंने प्रत्येक स्थान पर अल्पसंख्यक समुदाय को (वह हिंदू हो या मुसलमान) सांत्वना प्रदान की। उन्होंने भरसक प्रयास किया कि हिंदू-मुसलमान एक दूसरे का खून न बहाएँ बल्कि परस्पर मिल-जुलकर रहें।

5. **कैबिनेट मिशन योजना भारत क्यों आया था?**

उत्तर-

1. ब्रिटिश सरकार से भारतीय नेतृत्व को शक्तियों के हस्तांतरण पर चर्चा करने के उद्देश्य से कैबिनेट मिशन

jharkhandlab.com

भारत आया था। इसका उद्देश्य भारत की एकता की रक्षा करना और उसकी स्वतंत्रता प्रदान करना था

2. भारत का राजनीतिक रुप रेखा तय करने के लिए मार्च 1946 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने भारत में एक तीन सदस्यीय उच्च-स्तरीय शिष्टमंडल भेजा।
3. इस शिष्टमंडल में ब्रिटिश कैबिनेट के तीन सदस्य- लार्ड पैथिक लारेंस(अध्यक्ष), सर स्टेफर्ड क्रिप्स तथा ए.वी. अलेक्जेंडर थे। इस प्रतिनिधिमंडल को कैबिनेट मिशन के नाम से जाना जाता है।
4. कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार 1946 में दोबारा प्रांतीय चुनाव हुआ। जिसमें कांग्रेस पार्टी को सामान्य सीटों पर एक तरफा सफलता मिली।
5. जबकि मुस्लिम लीग को उसके मुस्लिम आरक्षित सीटों पर ही जीत मिली वह भी पूर्ण सीटों पर नहीं।
6. अतः मुस्लिम लीग ने अलग पाकिस्तान राष्ट्र की मांग को मजबूत किया और प्रत्यक्ष कार्यवाही आंदोलन चलाया।

6. प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस से क्या अभिप्राय है?

उत्तर- कैबिनेट मिशन योजना की सिफारिशों को कुछ शर्तों के साथ कांग्रेसी एवं मुस्लिम लीग ने स्वीकार कर लिया और कैबिनेट मिशन योजना के तहत 1946 में चुनाव हुआ जिसमें मुस्लिम लीग को कांग्रेस पार्टी की तुलना में बहुत कम सीटें मिली जिससे मुस्लिम लीग बौखला गया।और अलग पाकिस्तान की मांग पर अड़ गया तथा पूरा नहीं होने पर सीधी कार्यवाही करने की धमकी दी।और 16 अगस्त 1946ई को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस के रुप में मनाया।

उसी दिन कोलकाता में दंगा भड़क उठा जो कई दिनों तक चलता रहा।जिससे कई हजार लोगों की जाने चली गई, खून की होली खेली जाने लगी।मार्च 1947 ई तक उत्तर भारत के अनेक भागों को हिंसा की आग ने अपनी चपेट में ले लिया।संपूर्ण देश गृहयुद्ध की आग में जलने लगी। इन सांप्रदायिक दंगों के कारण कानून व्यवस्था पूरी तरह समाप्त हो गई और शासन व्यवस्थाऐं बिखर गई।इसका मुख्य उद्देश्य हिंदू-मुस्लिम दंगे उत्पन्न करके यह सिद्ध करना था कि हिंदू और मुस्लिम समुदाय एक साथ नहीं रह सकते। अतः देश को भयंकर विनाश से बचाने के लिए कांग्रेस ने विभाजन को स्वीकार कर लेना ही श्रेयस्कर समझा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः-

1. ब्रिटिश भारत का बंटवारा क्यों किया गया?

उत्तर- भारत का विभाजन अंग्रेज़ी सरकार की नीतियों की चरम सीमा तथा सांप्रदायिक दलों द्वारा उत्पन्न जटिल स्थितियों का परिणाम था। जिसे निम्नलिखित तथ्यों से बात स्पष्ट हो जाएगी।

1. फूट डालो और राज्य करो की नीति– 1857 ई० के विद्रोह के पश्चात् अंग्रेजों ने भारत में फूट डालो और राज्य करो की नीति अपना ली। उन्होंने भारत के विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे के प्रति खूब लड़ाया। उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों दोनों को एक-दूसरे के विरुद्ध भड़काया। इसका परिणाम यह हुआ कि वे एक-दूसरे से घृणा करने लगे।
2. मुस्लिम लीग के प्रयत्न-1906 ई० में मुसलमानों ने मुस्लिम लीग नामक संस्था की स्थापना कर ली। फलस्वरूप हिंदू- मुस्लिम भेदभाव बढ़ने लगा। मुस्लिम लीग ने मुस्लिम समाज में सांप्रदायिकता फैलानी आरंभ कर दी। मुस्लिम लीग के संकीर्ण सांप्रदायिक दृष्टिकोण ने हिंदू-मुसलमानों में मतभेद उत्पन्न करने और अन्ततः पाकिस्तान के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। लीग ने 'द्विराष्ट्रवाद के सिद्धांत' का प्रचार किया और मुस्लिम जनसामान्य को यह विश्वास दिलाने का प्रयत्न किया कि अल्पसंख्यक मुसलमानों को बहुसंख्यक हिंदुओं से भारी खतरा है। 1937 ई० में कांग्रेस द्वारा संयुक्त प्रांत में मुस्लिम लीग के साथ मिलकर मन्त्रिमंडल बनाने से इनकार कर दिए जाने पर लीग ने 'इस्लाम खतरे में है' का नारा लगाया और कांग्रेस को हिंदुओं की संस्था बताया। 1940 ई० तक हिंदू- मुस्लिम भेदभाव इतना बढ़ गया कि मुसलमानों ने अपने लाहौर प्रस्ताव में पाकिस्तान की माँग की।
3. कांग्रेस की कमजोर नीति- मुस्लिम लीग की मांग दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी और कांग्रेस इन्हें स्वीकार करती रही। 1916 ई० के लखनऊ समझौते के अनुसार कांग्रेस ने सांप्रदायिक चुनाव प्रणाली को स्वीकार कर लिया। कांग्रेस की इस कमजोर नीति का लाभ उठाते हुए मुसलमानों ने देश के विभाजन की माँग करनी आरंभ कर दी।
4. सांप्रदायिक दंगे- पाकिस्तान की माँग मनवाने के लिए मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्यवाही' आरंभ कर दी और सारे देश में सांप्रदायिक दंगे होने लगे। इन दंगों को केवल भारत-विभाजन द्वारा ही रोका जा सकता था।
5. अंतरिम सरकार की असफलता– 1946 ई० में बनी अंतरिम सरकार में कांग्रेस और मुस्लिम लीग को साथ-साथ कार्य करने का अवसर मिला, परंतु लीग कांग्रेस के प्रत्येक कार्य में कोई न कोई रोड़ा अटका देती थी। परिणामस्वरूप अंतरिम सरकार असफल रही। इससे यह स्पष्ट हो गया कि हिंदू और मुसलमान एक होकर शासन नहीं चला सकते।
6. इंग्लैंड द्वारा भारत छोड़ने की घोषणा 20 फरवरी, 1947 को इंग्लैंड के प्रधानमंत्री ऐटली ने जून, 1948 ई० तक भारत को छोड़ देने की घोषणा की घोषणा में यह भी कहा गया कि अंग्रेज़ केवल उसी दशा में भारत छोड़ेंगे जब मुस्लिम लीग और कांग्रेस में समझौता हो जाएगा, परंतु मुस्लिम लीग पाकिस्तान प्राप्त किए बिना किसी समझौते पर तैयार न हुई। फलस्वरूप ब्रिटिश ने भारत विभाजन की योजना बनानी आरंभ कर दी।

2. भारत के बँटवारे के समय औरतों के क्या अनुभव रहे ?

उत्तर- विभाजन के सर्वाधिक दूषित प्रभाव संभवतः महिलाओं पर हुए। विभाजन के दौरान उन्हें दर्दनाक अनुभवों से गुज़रना पड़ा। उनके साथ बलात्कार किया गया । उन्हें अगवा किया गया, बार-बार बेचा और खरीदा गया तथा अंजान हालात में अजनबियों के साथ एक नई ज़िन्दगी बसर करने के लिए विवश किया गया। महिलाएँ मूक, निरीह प्राणियों के समान इन सभी प्रक्रियाओं से गुजरती रहीं। गहरे सदमे से गुज़रने के बावजूद कुछ महिलाएँ बदले हुए हालात में नए पारिवारिक बन्धनों में बँध गईं। किंतु भारत और पाकिस्तान की सरकारों ने ऐसे मानवीय सम्बन्धों की जटिलता के विषय में किसी संवेदनशील दृष्टिकोण को नहीं अपनाया। यह मानते हुए कि इस प्रकार की अनेक महिलाओं को बलपूर्वक घर बैठा लिया गया था, उन्हें उनके नए परिवारों से छीनकर पुराने

jharkhandlab.com

परिवारों के पास अथवा पुराने स्थानों पर भेज दिया गया। इस सम्बन्ध में महिलाओं की इच्छा जानने का प्रयास ही नहीं किया गया। इस प्रकार, विभाजन की मार झेलने वाली उन महिलाओं को अपनी जिन्दगी के विषय में फैसला लेने के अधिकार से एक बार फिर वंचित कर दिया गया। एक अनुमान के अनुसार महिलाओं की 'बरामदगी' के अभियान में कुल मिलाकर लगभग 30,000 महिलाओं को बरामद किया गया। इनमें से 22000 मुस्लिम औरतों को भारत से और 8,000 हिन्दू व सिक्ख महिलाओं को पाकिस्तान से निकाला गया। बरामदगी की यह प्रक्रिया 1954 ई० में जाकर खत्म हुई

उल्लेखनीय है कि विभाजन की प्रक्रिया के दौरान अनेक ऐसे उदाहरण भी मिलते हैं, जब परिवार के पुरुषों ने इस भय से कि शत्रु द्वारा उनकी औरतों–माँ, बहन, बीवी, बेटी को नापाक किया जा सकता था, परिवार की इज़्ज़त अर्थात् मान-मर्यादा की रक्षा के लिए स्वयं ही उनको मार डाला।

उर्वशी बुटालिया ने अपनी पुस्तक दि अदर साइड ऑफ़ साइलेंस में रावलपिंडी जिले के थुआ खालसा गाँव के एक ऐसे ही दर्दनाक हादसे का ज़िक्र किया है। बताते हैं कि तक्सीम के समय सिखों के इस गाँव की 90 औरतों ने "दुश्मनों" के हाथों में पड़ने की बजाय "अपनी मर्जी से" कुएँ में कूदकर अपनी जान दे दी। इस प्रकार विभाजन के दौरान महिलाओं को अनेक दर्दनाक अनुभव से गुजरना पड़ा।

3. भारत के बंटवारे के सवाल पर कांग्रेस की सोच कैसे बदली?

उत्तर- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस प्रारंभ से ही विभाजन का विरोध कर रही थी किंतु अंत में परिस्थितियों से विवश होकर उसे अपनी सोच बदलनी पड़ी और विभाजन के लिए तैयार होना पड़ा।

और मार्च, 1947 में कांग्रेस हाईकमान ने पंजाब को मुस्लिम बहुल और हिंदू सिख- बहुल दो भागों में बाँटने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। कांग्रेस ने बंगाल के संबंध में भी यही सिद्धांत अपनाने का सुझाव दिया। अंकों के खेल में उलझकर पंजाब के बहुत से सिख और कांग्रेसी नेता भी यह मानने लगे कि अब विभाजन कड़वी सच्चाई बन चुका है, जिसे टाला नहीं जा सकता। उन्हें लगता था कि वे अविभाजित पंजाब में मुसलमानों से घिर जाएँगे और उन्हें मुस्लिम नेताओं की दया पर जीना पड़ेगा। इसलिए वे भी विभाजन के पक्ष में हो गए। बंगाल में भी भद्रलोक बंगाली हिंदुओं का जो वर्ग सत्ता को अपने हाथ में रखना चाहता था, वह यह सोचता था कि विभाजन न होने पर वे "मुसलमानों के स्थायी गुलाम बनकर रह जाएँगे। संख्या की दृष्टि से वे कम थे इसलिए उनको लगता था कि प्रांत के विभाजन से ही उनका राजनीतिक प्रभुत्व बना रह सकता है। :

मार्च 1947 से तक़रीबन साल भर तक रक्तपात चलता रहा। इसका एक कारण यह था कि शासन की संस्थाएँ बिखर चुकी थीं। उसी समय बहावलपुर (पाकिस्तान) में तैनात पेंडेरल मून नाम के एक अफ़सर ने इस बारे में लिखा था कि जब मार्च 1947 में पूरे अमृतसर में

आगजनी और मारकाट हो रही थी तो पुलिस एक भी गोली नहीं चला पाई।

साल के आखिर तक शासन तंत्र पूरी तरह नष्ट हो चुका था। पूरा अमृतसर जिला चौतरफ़ा रक्तपात में डूबा हुआ था। अंग्रेज अफ़सरों को सूझ नहीं रहा था कि हालात को कैसे सँभाला जाए। वे फ़ैसले लेना नहीं चाहते थे और हस्तक्षेप करने में हिचकिचा रहे थे। जब दहशतजदा लोगों ने मदद के लिए गुहार लगाई तो अंग्रेज़ अफ़सरों ने उनसे महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू, वल्लभ भाई पटेल या मोहम्मद अली जिन्ना की शरण में जाने को कहा। किसी को मालूम नहीं था कि सत्ता किसके हाथ में है। महात्मा गाँधी के अलावा भारतीय दलों के सभी वरिष्ठ नेता आज़ादी के बारे में जारी वार्ताओं में व्यस्त थे जबकि प्रभावित प्रांतों के बहुत सारे भारतीय प्रशासनिक अफ़सर अपने ही जान-माल के बारे में भयभीत थे। अंग्रेज़ भारत छोड़ने की तैयारी में लगे थे।

इन सारी समस्या के कारण कांग्रेस ने अपनी सोच बदली

4. मौखिक इतिहास के फायदे/नुकसानों की पड़ताल कीजिए। मौखिक इतिहास की पद्धतियों से विभाजन के बारे में हमारी समझ को किस तरह विस्तार मिलता है?

उत्तर- मौखिक इतिहास से अभिप्राय लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों से है। इन अनुभवों की जानकारी लोगों के साक्षात्कार (Interview) द्वारा प्राप्त की जाती है। यद्यपि मौखिक इतिहास के अपने लाभ और हानियां है तथापि यह सत्य है कि उनकी इतिहास की पद्धतियां विभाजन के विषय में हमारी समझ को विस्तार प्रदान करती है

मौखिक इतिहास के लाभ-

1. मौखिक इतिहास का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे घटनाओं को सजीव बनाया जा सकता है।
2. इससे ग़रीबों और कमज़ोरों के अनुभवों को भी जाना जा सकता है जो प्रायः उपेक्षा का शिकार रहे हैं, क्योंकि इतिहास इन लोगों के बारे में अधिकतर चुप ही रहता है।

मौखिक इतिहास के हानि-

1. मौखिक इतिहास की हानि यह है कि यह स्मृतियों पर आधारित होता है। अतः इसे पूरी तरह विश्वसनीय नहीं माना जा सकता।
2. मौखिक जानकारियों से घटनाओं का क्रमबद्ध तथा तिथि वध्द विवरण प्राप्त करना कठिन हो जाता है

मौखिक इतिहास के स्रोत- विभाजन से संबंधित मौखिक इतिहास के मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं।

1. विभाजन की त्रासदी झेल चुके वे लोग जो अब तक जीवित हैं या जो अपने अनुभवों का ब्यौरा आपअपनी संतानों को दे गए हैं।
2. विभाजन के समय ध्वस्त हुए अथवा जला दिए गए भवनों के अवशेष।
3. मानववादी स्वयंसेवकों के अनुभव।
4. शरणार्थी के रूप में भारत से पाकिस्तान गए तथा पाकिस्तान से भारत आए लोगो की आपबीती।

मौखिक इतिहास और विभाजन के बारे में हमारी समझ- मौखिक इतिहास की पद्धतियां विभाजन के विषय में हमारी समाज को विस्तार प्रदान करती है।

मौखिक इतिहास से भारत-विभाजन के बारे में हमारी समझ को काफी विस्तार मिला है। सरकारी रिपोर्टों में आँकड़े तो मिल जाते हैं, परंतु लोगों के कष्टों तथा कठिनाइयों का विस्तार से पता नहीं चल पाता उदाहरण के लिए सरकारी रिपोर्टों से भारतीय और पाकिस्तानी सरकारों द्वारा बरामद की गई औरतों की अदला- बदली की संख्या का तो पता

jharkhandlab.com

चल जाता है, परंतु उन औरतों पर क्या बीती, इसके बारे में तो वही औरतें ही बता सकती है जिन्हें विभाजन के दौरान कठिनाइयों तथा कष्टों का सामना करना पड़ा। इस प्रकार मौखिक इतिहास की पद्धतियां विभाजन के विषय में हमारी समाज को विस्तृत प्रदान करती है।

5. कैबिनेट मिशन योजना भारत क्यों आया था? और इसका क्या परिणाम निकला।

ब्रिटिश मन्त्रिमंडल ने लीग की माँग का अध्ययन करने तथा स्वतन्त्र भारत के लिए एक उचित राजनैतिक रूपरेखा का सुझाव देने के लिए मार्च 1946 ई० में एक तीन सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत भेजा, जिसे 'कैबिनेट मिशन' के नाम से जाना जाता है। इसमें ब्रिटिश मन्त्रिमंडल के तीन सदस्य-लॉर्ड पैथिक लारेन्स (भारत सचिव), स्टेफोर्ड क्रिप्स और ए०वी० अलेक्जेंडर सम्मिलित थे।

कैबिनेट मिशन के सदस्यों ने भारत के विभिन्न पार्टियों से मिलकर भारत की स्थितियों के बारे में जानने का कोशिश किया एवं एक स्टेट पेपर तैयार किया, जिसे 'कैबिनेट मिशन योजना' के नाम से जाना जाता है। इस योजना की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित थीं;

1. सम्पूर्ण भारत का एक संघ स्थापित किया जाए, जिसमें देशी रियासतें और ब्रिटिश भारत दोनों सम्मिलित हों।
2. वैदेशिक मामले, प्रतिरक्षा और संचार साधन के विभाग संघ के पास हों; इनके अतिरिक्त अन्य सभी विभाग प्रान्तों को सौंप दिए जाएँ।
3. संघ की कार्यपालिका एवं विधानमंडल में प्रान्तों और देशी रियासतों के प्रतिनिधि सम्मिलित किए जाएँ।
4. ब्रिटिश भारत को तीन भागों अ, ब और स में समूहबद्ध कर दिया जाए। समूह

(अ) में हिन्दू बहुसंख्यक प्रान्त मद्रास, संयुक्त प्रान्त, बिहार, मध्य प्रदेश और उड़ीसा समूह '

(ब) में मुस्लिम बहुसंख्यक प्रान्त पंजाब, सिन्ध, उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त और बलूचिस्तान और समूह

(स) में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की लगभग समान संख्यावाले बंगाल और असम के प्रान्तों को सम्मिलित किया जाए।

5. प्रत्येक प्रान्तीय समूह को अपने समूह का संविधान बनाने का अधिकार हो। तत्पश्चात् तीनों समूह मिलकर भारत के संविधान का निर्माण करें।

प्रारम्भ में कैबिनेट मिशन योजना को लगभग सभी राजनैतिक दलों ने स्वीकार कर लिया। किंतु योजना के विषय में सभी की व्याख्या भिन्न-भिन्न थी अतः यह अल्पकालीन सिद्ध हुआ। मिशन वापस इंग्लैण्ड चला गया। 1946 में कैबिनेट मिशन योजना के अन्तर्गत संविधान सभा के लिए चुनाव हुआ। चुनाव में कांग्रेश के मुकाबले मुस्लिम लीग को बहुत कम सीटें मिली अतः मुस्लिम लीग इससे बौखला गई और पाकिस्तान न बनाने पर 'सीधी कार्रवाई' करने की धमकी दी। कांग्रेसी एवं मुस्लिम लीग में ताल मेल नहीं होने से कैबिनेट मिशन योजना असफल हो गई।

Jharkhandlab.com

अध्याय-15 संविधान का निर्माण
एक नए युग की शुरुआत

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संविधान सभा के निर्माण में कितना समय लगा?
a. 2 वर्ष 11 माह 11 दिन b. 2 वर्ष 11 माह 18 दिन
c. 3 वर्ष 11 माह 11 दिन d. 3 वर्ष 11 माह 18 दिन

2. भारतीय संविधान कब लागू किया गया?
a. 26 जनवरी 1949 b. 26 नवंबर 1949
c. 26 नवंबर 1950 d. 26 जनवरी 1950

3. संविधान सभा की बैठक में कितने सदस्य उपस्थित थे?
a. 110 सदस्य b. 210 सदस्य
c. 310 सदस्य d. 79 सदस्य

4 संविधान सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष कौन थे?
a. डॉ.राजेंद्र प्रसाद b. जवाहरलाल नेहरू
c. डॉ. भीमराव अंबेडकर d. सरदार पटेल

5. भारतीय संविधान सभा के स्थाई अध्यक्ष कौन थे?
a. जवाहरलाल नेहरू b. डॉ. राजेंद्र प्रसाद
c. सरदार पटेल d. डॉ. भीमराव अंबेडकर.

6. कैबिनेट मिशन के सदस्य थे
a. पैथिक लोरेंस b. ए.बी.अलेकजेंडर
c. सर स्टेफोर्ड क्रिप्स d. इनमें से सभी

7. संविधान सभा के संचालन समिति के अध्यक्ष कौन थे?
a. राजेंद्र प्रसाद b. जवाहरलाल नेहरु
c. भीमराव अंबेडकर d. सरदार पटेल

8. भारत को कब गणतंत्र घोषित किया गया?
a. 26 जनवरी 1950 b. 26 जनवरी 1930
c. 14 अगस्त 1950 d. 15 अगस्त 1947

9. कौन सी महिला भारतीय संविधान सभा की सदस्य थी?
a. हंसा मेहता b. सरोजिनी नायडू
c. दुर्गाबाई देशमुख d. इनमें से सभी

10. भारत के संविधान का पिता किसे कहा जाता है?
a. डॉ. राजेंद्र प्रसाद b. डॉ.भीमराव अंबेडकर
c. डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा d. पं.जवाहरलाल नेहरू

11. भारतीय संविधान सभा का गठन कैबिनेट मिशन के अंतर्गत किस वर्ष हुआ?
a. 1942 b. 1944
c. 1946 d. 1947

12. प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस कब मनाया गया?
a. 26 जनवरी 1950 b. 15 अगस्त 1947
c. 16 अगस्त 1946 d. इनमें से कोई नहीं

13. 1895 ई. के स्वराज विधेयक किसके निर्देशन में तैयार किया गया था?
a. सुभाष चंद्र बोस b. अंबेडकर
c. बाल गंगाधर तिलक d. जवाहरलाल नेहरू

14. भारतीय संविधान के अस्थाई अध्यक्ष कौन थे?
a. डॉ. राजेंद्र प्रसाद b. डॉ.सच्चिदानंद सिन्हा
c. डॉ. भीमराव अंबेडकर d. बी.एन. राव

15. उद्देश्य प्रस्ताव कब प्रस्तुत किया गया था?
a. 13 दिसंबर 1946 b. 9 दिसंबर 1946
c. 8 अगस्त 1942 d. 26 जनवरी 1950

16. संविधान सभा में कुल कितने सदस्यों का प्रावधान था?
a. 386 b. 389
c. 370 d. 595

17. भारत में कितनी रियासतें थी?
a. 562 b. 563
c. 564 d. 654

18. किसे संवैधानिक सलाहकार पद पर नियुक्त किया गया?
a. डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा b. डॉ राजेंद्र प्रसाद
c. बी.एन. राव. d. गोविंद बल्लभ

बहुविकल्पीय प्रश्नों का उत्तर

1.b 2.d 3.b 4.c 5.b 6.d 7.a 8.a 9.d 10.b 11.c 12.c 13.c14.b 15.a 16.b 17.a 18.c

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संविधान सभा की प्रथम बैठक कब और किसके अध्यक्षता में हुई थी?

उत्तर संविधान सभा की प्रथम बैठक 9 दिसंबर 1946 ई. को डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा की अध्यक्षता में हुई थी।

2. महात्मा गांधी किस भाषा को राष्ट्रीय भाषा बनाना चाहते थे?

उत्तर महात्मा गांधी हिंदुस्तानी भाषा को राष्ट्रभाषा बनाना चाहते थे।

3. भारत के अंतिम वायसराय कौन थे?

उत्तर भारत के अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन थे।

4. संविधान निर्मात्री सभा का गठन किस योजना के आधार पर हुआ था?

उत्तर संविधान निर्मात्री सभा का गठन कैबिनेट मिशन योजना के आधार पर हुआ था।

5. स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री कौन थे?

उत्तर स्वतंत्र भारत के प्रथम गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल थे।

Jharkhandlab.com

6. संविधान सभा में सर्वप्रथम हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग किसने की थी?

उत्तर : संविधान सभा में सर्वप्रथम हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग संयुक्त प्रांत के कांग्रेसी सदस्य आर.वी. धूलेकर ने की थी।

7. किस रियासत के प्रतिनिधि संविधान सभा में सम्मिलित नहीं थे?

उत्तर : हैदराबाद रियासत के प्रतिनिधि संविधान सभा में सम्मिलित नहीं थे।

8. स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे?

उत्तर : स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू थे।

9. संविधान सभा द्वारा प्रारूप समिति का गठन कब किया गया था?

उत्तर : संविधान सभा द्वारा प्रारूप समिति का गठन 29 अगस्त 1947 ई. को किया गया।

10. उद्देश्य प्रस्ताव कब और किसने प्रस्तुत किया?

उत्तर : पं.जवाहरलाल नेहरू ने 13 दिसंबर 1946 ई.को उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संविधान सभा के प्रमुख समितियों का वर्णन करें?

उत्तर : संविधान के निर्माण का कार्य करने के लिए अनेक समितियां बनाई गई जिनमें प्रमुख थी

1. डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में संचालन समिति।
2. पं. जवाहरलाल नेहरु की अध्यक्षता में संघ संविधान समिति।
3. सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में प्रांतीय संविधान समिति।
4. जे. बी. कृपलानी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय ध्वज समिति।
5. भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में 7 सदस्यों की प्रारूप समिति।

2. संघ सूची, राज्य सूची एवं समवर्ती सूचीओं का संक्षिप्त वर्णन कीजिए?

उत्तर : संघ सूची - संघ सूची में वे विषय रखे गए जो राष्ट्रीय महत्व के हैं तथा जिनके बारे में देश भर में एक समान नीति होना आवश्यक है जैसे प्रतिरक्षा, विदेश नीति, डाक, तार एवं टेलीफोन, रेल, मुद्रा, बीमा एवं विदेशी व्यापार इत्यादि इस सूची में कुल 97 विषय हैं।

राज्य सूची - राज्य सूची में प्रादेशिक महत्व के विषय सम्मिलित किए गए थे जिन पर कानून बनाने का अधिकार राज्य सरकारों को दिया गया। राज्य सूची के विषय में कृषि, पुलिस, जेल, चिकित्सा, स्वास्थ्य, सिंचाई एवं मालगुजारी आदि, इन विषयों की संख्या 66 थी।

समवर्ती सूची - समवर्ती सूची में 47 विषय थे इस सूची के विषयों पर केंद्र तथा राज्य दोनों कानून बना सकते हैं परंतु किसी विषय पर यदि संसद और राज्य के विधान मंडल द्वारा बनाए गए कानूनों में विरोध होता है तो संसद द्वारा बनाए गए कानून ही मान्य होंगे।समवर्ती सूची के विषय हैं बिजली, विवाह कानून, मूल्य नियंत्रण समाचार पत्र ,छापेखाने, दीवानी कानून, शिक्षा एवं जनसंख्या नियंत्रण और परिवार नियोजन आदि।

3. उद्देश्य प्रस्ताव में किन आदर्शों पर जोर दिया गया?

उत्तर : पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा 13 दिसंबर 1946 ई. को संविधान सभा के सामने एक ऐतिहासिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जिसे उद्देश्य प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है। इस ऐतिहासिक प्रस्ताव में भारतीय संविधान के मूल आदर्शों की व्याख्या प्रस्तुत की गई तथा संविधान सभा के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक सुझाव दिए गए, इस प्रस्ताव में भारत को एक स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य घोषित किया गया तथा नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता और न्याय का आश्वासन दिया गया था।

4. भारतीय संविधान के प्रारूप समिति के क्या कार्य थे?

उत्तर : संविधान का प्रारूप तैयार करने के लिए 29 अगस्त 1947को संविधान सभा द्वारा प्रारूप समिति का गठन किया गया, इस समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर थे। प्रारूप समिति का काम था कि वह संविधान सभा के परामर्श शाखा द्वारा तैयार की गई संविधान का परीक्षण करें और संविधान के प्रारूप को विचारार्थ संविधान सभा के सम्मुख प्रस्तुत करे प्रारूप समिति ने भारतीय संविधान का जो प्रारूप तैयार किया वह फरवरी 1948 में संविधान सभा के अध्यक्ष को सौंपा गया।

5. भारतीय संविधान सभा ने भाषा के विवाद को कैसे हल किया?

उत्तर : भारतीय संविधान सभा ने भाषा के विवाद को हल करने के लिए लगभग तीन वर्ष बाद अपनी रिपोर्ट पेश की, समिति ने सुझाव दिया कि देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी भारत की राजकीय भाषा होगी ,समिति का मानना था कि हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिए, पहले 15 वर्षों तक सरकारी कामों में अंग्रेजी का इस्तेमाल होना चाहिए । संविधान सभा ने प्रत्येक प्रांत को अपने कामों के लिए क्षेत्रीय भाषा चुनने का अधिकार प्रदान किया। संविधान की भाषा समिति ने हिंदी को राष्ट्रभाषा की बजाय राजभाषा कहकर हिंदी के समर्थकों और विरोधियों को शांत करने के उपाय और सर्वस्वीकृत समाधान पेश करने का प्रयास किया था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विभिन्न समूह अल्पसंख्यक शब्द को किस तरह परिभाषित कर रहे थे?

उत्तर : विभिन्न समूह अल्पसंख्यक शब्द को निम्नलिखित रूप में परिभाषित कर रहे थे

1. कुछ समूह अल्पसंख्यकों के लिए पृथक निर्वाचिका बनाए रखना चाहते थे। मद्रास के बी.पोकर बहादुर का विचार था कि राजनीतिक व्यवस्था में अल्पसंख्यकों को पूर्ण प्रतिनिधित्व दिया जाए, उनकी आवाज को सुना जाए तथा उनके विचारों पर ध्यान दिया जाए।
2. समाजवादी विचारों के समर्थक एवं किसान आंदोलन के नेता एन.ज़ी. रंगा का विचार था कि अधिक संख्या में गरीब और दबे कुचले लोग थे। अतः अल्पसंख्यक

Jharkhandlab.com

शब्द की व्याख्या संख्या के आधार पर नहीं बल्कि आर्थिक स्तर के आधार पर की जानी चाहिए।

3. आदिवासी समूह के प्रतिनिधि जयपाल सिंह की दृष्टि में वास्तविक अल्पसंख्यक आदिवासी लोग थे, जिन्हें वर्षों से अपमानित और उपेक्षित किया जा रहा था।

   जयपाल सिंह ने स्पष्ट किया कि आदिवासी संख्या की दृष्टि से अल्पसंख्यक नहीं है फिर भी उन्हें संरक्षण की आवश्यकता है उन्हें आदिम और पिछड़ा हुआ माना जाता है तथा उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है।

   जयपाल सिंह पृथक निर्वाचन के पक्ष में नहीं थे किंतु वे विधायिका में आदिवासियों के प्रतिनिधित्व के लिए सीटों की आरक्षण को आवश्यक समझते थे। एन.जी. रंगा भी आदिवासियों को अल्पसंख्यक समूहों के अंतर्गत रखे जाने के समर्थक थे।

4. दमित समूह के के. नागप्पा और के.जे. खांडेलकर जैसे नेताओं के अनुसार वास्तविक अल्पसंख्यक दमित समूह थे यद्यपि वे संख्या की दृष्टि से अल्पसंख्यक नहीं थे नागप्पा के विचार अनुसार संख्या की दृष्टि से हरिजन अल्पसंख्यक नहीं थे क्योंकि वे जनसंख्या का लगभग 20 से 25% का निर्माण करते थे उनकी समस्याओं का मूल कारण उन्हें समाज एवं राजनीति के हाशिए पर रखा जाना था वे न तो शिक्षा प्राप्त कर सकते थे और ना ही शासन में भागीदारी।

   इस प्रकार विभिन्न समूह द्वारा अल्पसंख्यक शब्द को अनेक प्रकार से परिभाषित किया गया।

2. महात्मा गांधी को ऐसा क्यों लगता था कि हिंदुस्तानी राष्ट्रीय भाषा होनी चाहिए?

उत्तर : गांधीजी अनेक कारणों से हिंदुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के पक्ष में थे जो निम्नलिखित है

1. हिंदी और उर्दू के मेल से उत्पन्न हुई हिंदुस्तानी भारतीय जनता के एक विशाल भाग की भाषा थी।
2. हिंदुस्तानी विभिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान से समृद्ध हुई थी और इस प्रकार यह जन सामान्य की एक साझी भाषा बन गई थी।
3. हिंदुस्तानी में समय के साथ साथ अनेक नए नए शब्दों और अर्थों का समावेश होता गया था, इस कारण विभिन्न क्षेत्रों के अनेक लोग इसे भली-भांति समझ सकते थे।
4. गांधी जी का विचार था कि राष्ट्रीय भाषा एक ऐसी भाषा होनी चाहिए जिससे सभी लोग सरलता पूर्वक समझ सकें हिंदुस्तानी भाषा इस पर खरी उतरती थी।
5. हिंदुस्तानी न तो संस्कृत निष्ठ हिंदी थी और ना ही फारसी निष्ठ उर्दू, यह दोनों का सुंदर मिश्रण थी।
6. हिंदुस्तानी में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के अनेक शब्द विद्यमान थे गांधी जी का विश्वास था कि हिंदुस्तानी बहु सांस्कृतिक भाषा थी और विभिन्न समुदायों के मध्य संचार की आदर्श भाषा हो सकती थी।
7. गांधीजी के विचार अनुसार हिंदुस्तानी हिंदू और मुसलमानों को तथा उत्तर और दक्षिण के लोगों को समान रूप से एकजुट करने में समर्थ हो सकती थी।

3. भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर की भूमिका का वर्णन करें?

उत्तर : भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर की भूमिका-

1. संविधान सभा के सदस्य के रूप में- भारत के स्वतंत्रता के बाद जब कैबिनेट मिशन योजना के तहत भारतीय संविधान सभा और संविधान का निर्माण हुआ तो उसमें डॉ.अंबेडकर का अमूल्य योगदान रहा उनके योगदान को देखते हुए ही डॉ. अंबेडकर को भारतीय संविधान का सृजनकर्ता, निर्माता एवं जनक कहा जाता है।
2. प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में- संविधान निर्माण के कार्य में संविधान से संबंधित अनेक समितियों का गठन किया गया, जिसमें एक सबसे प्रमुख समिति थी प्रारूप समिति। जिसे ड्राफ्टिंग कमिटी या पांडू लेखन समिति भी कहा जाता है। प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. आंबेडकर थे। प्रारूप समिति का काम था कि वह संविधान सभा के परामर्श शाखा द्वारा तैयार किए गए संविधान का परीक्षण करें और संविधान के प्रारूप को विचारार्थ संविधान सभा के सम्मुख प्रस्तुत करें।
3. संविधान निर्माता के रूप में -डॉ.अंबेडकर को समाज में कई बार अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ा था, इन सब का सामना करते हुए उन्होंने ना केवल अछूत मानी जाने वाली जातियों के उत्थान के लिए और उन्हें समाज में सम्मानजनक स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि संविधान में उनके लिए प्रावधान किए जाने में अहम भूमिका निभाई।

Jharkhandlab.com

झारखण्ड अधिविद्द परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION-2023

विषय - इतिहास
हल प्रश्न-पत्र
बहुवैकल्पिक प्रश्नोत्तर

Total Time : 3 Hours 20 minute
कुल समय : 3 घंटे 20 मिनट

Full marks: 80
पूर्णांक : 80

MCQ. BASED QUESTIONS / (बहुविकलपीय आधारित प्रश्न)

1. हड़प्पा किस नदी के किनारे अवस्थित है?
(1) सिंधु (2) सतलज
(3) रावी (4) सरस्वती

2. विक्टोरिया टर्मिनल किस स्थापत्य शैली का उदाहरण है?
(1) नव- गोथिक शैली (2) नव - शास्त्रीय शैली
(3) इण्डो-सारासेनिक शैली (4) इनमें से कोई नहीं

3. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना कब हुई थी?
(1) 1332 ई. (2) 1336 ई.
(3) 1342 ई. (4) 1347ई.

4. महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वर्ष कब लौटे?
(1) 1910 ई. (2) 1912 ई.
(3) 1915 ई. (4) 1917 ई.

5. महावीर का जन्म कहां हुआ था?
(1) लुंबिनी (2) कपिलवस्तु
(3) कुंडलवन (4) सारनाथ

6. आयंगर व्यवस्था संबंधित थी
(1) मुगल साम्राज्य से (2) बहमनी साम्राज्य से
(3) विजयनगर साम्राज्य से (4) दिल्ली सल्तनत से

7. संविधान सभा के स्थाई अध्यक्ष कौन थे?
(1) डॉ.भीमराव अंबेडकर (2) डॉ. एस एन सिन्हा
(3) पंडित जवाहरलाल नेहरू (4) डॉ. राजेंद्र प्रसाद

8. भारत का राष्ट्रगान कौन-सा है?
(1) वंदे मातरम (2) सारे जहां से अच्छ
(3) हिंद देश का प्यारा झंडा (4) जन गण मन अधिनायक

9. "आइन- ए- अकबरी" की रचना किसने की?
(1) अबुल फजल (2) बदायूनी
(3) इब्नबतूता। (4) अलबरूनी

10. गांधी जी के राजनीतिक- गुरु कौन थे?
(1) दादाभाई नौरोजी (2) गोपाल कृष्ण गोखले
(3) महादेव गोविंद रानाडे (4) नरहरी मेहता

11. अशोक के अभिलेखों में कितने प्रकार के प्रांतों का उल्लेख है?
(1) 3 (2) 4
(3) 5 (4) 7

12. भारतीय संविधान में संसदीय प्रणाली किस देश से ली गई है?
(1) अमेरिका (2) ब्रिटेन
(3) रूस (4) कनाडा

13. फूट डालकर विजय प्राप्त करने का कार्य सर्वप्रथम किस राजा ने किया?
(1) समुद्रगुप्त (2) चंद्रगुप्त मौर्य
(3) अजातशत्रु (4) अशोक

14. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक कौन थे?
(1) डब्लू. सी. बनर्जी (2) लार्ड डफरिन
(3) ए.ओ. ह्यूम (4) महात्मा गांधी

15. सिंधु घाटी सभ्यता में समाज का स्वरूप क्या था?
(1) मातृसत्तात्मक (2) पितृसत्तात्मक
(3) (1) और (2) दोनों (4) इनमें से कोई नहीं

16. धम्म नीति की शुरुआत किसने की थी?
(1) चंद्रगुप्त द्वितीय (2) चंद्रगुप्त मौर्य
(3) समुद्रगुप्त (4) अशोक

17. "गेटवे ऑफ इंडिया" का निर्माण कब हुआ?
(1) 1910 (2) 1911
(3) 1912 (4) 1913

18. "जीतल" क्या था?
(1) शास्त्र (2) सिक्का
(3) वाद्य यंत्र (4) उपाधि

19. प्लासी की लड़ाई कब हुई थी?
(1) 1757 (2) 1761
(3) 1764 (4) 1765

20. महाभारत की रचना किसने की?
(1) वाल्मीकि (2) मनु
(3) याज्ञवल्क्य (4) वेदव्यास

jharkhandlab.com

21. **'आईन- ए- अकबरी' को कितने भागों में विभाजित किया गया है?**
(1) 3 (2) 4
(3) 5 (4) 7

22. **विजयनगर की स्थानीय मातृदेवी कौन थी?**
(1) चंपा देवी (2) पम्पा देवी
(3) महानवमी देवी (4) मामलादेवी

23. **"दामिन -ए -कोह" को कहा जाता है**
(1) कोल क्षेत्र (2) पहाड़िया क्षेत्र
(3) कोल्हान क्षेत्र (4) संथाल परगना क्षेत्र

24. **भारत में प्रचलित सती प्रथा का उल्लेख किस विदेशी यात्री ने किया ?**
(1) फ्रांस्वा बर्नियर (2) अलबरूनी
(3) इब्नबतूता (4) अल मसूदी

25. **बंगाल का विभाजन कब हुआ था?**
(1) 1902 (2) 1905
(3) 1906 (4) 1907

26. **फोर्ट सेंट जॉर्ज की स्थापना कहां हुई?**
(1) कलकत्ता (2) सूरत
(3) मुंबई (4) मद्रास

27. **'ऑपरेशन पोलो' के द्वारा किस देशी रियासत को भारतीय संघ का अंग बनाया गया?**
(1) जम्मू कश्मीर (2) जूनागढ़
(3) हैदराबाद (4) मणिपुर

28. **भारत का अंतिम वायसराय किसे माना जाता है?**
(1) चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
(2) लार्ड माउंटबेटन
(3) लार्ड क्लिमेंट एटली
(4) सर सीरिल रेडक्लिफ

29. **'करो या मरो' का नारा किसने दिया?**
(1) सुभाष चंद्र बोस (2) बाल गंगाधर तिलक
(3) महात्मा गांधी (4) रवींद्रनाथ टैगोर

30. **काला कानून किसे कहा जाता है?**
(1) वुड्स डिस्पैच (2) कम्युनल अवार्ड
(3) हंटर रिपोर्ट (4) रॉलेट एक्ट

31. **भारत आने वाले पहले यूरोपियन कौन थे?**
(1) अंग्रेज (2) डच
(3) फ्रांसीसी (4) पुर्तगाली

32. **मुगलकालीन चित्रकला किसके शासनकाल में चरमोत्कर्ष पर पहुंची?**
(1) अकबर (2) शाहजहां
(3) जहांगीर (4) हुमायूं

33. **त्रिपिटक साहित्य किस धर्म से संबंधित है?**
(1) बौद्ध धर्म (2) जैन धर्म
(3) बौद्ध धर्म (4) वैष्णव धर्म

34. **कैप्टन हॉकिंग्स किस मुगल दरबार में आया था?**
(1) हुमायूं (2) जहांगीर
(3) अकबर (4) शाहजहां

35. **गांधी इरविन पैक्ट कब हुआ?**
(1) 1927 (2) 1928
(3) 1931 (4) 1935

36. **1857 का विद्रोह कहां से आरंभ हुआ था ?**
(1) दिल्ली (2) लखनऊ
(3) मेरठ (4) ग्वालियर

37. **नयनार संत पूजा करते थे?**
(1) शिव (2) विष्णु
(3) इन्द्र (4) ब्रह्म

38. **डांडी किस राज्य में स्थित है?**
(1) बिहार (2) उत्तर प्रदेश
(3) गुजरात (4) महाराष्ट्र

39. **जजिया किससे लिया जाता था**
(1) व्यापारियों से (2) सैनिकों से
(3) बुद्धिजीवियों से (4) धिम्मियो से

40. **हाथी गुफा अभिलेख किससे संबंधित है?**
(1) रुद्रदमन (2) स्कंदगुप्त
(3) विजयसेन (4) खारवेल

उत्तर

1.(3)	2.(1)	3.(2)	4.(3)	5.(3)	6.(3)
7.(4)	8.(4)	9.(1)	10.(2)	11.(3)	12.(2)
13.(3)	14.(3)	15.(1)	16.(4)	17.(2)	18.(2)
19.(1)	20.(4)	21.(3)	22.(2)	23.(4)	24.(1)
25.(2)	26.(4)	27.(3)	28.(2)	29.(3)	30.(4)
31.(4)	32.(3)	33.(1)	34.(2)	35.(3)	36.(3)
37.(1)	38.(3)	39.(4)	40.(4)		

JharkhandLab.com

झारखण्ड अधिविद्द परिषद्
ANNUAL INTERMEDIATE EXAMINATION-2023

विषय - इतिहास
हल प्रश्न-पत्र
विषयनिष्ठ प्रश्नोत्तर

खंड क

अति लघु उत्तरीय प्रश्न। 2×5

1. मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ क्या है तथा यह किस भाषा का शब्द है?

उत्तर- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ है 'मृतकों का टीला' तथा यह सिंधी भाषा का शब्द है।

2. 'खानकाह' से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - सूफियों के आश्रय स्थल (निवास स्थान) को खानकाह कहा जाता हैं।

3. गोपुरम क्या हैं?

उत्तर - दक्षिण भारत में मंदिरों के प्रवेश द्वार को गोपुरम कहा गया हैं। गोपुरम विशाल और ऊंचे बनाए जाते थे,जो चित्रकलाओं से अलंकृत है।

4. हुमायूंनामा की रचना किसने की?

उत्तर - हुमायूंनामा की रचना गुलबदन बेगम ने की थी जो बाबर की पुत्री एवं हुमायूं की बहन थी।

5. संथाल विद्रोह के प्रमुख नेताओं के नाम लिखें।

उत्तर - संथाल विद्रोह के प्रमुख नेता चार मूर्मू भाई - सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव तथा दो जुड़वां मूर्मू बहनें - फूलो और झानो थे।

6. आइन-ए- दहसाला प्रणाली के प्रतिपादक कौन थे?

उत्तर - आइन-ए- दहसाला के प्रतिपादक टोडरमल थे जिसे अकबर ने भूमि विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया था।

7. इंडो- सारासेनिक स्थापत्य शैली का भारत में दो उदाहरण दें।

उत्तर - इस शैली के उदाहरणों में गेटवे ऑफ इंडिया (मुंबई) और होटल ताजमहल प्रमुख हैं। इसमे भारतीय तथा पाश्चात्य दोनों स्थापत्य शैली का प्रयोग किया जाता हैं।

खंड ख

लघु उत्तरीय प्रश्न. 3×5

8. धम्म नीति क्या है?

उत्तर - अशोक द्वारा एक नवीन धर्म मार्ग का प्रचार किया गया जिसे 'अशोक का धम्म'कहा जाता हैं। अशोक के दूसरे स्तंभ लेख में धम्म की परिभाषा दी गई है।

कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने सर्वदा के लिए शस्त्र का त्याग कर युद्ध के स्थान पर धम्मघोष को बढ़ावा दिया। अशोक ने अपने धम्म नीति के अंतर्गत बड़ों के प्रति सम्मान, सन्यासियों, ब्राह्मणों के प्रति उदारता,सेवकों और दासो के प्रति अच्छा व्यवहार तथा दूसरे धर्म के प्रति आदर एवं सम्मान की बात कहा है। धम्म के नीति में तत्कालीन सभी धर्मों का सार है। सद्गुरु पर जोर दिया गया है और कर्मकांड को सीमित कर, धर्म को व्यावहारिक बनाया गया हैं।

इस प्रकार अशोक का धम्म मनुष्य के जीवन के नैतिक नियमों का एक समूह कहा जा सकता है।

9. बा-शरा तथा वे -शरा से आप क्या समझते हैं?

उत्तर - सूफी सिलसिले मुख्य रूप से दो वर्गों में बंटे हुए हैं

1. बा - शरा – वैसे सूफ़ी संत जो इस्लाम के नियमों के अनुसार अपना आचरण करते हैं।
2. वे- शरा – वैसे सूफी संत जो इस्लाम के नियमों के बंधन में बंधे हुए आचरण नहीं करते हैं।ये अधिकतर घुमक्कड़ सूफी संत होते हैं।

10. स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था कब और कहां तथा किसने लागू किया?

उत्तर – अंग्रेजों ने अपने औपनिवेशिक शासन काल में भू राजस्व नीतियों के अंतर्गत स्थाई बंदोबस्त व्यवस्था को 1793 ई में बंगाल में बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश मे बनारस और उत्तरी कर्नाटक मे लागू किया था। समूचे भारत के 19% भाग पर यह बंदोबस्त व्यवस्था लागू हुआ था। यह व्यवस्था कार्नवालिस ने लागू किया था।

इस व्यवस्था में भूमि का प्रबंध जमींदारों के साथ किया गया जो केवल कर वसूल करने वाले अधिकारी थे। सरकार जब चाहे उन्हे हटा सकती थी। भूमि पर केवल राज्य का अधिकार था।

11. 1857 की क्रांति के पांच प्रमुख नेताओं के नाम लिखें।

उत्तर – 18 57 की क्रांति का प्रारंभ 10 मई 1857 को मेरठ से हुई थी। जिसके पांच प्रमुख नेताओं के नाम निम्नलिखित हैं–

1. बहादुर शाह जफर,दिल्ली
2. नाना साहब, कानपुर
3. बेगम हजरत महल, लखनऊ
4. लियाकत अली, इलाहाबाद
5. रानी लक्ष्मीबाई, झांसी

12. सरदार बल्लभ भाई पटेल को भारत का "लौह पुरुष" क्यों कहा जाता है?

उत्तर – सरदार पटेल भारत के प्रथम गृह मंत्री बनाए गए थे।गृह मंत्री के रूप में उनकी पहली चुनौती देशी रियासतों को

Jharkhandhelp.com

भारत में मिलाने का था। भारत में उस समय लगभग 550 से अधिक छोटी-बड़ी रियासतें थी। इस कार्य को उन्होंने बिना खून बहाए करके दिखाया था हालांकि हैदराबाद के लिए उन्हें सेना ऑपरेशन पोलो भेजनी पड़ी थी।

भारत के इतिहास में ऐसे पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने इतनी बड़ी संख्या में राज्यों को भारतीय संघ में मिलाया।भारत के एकीकरण करने मे उनके इस महान योगदान के लिए उन्हें भारत के "लौह पुरुष" के रूप में जाना जाता है।

13. भारत में मुगल वंश की स्थापना की संक्षिप्त जानकारी दें?

उत्तर – भारत में मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। उसने पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में दिल्ली सल्तनत के शासक इब्राहिम लोदी को हराकर भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया जो मुगल सल्तनत के नाम से विख्यात हुआ। बाबर फरगना (वर्तमान उज़्बेकिस्तान) से आया था। बाबर अपने पिता की ओर से तैमूर का पांचवा वंशज एवं माता की ओर से चंगेज खां का 14 वा वंशज था। मुगल तैमूर की ओर से तुर्क जाति के थे। इस कारण इन्हें चगताई तुर्क भी कहा गया है। साथ ही चंगेज खां की ओर से मंगोल जाति के रक्त का मिश्रण था। इस कारण मुगल नाम 'मंगोल' से उत्पन्न हुआ परंतु मुगल शासकों ने अपने आप को तैमूरी कहा क्योंकि वह अपने आप को तैमूर का वंशज मानते थे। मुगल बादशाहों में 6 बड़े बादशाह हुए जिनमें बाबर, हुमायूं ,अकबर, शाहजहां और औरंगजेब थे। कई अन्य मुगल बादशाह भी हुए। वही बहादुर शाह जफर अंतिम मुगल बादशाह था। जिसके नाम पर 1857 का विद्रोह लड़ा गया था। जिसे अंग्रेजों ने कैद करके रंगून में निर्वासित कर दिया जहां उसकी मृत्यु हो गई।

14. दांडी मार्च के बारे में लिखें।

उत्तर – महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का आरंभ 12 मार्च 1930 ई को अपने 78 कार्यकर्ताओं के साथ साबरमती आश्रम से समुद्र तट पर स्थित दांडी की ओर लगभग 241 मील की यात्रा का प्रारंभ किया जिसे दांडी मार्च कहा जाता है। यह यात्रा नमक कानून के विरुद्ध था। जिसमें नमक बनाने पर लगभग 14 गुना कर सरकार भारतीय जनता से लेती थी। गांधीजी ने अपनी नमक यात्रा की पूर्व सूचना वायसराय लॉर्ड इरविन को दे दी थी किंतु इर्विन उनकी इस यात्रा के महत्त्व को नहीं समझ सका।वहीं सुभाष चंद्र बोस ने इस यात्रा की तुलना नेपोलियन के एल्बा से लौटने पर पेरिस यात्रा से की है।

6 अप्रैल 1930 को दांडी में महात्मा गांधी ने मुट्ठी भर नमक बनाकर नमक कानून को तोड़ा और जनता से आग्रह किया कि हर गांव में नमक कानून तोड़ा जाए, शराब ,अफीम, विदेशी कपड़ों की दुकान पर धरना दिया जाए, सरकार को कर नहीं दिया जाए, विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाए और सरकारी संस्थाओं का त्याग किया जाए।

दांडी मार्च के कारण गांधी जी को 4 मई 1930 को गिरफ्तार कर लिया गया था।

खंड ग

दीर्घ उत्तरीय 5×3

15. संथाल विद्रोह के कारण तथा स्वरूप की चर्चा करें।

उत्तर – संथाल विद्रोह जिसे "संथाल- हूल" के नाम से भी जाना जाता है। यह विद्रोह 1855-56 में घटित हुआ था। इस विद्रोह का नेतृत्व सिद्धू,कानू ,चांद, भैरव तथा दो बहने फूलों तथा झानो ने किया था।

अंग्रेजों ने संथाल जनजाति का इस्तेमाल पहाड़िया जनजाति के विरुद्ध किया था।जिसके लिए1832 मे राजमहल की पहाड़ियों में जमीन की एक काफी बड़े इलाके को सीमांकित किया। जिसे दामिन- इ -कोह का नाम दिया। दामिन का इलाका जंगलों से भरा था। अंग्रेजों ने संथालो से यह शर्त रखी थी कि उनको दी गई भूमि के कम से कम 10 वे भाग को साफ करके पहले 10 वर्षों के भीतर जोतना था। यह कार्य संथालो ने बहुत ही कुशलता पूर्वक किया किंतु संथाली बहुत जल्दी यह समझ लिए कि उन्होंने जिस भूमि पर खेती करना शुरू किया था। वह उनके हाथों से निकल रही है क्योंकि जिस जमीन को संथालो ने साफ किया था। उस पर सरकार (राज्य) भारी कर लगा रही थी। साहूकार (दिक्कू) बहुत ऊंची दर पर ब्याज लगा रहे थे और कर्ज अदा न किए जाने की स्थिति में जमीन पर ही कब्जा कर रहे थे और जमींदार लोग ग्रामीण इलाके पर अपना नियंत्रण का दावा कर रहे थे। संथाल जनजाति ने अपने विरुद्ध किए जा रहे अत्याचार के विरोध में अंग्रेजों के साथ विद्रोह प्रारंभ कर दिया जिसे अंग्रेजों ने बहुत कठिनाई से नियंत्रण किया और विद्रोह के बाद संथाल परगना का निर्माण किया गया जिसमें 5500 वर्गमील का क्षेत्र भागलपुर और बीरभूम जिले से लेकर किया। संथाल परगना बनाकर तथा उसमें विशेष कानून लाकर अंग्रेजों ने संथाल जनजाति को संतुष्ट करने का प्रयास किया।

16. भारतीय संविधान के प्रमुख विशेषताओं की चर्चा करें।

उत्तर – भारत के संविधान को विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। संविधान विशेषज्ञों के अनुसार भारतीय संविधान की निम्नलिखित विशेषताएं हैं–

1. भारतीय संविधान दुनिया की सबसे बड़ी लिखित एवं निर्मित संविधान है।
2. भारतीय संविधान के द्वारा संसदीय शासन प्रणाली व्यवस्था लागू किया गया है
3. संविधान ने भारत को संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, लोकतंत्रात्मक, धर्मनिरपेक्ष, समाजवादी, गणतांत्रिक देश घोषित किया है।
4. भारतीय संविधान में नमनीयता अर्थात लचीलापन एवं अनमनीयता दोनों का अद्भुत मिश्रण है।
5. संविधान ने भारत को संघात्मक एवं एकात्मक राज्यों के गुणों से युक्त किया है।
6. संविधान नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों की व्यवस्था करता है।
7. संविधान ने नागरिकों के जनप्रतिनिधियों के चुनाव के लिए वयस्क मताधिकार प्रदान किया है।
8. का संविधान लोक कल्याणकारी सविधान है।
9. भारत का संविधान अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा की व्यवस्था करता है।
10. भारतीय संविधान में न्यायपालिका और संसदीय सर्वोच्चता दोनों का समन्वय बनाया गया है।
11. संविधान ने सीमित शक्ति पृथक्करण के सिद्धांत को स्वीकार किया है।
12. संविधान ने भारत में विधि का शासन स्थापित किया है।
13. भारत का संविधान विश्व शांति का समर्थन करता है।

Jharkhandlab.com

17. कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य के महानतम शासक थे, कैसे?

उत्तर– तुलुव वंश के कृष्णदेव राय(1509-1529) विजयनगर के महानतम शासक थे। इन्हें महानतम कहे जाने के निम्न तथ्य है–

1. इनके शासनकाल की सर्वप्रमुख विशेषता विजयनगर साम्राज्य का विस्तार और उसका सुदृढ़ीकरण था।
2. इनके शासनकाल में तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों के बीच का क्षेत्र (रायचूर दोआब-1512) हासिल किया गया।
3. उड़ीसा के गजपति शासकों का दमन किया गया।
4. बीजापुर के सुल्तान को बुरी तरह पराजित किया गया था।
5. दक्षिण भारत के भव्य मंदिर निर्माण तथा मंदिरों में गोपुरमओं को जोड़ने का श्रेय कृष्णदेव राय को जाता है।
6. कृष्णदेव राय ने अपनी मां के नाम पर विजय नगर के समीप ही नगलपुरम नामक एक उपनगर की भी स्थापना की थी
7. इसके शासनकाल में राज्य हमेशा सामरिक रूप से मजबूत रहा तथा राज्य में सुख समृद्धि की बढ़ोतरी हुई।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कोई भी शासक महान तब कहलाता है,जब वह अपने समय की चुनौतियों को समझता हो और उससे निबटने के लिए प्रयास करता हो। इन संदर्भों में कृष्णदेव राय महानतम शासक कहे जा सकते हैं।

18. हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख विशेषताओं की चर्चा करें।

उत्तर– भारत के प्रसिद्ध पश्चिमोत्तर भाग में विकसित हड़प्पा सभ्यता (2600 ई पू - 1900ई पू) के निम्नलिखित विशेषताएं है–

1. यह सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीनतम सभ्यता मेसोपोटामिया की सभ्यता के समकालीन थी।
2. इस सभ्यता के लोग कांसा बनाने की कला में निपुण थे जबकि शेष भारत ताम्र पाषाण युग में जी रहा था।
3. यह एक नगरीय सभ्यता थी।
4. इस सभ्यता के काल में नगर योजना अत्यंत उच्च कोटि की थी आधुनिक नगर व्यवस्थाओं से मिलती-जुलती साफ सफाई और सुविधाओं का प्रबंध था।
5. इस सभ्यता के लोग मनोरंजन और क्रीड़ा कौतुक को जीवन का अभिन्न अंग समझते थे। इनका समाज अत्यंत सुखी समृद्ध और शांतिप्रिय था।
6. इस सभ्यता के लोग धार्मिक विश्वासों पर आस्था रखते थे मातृ देवी, पशुपति महादेव, लिंग पूजा और प्रकृति की उपासना करते थे।
7. इस सभ्यता के काल की मूर्ति निर्माण की कला उत्कृष्ट थी यह विभिन्न प्रकार के औजार और हथियार भी बनाना जानते थे भवन निर्माण कला और रत्न आभूषण के निर्माण में भी निपुण थे।
8. हड़प्पा सभ्यता के लोग व्यापार करने में भी निपुण थे। ये दक्षिण पश्चिम एशिया से व्यापार करते थे। दिलमून और मगान(ओमान) इनके दो व्यापारिक केंद्र भी बनाए गए थे।
9. सिंधु घाटी की सभ्यता की एक प्रमुख विशेषता यहां की लिपि है जो एक चित्र लिपि है जिसे अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है।
10. सिंधु घाटी की सभ्यता कई अर्थों में न सिर्फ भारत बल्कि विश्व सभ्यता को एक महानतम देन है।

19. भारत छोड़ो आंदोलन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

उत्तर: भारत छोड़ो आंदोलन की शुरुआत द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 8 अगस्त 1942 को हुई थी।यह एक आंदोलन था जिसका लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना था। यह आंदोलन महात्मा गांधी द्वारा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के मुम्बई अधिवेशन में शुरू किया गया था। गांधीजी के एक आह्वान पर समूचे देश में यह आंदोलन एक साथ आरम्भ हुआ। यह भारत को तुरन्त आजाद करवाने के लिए आरम्भ किया गया।

भारत छोडो आंदोलन के कारण:

भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख कारणों में एक क्रिप्स मिशन का पूरी तरह से असफल होना था।बर्मा में भारतीयों के साथ किए गए दुर्व्यवहार से भी भारतीयों के मन में आंदोलन प्रारम्भ करने की तीव्र भावना जागृत हुई थी।अंग्रेज सरकार भारतीयों को भी द्वितीय विश्व युद्ध में सम्मिलित कर चुकी थी, परन्तु अपना स्पष्ट लक्ष्य घोषित नहीं कर रही थी।ब्रिटिश सरकार की नीतियों से भारत की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब हो गई थी ।द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी आक्रमण का भय भी भारतीयों को था।भारतीयों को लगता था कि यदि ऐसा हुआ तो अंग्रेज जापानी सेना का सामना नहीं कर पाएंगे।

आंदोलन के परिणाम:

भारत छोड़ो आंदोलन के परिणाम इस प्रकार हैं

- ब्रिटिश सरकार ने हजारों भारतीय आंदोलनकारियों को बन्दी बना लिया था।
- इस आंदोलन के बाद अंतर्राष्ट्रीय जनमत इंग्लैण्ड के विरूद्ध हो गया
- भारत छोड़ो आंदोलन में जमींदार, युवा, मजदूर, किसान और महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।
- भारत छोड़ो आंदोलन के प्रति मुस्लिम लीग की उपेक्षा को देखते हुए लीग का महत्व अंग्रेजों की दृष्टि में बढ़ गया
- भारत छोडो आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता के लिए पृष्ठभूमि तैयार कर दी थी।
- भारत छोडो आंदोलन से अंग्रेजों को यह विदित हो गया कि यहाँ उनका राज्य कोई नहीं चाहता।

आंदोलन की असफलता

भारत छोड़ो आंदोलन के असफलता का मुख्य कारण आंदोलन की सुनियोजित तैयारी का ना होना था और सरकार के दमन चक्र का अत्यधिक कठोर होना था।

असफल होने के बावजूद भी आजादी की लड़ाई में यह भारत छोड़ो आंदोलन अंतिम आंदोलन साबित हुआ इसने अंग्रेजों को भारत को स्वतंत्र करने हेतु विवश कर ही दिया. फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को हमारे देश भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजादी मिली और एक नए भारत की शुरुआत हुई. भारत को स्वतंत्र कराने में विभिन्न आंदोलनों की अहम भूमिका है जिन्हें कभी भुलाया नहीं जा सकता।

Jharkhandlab.com

jharkhandlab.com

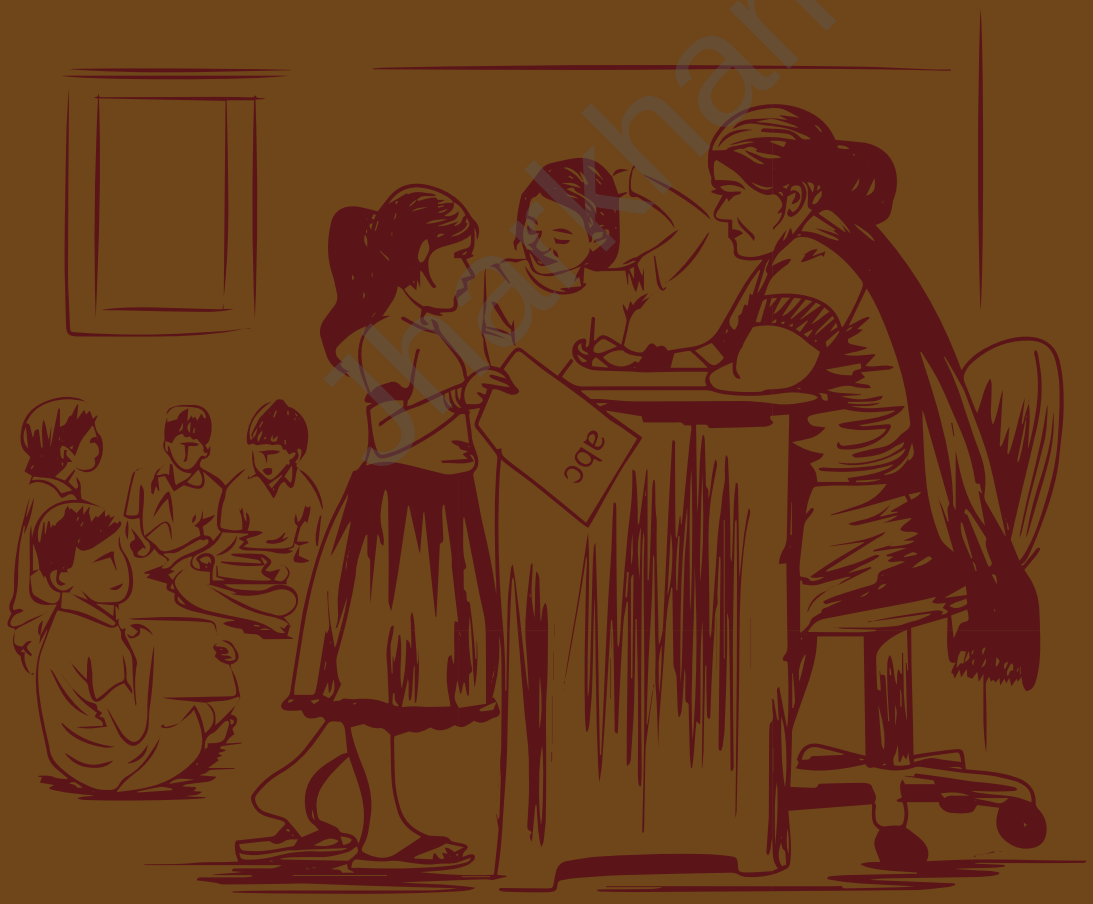

झारखण्ड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, राँची
Jharkhand Council of Educational Research and Training, Ranchi